साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से पुरस्कृत कृति

# डार्क हॉर्स

*एक अनकही दास्ताँ...*

नीलोत्पल मृणाल

# नीलोत्पल मृणाल

झारखंड के सुदूर इलाके संथाल परगना में साल 1984 में जन्मे नीलोत्पल मृणाल अपने पहले ही उपन्यास 'डार्क हॉर्स' से पाठकों और साहित्य-मर्मज्ञों के चहेतों में शामिल हो चुके हैं। मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखने वाले नीलोत्पल सेंट जेवियर्स कॉलेज, राँची से अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद पिछले कई सालों से राजनैतिक और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय हैं। छात्र-आंदोलनों में विशेष भूमिका निभाने के साथ-साथ मृणाल लोकगायन के क्षेत्र में भी मंच से टीवी तक का सफर तय कर चुके हैं। इन दिनों कवि-सम्मेलनों में भी अपना भाग्य आजमा रहे हैं।

# डार्क हॉर्स

नीलोत्पल मृणाल

# अनुक्रम

25.

26.

27.

6 साल बाद

# भूमिका

संभवत: जिस उम्र में आदमी के पास सबसे अधिक ऊर्जा रहती है, कुछ करने का पुरजोर उत्साह होता है और दुनिया को देखने-समझने की सबसे ज्यादा जिज्ञासा होती है, मैंने अपने जीवन का वह सबसे चमकदार दौर आईएएस की तैयारी के लिए मुखर्जीनगर में गुजार दिया। लिहाजा, यह तो तय था कि मैंने यहाँ की दुनिया, तैयारी के ताने-बाने, यहाँ की जिंदगी को नजदीक से देखा और बड़ी बारीकी से समझने की कोशिश भी की। शायद यही कारण रहा होगा कि मैंने अपने पहले उपन्यास में यहीं की जिंदगी को पन्नों पर उतारना सही समझा।

मैं किसी और के कहने से पहले अपनी ओर से ही ये दावा करता हूँ कि मैंने इस उपन्यास के रूप में कोई साहित्य नहीं रचा है, बल्कि सच कहता हूँ कि मैंने तो साहित्य सराहना और आलोचना से मुक्त, बिना किसी शास्त्रीय कसौटी की चिंता किए, बस जो आँखों से देखा, अनुभव से सुना, उसे ही गूँथकर एक कहानी बुन डाली है। एक ऐसी जमात की कहानी, जिनके साकार सपनों की चमक तो सब देखते हैं और उनके लिए प्रशस्तियाँ लिखी जाती हैं, लेकिन इस सपने को हकीकत में बदलने के बीच वे कितने पहाड़ चढ़ते है, कितने दरिया पार होते हैं, कितने पाताल धँसते हैं और कितने रेगिस्तान भटकते हैं, इस पर अब तक बहुत कुछ लिखा जाना बाकी था। मैंने बस वही सच लिखा है।

इसे लिखने में मैंने अपनी कल्पना से कुछ भी उधार नहीं लिया। जो कुछ अनुभव ने जमा कर रखा था, उसी से उपन्यास रच डाला। अब यह पाठकों को ही तय करना है कि इसमें साहित्य कितना है और एक जिंदगी की सच्ची कहानी कितनी है। उपन्यास की भाषा को लेकर कहना चाहूँगा कि कहीं-कहीं कुछ शब्द आपको अखर सकते हैं और भाषाई शुचिता के पहरेदार नाक-भौं भी सिकोड़ सकते हैं, पर मैंने भाषा के संदर्भ में सत्य को चुना। मर्यादा भी इसी में बचनी थी कि मैं सत्य को ही चुनूँ। सो, मैंने पात्रों को उनकी स्वाभाविक भाषा बोलने दी। मैंने उन्हें जरा भी आँख नहीं दिखाई और उनके कहे पर गर्दन गाँथ कलम चलाता रहा। इसलिए यह साफ कर रहा हूँ कि किसी भी अच्छी-बुरी भाषा के लिए मैं नहीं, बल्कि मेरे पात्र जिम्मेदार हैं, जिनसे आप खुद ही आगे मिलेंगे।

एक बात उपन्यास के शीर्षक पर भी कहूँगा। संभव है कि यह सवाल मन में आए कि हिंदी के उपन्यास का नाम अँग्रेजी में क्यों? इस बारे में बस इतना कहना है कि वैश्वीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया एक-दूसरे के करीब आ गई है। न केवल खान-पान और पहनावे, बल्कि मनोरंजन और साहित्य के स्तर पर भी आदान-प्रदान जारी है। ऐसे में एक-दूसरे की भाषाओं के शब्दों का स्वागत होना चाहिए। हर भाषा को दूसरी भाषा के शब्द चखने चाहिए। जो पचने लायक होगा वो हजम हो जाएगा और अपच होगा तो उगल दिया जाएगा। इसी क्रम में हिंदी में ऐसे कई अँग्रेजी शब्द हैं जो सहज रूप से

प्रयुक्त होते हैं। इसे भाषाई स्वाभिमान का मुद्दा न बनाया जाए। इस मामले में थोड़ा लचीलापन अपनाना भाषा को समृद्ध ही करेगा। रही बात 'डार्क हॉर्स' के नाम के इस कथानक से संबंध की तो भूमिका में नहीं ही बताऊँगा। इसके लिए तो आपको यह उपन्यास पढ़ना होगा। अंत में यही चाहूँगा कि इस उपन्यास को इस कसौटी पर न कसा जाए कि इसे किसने लिखा है और क्यों लिखा है, बल्कि इसलिए पढ़ा जाए कि इसे किस विषय पर लिखा गया है और कितना सच लिखा गया है।

मेरे गुरु रजनीश राज की प्रेरणा, मित्र जय गोविंद, नीशिथ और नवीन के निरंतर सहयोग ने मुझे इस मुकाम तक पहुँचाया है।

धन्यवाद!

**नीलोत्पल मृणाल**

'डार्क हॉर्स' का कथानक मात्र एक कल्पना न होकर सिविल सेवा की तैयारी कर रहे छात्रों में से हर एक की आत्मकथा है, जिसमें तैयारी से जुदा हर एक पहलू चाहे कोचिंग हो या अखबार या टिफिन का डिब्बा या नेहरु विहार, गाँधी विहार, सब कुछ अपने को बेबाक तरीके से हमारे सपने की पृष्ठभूमि में खोलकर रख देता है। यह उपन्यास उनकी जुबानी है जो यह जानना चाहते हैं कि 'सफलता कैसे पाएँ' और कहानी है उनकी जो 'सफलता' पा ही लेते हैं। 'अँधेरी घाटियों से गुजर कर उजाले के शिखर तक'। शुभकामना डार्क हॉर्स!

**मिथिलेश मिश्रा**
IAS, बिहार कैडर

मुखर्जी नगर में अपनी तैयारी के दौरान जैसा संघर्ष किया, जो देखा, जो कुछ भुगता, वह सब इस उपन्यास के रूप में पढ़ रहा हूँ। यहाँ की मस्ती, यहाँ की बौद्धिकता, यहाँ का तनाव, भटकाव और फिर इन्हीं के बीच से किसी का सफल और किसी का असफल होना, सब कुछ एक संवदेनशील लेखक के रूप में समेटने में कामयाब रहे हैं नीलोत्पल। बधाई हो 'डार्क हॉर्स'!

**कुमार प्रशांत**
IAS उत्तर प्रदेश कैडर

सर्वप्रथम नीलोत्पल को बधाई, ये उपन्यास लिखने के लिए। इतना बढ़िया लिखा। पूरे मुखर्जी नगर की जिंदगी बयान कर दी आपने। कुछ पिछले दिन याद आए, कुछ छूटे हुए लोग याद आए, कभी मन गुदगुदाया तो कभी आँखों में आँसू भी आ गए। 'डार्क हॉर्स' को जरूर पढ़ना चाहिए। शुभकामना आपको!

**आस्तिक पाण्डेय**
IAS, महाराष्ट्र कैडर

सच में मजा आ गया पढ़कर। 'डार्क हॉर्स' केवल उपन्यास नहीं है बल्कि हम सबके यथार्थ की कहानी है, जो सफल होकर निकल आए हैं और जो मुखर्जी नगर में सफलता के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इसे पढ़ते हुए मैं जैसे अपने पुराने दिनों में खो गया। हर पहलू का बड़ा सूक्ष्म और मजेदार ढंग से जिक्र है इसमें। मुझे खुशी है कि हमारे बीच से निकले किसी साहित्यकार की कलम से लाखों अभ्यर्थियों के जिंदगी की यह रोचक दुनिया पन्ने पर उतरी। बहुत बधाई नीलोत्पल भाई।

**अभिषेक सिंह**
IAS, मध्य प्रदेश कैडर

हिंदी-उर्दू इलाके में लोगों की हसरत होती है अपने बच्चों को आईएएस बनाना। अगर यह मुमकिन नहीं हो तो प्रशासनिक पदानुक्रम का कोई सोपान हासिल करना। सामाजिक सम्मान और आर्थिक सुरक्षा के लिए प्रशासनिक पद साधन हैं और साध्य भी। इस हसरत को यथार्थ बनाने के द्वंद्व में जीवन का बहुलांश बीत जाता है। न सिर्फ

अभ्यर्थी बल्कि उसके परिवार एवं रिश्तेदार इस द्वंद्व में गुनगुना अहसास करते हुए जीवन की तकलीफें काट देते हैं। प्रतियोगियों की जद्दोजहद की मायानगरी का नाम है मुखर्जी नगर और इसकी परिधि पर बस इलाका और यहाँ सपनों के लिए संघर्षरत युवजनों का जीवन हिंदी कथाकारों की नजरों से ओझल था। इस रोचक विषय पर नीलोत्पल मृणाल ने यह पठनीय उपन्यास लिखकर एक बड़ी कमी को दूर किया है।

**राजीव रंजन गिरि**
युवा आलोचक एवं लेखक

# 1.

अभी सुबह के पाँच ही बजे थे। चिड़ियाँ चूँ-चूँ कर रही थीं। हल्का-हल्का धुँधलापन छितरा हुआ था। विनायक बाबू जल्दी-जल्दी बदन पर सरसों का तेल घसे, बाल्टी और लोटा लिए घर के ठीक सामने आँगनबाड़ी केंद्र के हाते वाले चापानल पर पहुँच गए। वहाँ पहले से पड़ोस का मंगनू दतुवन कर रहा था। विनायक बाबू ने बाल्टी रखते ही कहा, "तनी नलवा चलाऽव तऽ मंगनू, झट से नहा लें। निकलना है।"

तभी अचानक खेत की तरफ सैर पर निकले ठाकुर जी, जो विनायक सिन्हा के ही स्कूल में साथी टीचर थे, की नजर विनायक जी पर पड़ी।

"एतना बिहाने-बिहाने असनान-धयान हो रहा है, कहाँ का जतरा है मास्टर साब?" खैनी रगड़ते हुए ठाकुर जी ने पूछा।

विनायक बाबू तब तक चार लोटा पानी डाल चुके थे। गमछा से पीठ पोंछते हुए बोले, "हाँ, आज तनी संतोष दिल्ली जा रहा है, वही स्टेशन छोड़ने जाना है, साढ़े दस का ही ट्रेन है। विक्रमशिला।"

"अभी ई भोरे-भोरे दिल्ली?" ठाकुर जी ने बड़े कौतूहल से पूछा।

विनायक बाबू ने गीली लुँगी बदलते हुए कहा, "हाँ बी.ए. कर लिया। यहीं भागलपुर टीएनबी कॉलेज से कराए। अब बोला एम.ए. पीएच.डी. का डिग्री जमा करके का होगा ई जुग में! सो दिल्ली जाते हैं, आईएएस का तैयारी करेंगे। जेतना दिन में लोग एम.ए. करेगा मन लगाई हौंक के पढ़ दिया तो ओतना दिन में आईएसे बन जाएगा।"

ठाकुर जी ने सहमति में सर हिलाते हुए कहा, "ऊ बात तो ठीके बोला। हाँ, यहाँ कुछ भविस नै है। खाली एम.ए., बी.ए. के पूछता है आजकल! हमारे साढ़ू साहब भी यही किए, इहें बोकारो स्टील-प्लांट में हैं। लड़का को बोकारो में पढ़ाए, अभी दिल्लिये भेजे हैं। आईएएस वाला में तैयारी करने। अरे महराज, सोचिए न आईएएस हो गया तऽ तीन पुस्त तार देगा हो विनायक बाबू!"

सुनते ही विनायक बाबू की आँखों में लाल बत्ती जल गई। चेहरे पर हँसी और रोमांच का मिश्रित भाव लिए खुद को सहज करते हुए बोले, "देखिए, अब एतना तऽ नय पता लेकिन हाँ पढ़ने में ठीक है। बोला दिल्ली जाएँगे। हम बोले ठीक है, जो मन का हो करो। अपना भविष्य बनाओ। अब आजकल का बच्चा-बुतरू समझदार हो गया है ठाकुर जी। आप चीज नहीं थोप सकते हैं। हम भी बोले, जाओ आईएएस का मन है तो करो। पैसा कौड़ी के चलते मन मत मारो और ई बात तो आप ठीक ही बोले कि बन गया तो तीन पीढ़ी का कल्याण हो जाएगा।"

हाँ, डॉक्टर बनकर आप अपना करियर बना सकते हैं। इंजीनियर बनकर आप अपना करियर बना सकते हैं पर अगर अपने साथ-साथ कई पीढ़ियों का करियर बनाना है तो आईएएस बनना होगा। यह एक सामान्य सोच थी जो हिंदी पट्टी के लगभग हर छोटे-

बड़े कस्बे या गाँव में थी। शायद एक सफल लड़के की पीठ पर तीन-चार पीढ़ियों को वैतरणी पार कराने की कल्पनाओं ने आईएएस को हर पढ़े-लिखे परिवार का सपना बना दिया था। वहाँ पुरवाई बहती तो उसमें भी आईएएस का नशा, पछिया बहता तो उसमें भी आईएएस का नशा। और नशा तो नशा था।

आपस में बतियाते-बतियाते ठाकुर जी भी विनायक जी के दुवार तक आ गए।

"आइए, चाय पी के जाइएगा।" विनायक बाबू बोले। भला क्यों न चाय पिलाएँ! आखिर सबेरे-सबेरे जीवन का इतना अद्‌भुत और आनंद का चित्र खींच दिया था ठाकुर जी ने विनायक बाबू के मन में। लोग सुबह-सुबह एक शुभ शब्द सुनने के लिए तरसते हैं यहाँ तो ठाकुर जी ने महाशुभ बोल-बोलकर मन भर दिया था। तीन पुस्त तारने की शुभेच्छा! आह! महाशुभ। ठाकुर जी बोले, "लाइए पी लेते हैं। खेत की तरफ निकले थे, लेट हो रहा है। वापस स्कूलो निकलना है।"

ठाकुर जी ने कुछ किया न किया पर खेत के कादो-कीचड़ से पहले अपनी सुबह मीठी कर ली थी। प्राइमरी का शिक्षक सुबह की एक कप चाय से दिन भर फुर्ती रखने की अद्‌भुत क्षमता रखता है। जो अक्सर वह अपने घर पर नहीं पीता।

चाय पीकर कप रखते हुए ठाकुर जी जाने को हुए, "चलिए, तैयार होइए आप भी विनायक बाबू, भगवान संतोष को जल्दिये आईएएस बनाएँ। हम लोगों का भी नाम ऊँचा होगा। गाँव भी तर जाएगा।" जाते-जाते ठाकुर जी पूरे समाज और गाँव के शान की जिम्मेदारी भी विनायक बाबू को देते गए थे जो उन्हें अब संतोष को देना था।

"आइए, आप जल्दी-जल्दी कपड़ा-लत्ता पहनिए संतोष तैयार हो गया है।" पत्नी कमला देवी की अंदर से आवाज आई।

कमला देवी गठिया के रोग से पीड़ित थीं। सुबह चार बजे ही उठकर जल्दी-जल्दी लिट्टी छानकर पैक कर दिया था। ठेकुवा और निमकी रात को ही बनाकर अलग से झोले में रख दिया था। काजू, किसमिस, छोहारा, बादाम का पैकेट भी बैग में रख दिया था।

"देख लो सामान सब एक बार अच्छा से। कुछु छुटा तऽ नहीं है?" माँ बोली। माँ के बोलते ही संतोष का जरूरी चीजों पर ध्यान गया।

"यहाँ मोबाइल का चार्जर रखे थे कहाँ हैं, इयर फोन देखे है कोई?" संतोष बोला। माँ दूसरे कमरे से दोनों सामान लेकर आई और बोली, "रख लो बढ़िया से। बाहर अकेले रहोगे। अपना सामान जिधर-तिधर रखने वाला आदत छोड़ो अब।" संतोष ने मुस्कुराकर 'हाँ' कहा। माँ फिर बोली, "पहले टिकिट बढ़िया से रख लो ऊपर वाला जेब में।"

"हाँ, रख लिए हैं।" संतोष एक बड़े बैग में किताबें डालने लगा।

"किताब यहाँ से ढो के केतना ले जा रहे हो वहाँ तो खरीदबे करोगे! यहाँ से दिल्ली ले जाने का क्या मतलब?" विनायक बाबू अपना चश्मा पहनते हुए बोले। संतोष ने एक नजर उनकी तरफ देखा और फिर किताबें ठूँसते हुए कहा, "पुराना वाला एनसीईआरटी रख रहे हैं। वहाँ मुश्किल से मिलता है। खाली नया वाला ज्यादा मिलता है जबकि प्रश्न पुरनका से ही भिड़ता है। बेसिक तैयारी पुरनके से करना होता है।" बेटे की तैयारी को लेकर यह समझदारी और लक्षय के प्रति अभी से इतनी गंभीरता देख विनायक बाबू एकदम रोमांचित और उसे दिल्ली भेजने के अपने निर्णय के प्रति आश्वस्त हो रहे थे।

उन्हें लगने लगा था कि अभी रह-रहकर आँखों में चमक जाने वाली लाल बत्ती जल्द ही आँखों से निकल उनके दरवाजे पर खड़ी होगी।

तब तक माँ नाश्ते की थाली लेकर आ गई, "चलो जल्दी से खा लो दो ठो पराठा भुजिया, पापा खा लिए हैं।" संतोष ने जैसे-तैसे डेढ़ पराठा खाया और बैग-झोला लेकर बाहर बरामदे वाली चौकी पर रखकर वुडलैंड के जूते पहनने लगा जो उसने बी.ए. फाइनल के रिजल्ट के बाद अभी तीन महीने पहले ही खरीदे थे। विनायक बाबू अपनी हीरो होंडा पोंछ सामने लगाकर फोन पर बतिया रहे थे। माँ तब तक दही-चीनी की कटोरी लेकर बाहर निकली, "लो तनी सा दही खा लो। दही-चीनी से जतरा बनता है।" सामान्य तौर पर इस देश में दही से दही बड़ा, लस्सी, रायता के अलावा जतरा भी बनता है। यह दुनिया में और कहीं नहीं बनता। संतोष को दही एकदम पसंद नहीं था। कभी नहीं खाता था पर जतरा के नाम पर दो चम्मच खा लिया। जतरा बनने का अर्थ था 'यात्रा का शुभ होना।' तब तक विनायक बाबू बैग को बाइक के पीछे बाँध चुके थे।

गाँव 'डुमरी' से भागलपुर रेलवे स्टेशन लगभग चालीस किलोमीटर पड़ता था। सड़क ऐसी थी कि डेढ़-दो घंटे तो लग ही जाते पहुँचने में। संतोष ने माँ के पाँव छुए, पीठ पर बैग लटकाया और बाइक पर विनायक बाबू के पीछे बैठ गया। दो कदम आगे आते हुए माँ ने संतोष का सर सहलाते हुए कहा, "देखना उदास मत होना। खूब पढ़ना बढ़िया से। यहाँ का चिंता एकदम नहीं करना। खर्चा के भी मत सोचना। सब भेजेंगे पापा। तुम बस जल्दिये खुशखबरी देना।" कहते हुए माँ का गला भर आया और आँखों से आँसुओं की धार फूट पड़ी जो माँ ने घंटों से रोक रखा था और इन आँसुओं में भी एक खुशी थी। एक उम्मीद थी। आखिर बेटे के भविष्य का सवाल था। कलेजे पर पत्थर रखना ही था। इसमें दर्द तो था पर ये बेटे के भविष्य की नींव में डाला गया पत्थर था। वह फूल का पत्थर था।

विनायक बाबू बाइक स्टार्ट कर चुके थे।

"चलो हम आते हैं छोड़ के और हाँ, आज दोपहर का खाना मत बनाइएगा हमारा, आने में लेट-सबेर होगा। एगो काम है डीएसी ऑफिस में, करते आएँगे।" विनायक बाबू ने बाइक बढ़ाते हुए कहा। भला आज खाना क्या बनता! ऑफिस का काम तो बहाना था। आज न माँ को खाना धँसना था न विनायक बाबू को। कलेजे का टुकड़ा इतनी दूर जा रहा था वह भी अकेले। बाइक घर्र से धूल उड़ाते निकल गई। माँ देर तक गाँव के मंदिर वाले चौराहे तक एकटक बाइक को जाते ताकती रही।

कुछ दूर निकलते ही विनायक बाबू ने बाइक की स्पीड धीमी कर, संतोष से पूछा, "एटीएम रख लिए हो?"

"हाँ पापा।" संतोष ने ऊपरी जेब पर हाथ टटोलते हुए कहा।

"दरमाहा वाला अकाउंट है कोई दिक्कत नहीं होगा।" इतना कह विनायक बाबू ने फिर स्पीड बढ़ा दी।

रास्ते में सड़क किनारे एक ढाबे के पास विनायक बाबू ने बाइक रोक दी। "यहाँ का पेड़ा बड़ा स्वादिष्ट होता है, एक किलो बँधवा देते हैं।" विनायक बाबू ने कहा।

"नहीं पापा रहने दीजिए। चलिए जल्दी पहुँचना है।" संतोष बोला। विनायक बाबू तब तक लपककर दुकान पर पहुँच किलो भर पेड़े का ऑर्डर दे चुके थे।

“अरे रख लो केतना भारी है, खाना-पीना! फेर कब आओगे, छः महीना कि सालभर पर?” उधर दुकानदार पेड़े पैक कर रहा था, “अरे भइया, जरा ताजा वाला देना।” विनायक बाबू दुकानदार से बोले। उधर संतोष ने आगे बढ़कर पेड़े लिए इधर विनायक बाबू ने झट से लपककर बगल वाली गुमटी से एक खिल्ली पान ले ली। इस देश में अगर बेटे का जतरा दही-चीनी से बनता है तो बाप का जतरा पान से बनता है। विनायक बाबू ने फिर दुकानदार को पैसा थमाया और बाइक स्टार्ट कर दोनों निकल गए।

स्टेशन पहुँचते सवा दस बज चुके थे। बार-बार हो रही उद्घोषणा से पता चल रहा था कि ट्रेन प्लेटफॉर्म पर लग चुकी है। साढ़े दस में ट्रेन के खुलने का समय था। बाइक से झट उतर संतोष ने पीछे बंधे बड़े वाले बैग की रस्सी खोली, विनायक बाबू झोला लेकर आगे बढ़े, तब तक लगभग ऊँचे स्वर में संतोष ने कहा, “पापा प्लेटफॉर्म टिकट ले लीजिए।” विनायक बाबू पहले तो अनसुने ढंग से आगे बढ़े फिर एक क्षण रुककर प्लेटफॉर्म टिकट काउंटर की तरफ चले गए। अपने बेटे के अंदर एक सजग और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के गुण को देखकर वे मन-ही-मन प्रसन्न थे और बस इसी की लाज रखने प्लेटफॉर्म टिकट की लाइन में खड़े हो गए थे। नहीं तो यह पहली ही बार था जब भागलपुर रेलवे स्टेशन के अंदर जाने के लिए वे प्लेटफॉर्म टिकट ले रहे थे। वह तो घर का स्टेशन था। हमेशा का आना-जाना था। यहाँ टिकट लेकर वे खुद की नजर में कतई गिरना नहीं चाहते थे।

प्लेटफॉर्म नंबर एक पर विक्रमशिला खड़ी थी। दोनों प्लेटफॉर्म पर पहुँच गए। संतोष ने जेब से टिकट निकाला और देखते हुए बोला, “एस-3 में है 13 नं. मिडिल बर्थ दिया है।” सिविल की तैयारी करने वाले लड़के को जब भी कोई पिता स्टेशन छोड़ने जाता तो मानिए वह पीएसएलवी छोड़ने गया हो। खुशी, उत्साह, डर, संदेह, संभावना सब तरह के भाव चेहरे पर एक साथ दिखते हैं। विनायक जी तुरंत हरकत में आ गए थे। झटपट-झटपट चलते हुए एस-3 तक पहुँच गए, बोगी में चढ़े और तेरह नं. सीट के नीचे जाकर झोला सरका दिया। तब-तक पीछे-पीछे संतोष भी बैग लटकाए आ गया। विनायक बाबू ने लंबी साँस छोड़ते हुए कहा, “चलो सामान एडजस्ट हो गया। आराम से जाना। बिना किसी लाग-लपेट में पड़े एकदम लक्षय बनाके पढ़ो। कामभर जितना खर्चा हो, निकाल लेना। एटीएम तुमको दे ही दिए हैं। पूरा समाज का नजर है। सबको दिखाना है कुछ करके। हम पैसा देने में कमी नहीं करेंगे, तुम्हारा काम मेहनत है, इसमें कमी नहीं करना।” असल में एक सिविल अभ्यर्थी बेटे और बाप के बीच रिश्ते का आधार इन्हीं दो परम सत्य के आस-पास मँडराता है। पिता पैसे को लेकर निश्चिंत करता है और बेटा परिणाम को लेकर। बेटे को खर्च चाहिए और पिता को परिणाम।

ट्रेन खुलने का समय हो गया। संतोष ने पिता के पाँव छुए, पीठ पर एक जोरदार धौल वाला आशीर्वाद देते हुए विनायक बाबू बोगी से बाहर की ओर निकलते हुए बोले, “चलो, जय गणेश! पहुँच के फोन कर देना।”

हिंदी पट्टी के क्षेत्र में कोई पिता तब तक बेटे को गले नहीं लगाता जब तक कि वह खुद से कमाने-खाने न लगे।

ट्रेन की सीटी बजी। रेलगाड़ी धीरे-धीरे प्लेटफॉर्म से सरकने लगी। विनायक बाबू बाहर आ बाइक स्टार्ट कर निकल गए।

## 2.

“दिल्ली घुस गया। स्टेशन पर लग रहा है। तेरह नं. पर लग रहा है।” अचानक पैसेंजर की हलचल और बातों से संतोष की आँख खुली। साथ के पैसेंजर सीट के नीचे से अपने-अपने सामान खींच रहे थे। संतोष ने आँख मलते हुए पूछा, “दिल्ली आ गया क्या?”

“हाँ, उतरिए आ गया महराज।” एक पैसेंजर ने चलते-चलते कहा। रात भर मोबाइल पर गाना सुनते-सुनते कब नींद आई और कब दिल्ली, संतोष को पता ही नहीं चला। संतोष तुरंत मिडिल बर्थ से नीचे कूदा, अपने जूते खोजने लगा। संतोष का तो एकदम दिल धक कर गया। “ये क्या! दिल्ली पहुँचते ही झटका। नया पच्चीस सौ का वुडलैंड गायब!” फिर उसने गर्दन नीचे कर सीट के कोने में देखा तो पाया कि उसके दोनों जूते वहीं दुबके पड़े थे। उसने हाथ से खींचकर जूते निकाले। एक मोजा गीला था। शायद रात को किसी ने खाते वक्त पानी गिरा दिया था। संतोष ने बिना सोचे बैग की जिप खोल मोजे उसमें डाल दिए और केवल जूते पहन जल्दी-जल्दी बोगी से बाहर निकला। अपने पैंट की पिछली जेब से कागज का एक टुकड़ा निकाला और उसमें लिखवाए गए निर्देश को पढ़कर एक नजर अपने दाएँ-बाएँ डाली। बाईं ओर उसे अजमेरी गेट की तरफ जाने के लिए तीर का निशान दिखा। संतोष उसी दिशा में चलते हुए स्टेशन से बाहर आ गया।

“मेट्रो स्टेशन किधर पड़ेगा?” संतोष ने एक सज्जन से पूछा।

“वो सामने ही तो है, लेफ्ट में भई।” सज्जन ने चलते-चलते बताया। संतोष ने धीरे से थैंक्स कहा, हालाँकि इतनी मिमियाई आवाज वाली थैंक्स उस सज्जन तक पहुँचने से पहले वह जा चुका था। मेट्रो की सीढ़ियों से नीचे उतरते ही उसने सबसे पहले टिकट काउंटर की तरफ नजर दौड़ाई। सारे काउंटर पर मधुमक्खी के छत्ते जैसी भीड़ थी। बीच में लाइन तोड़कर घुसने का मतलब था कोई भी भनभना के काट सकता था। तभी उसकी नजर लाइन में काउंटर से पाँचवें नंबर पर खड़े हाथ में एक भारी-सा झोला लिए लगभग साठ-पैंसठ बरस के बुजुर्ग पर पड़ी। उसने इधर-उधर देखा और तुरंत उस बुजुर्ग के करीब जाकर बोला, “चाचा, ये विश्वविद्यालय का टिकट यहीं मिलेगा?”

“सारी दिल्ली का यहीं मिलेगा बेटे, तुझे जाना कहाँ है?” बुजुर्ग ने उसकी आधी बात सुने बिना पूछा।

“जी, हमको विश्वविद्यालय जाना था।” संतोष ने थोड़ा स्पष्ट स्वर में कहा।

“टोकन मिलता है, टोकन बोलियो टिकट नहीं।” बुजुर्ग ने लगभग नसीहत के अंदाज में कहा।

“चाचा, लाइए मैं आपका झोला पकड़ लूँ। बहुत भारी होगा।” संतोष ने एकदम होशियारी भरी विनम्रता से कहा।

“बेटे, झोला छोड़। पीछे जा के लाइन पकड़ ले। लाइन लंबी होती जाएगी। तेरे को

झोला-वोला पकड़ने की जरूरत नहीं। चाँदनी चौक जा रहा हूँ। कॉटन है इसमें। कोई भारी-सारी नहीं है। चालीस साल से यही पकड़े चल रहा हूँ। ओए आगे बढ़ो भई।” बुढ़ऊ ने संतोष को कहते हुए आगे वाले को खोंचा।

“अरे कपार पर चढ़ जाएँ आगे जाके क्या, टोकन दे नहीं रहा है। आगे वाला बढ़ेगा तब न बढ़ेंगे कोंच रहे हैं पीछे से एकदम।” बूढ़े के आगे वाले व्यक्ति ने खीज से कहा। बूढ़ा समझ गया आगे वाला आदमी चालीस बरस का होकर भी मिजाज में उसका बाप है। सो उसने चुप रहना ठीक समझा। तब-तक बूढ़े के ठीक पीछे वाले व्यक्ति ने बूढ़े के कंधे पर कान ले जाकर पूछा, “क्या हुआ अंकल?”

“कुछ नई जी, टोकन नूँ घुस रहा था लौंडा। अजी हम लाइन में खड़े हैं इत्ती देर से बेवकूफ हैं क्या, कह रहा था, लाइए आपकी पकड़ दूँ। अबे मेरी क्या पकड़ेगा, अपनी पकड़ हें।” बुड्ढे ने बिना पीछे मुड़े कहा। इतना सब सुन संतोष मन-ही-मन बुढ़ऊ को गरियाता हुआ पीछे लाइन में जाकर खड़ा हो गया। अब तक लाइन और लंबी हो गई थी। अभी-अभी गाँव से निरीह बुढ़ापा देख आए संतोष को दिल्ली का सयाना बुढ़ापा एकदम अमरीश पुरी टाइप लगा। सोचने लगा, ‘साला, चाचा शब्द भी फेल हो गया। हम सबके तरफ तो चाचा कहने की गर्माहट से चोर-डकैत, पुलिस-दरोगा जैसा मोटा चदरा भी पिघल जाता है। यहाँ साला छेद तक नहीं हुआ।’ उसकी अपनी भावना में समझा जाए तो मूड झँटुआ गया था उसका। ‘झँटुआना’ आदमी के खिन्न होने की चरम अवस्था को कहते हैं। लगभग बीस मिनट तक खड़े लाइन में चलने के बाद उसका नंबर आया।

“भइया एक विश्वविद्यालय स्टेशन का टोकन दे दीजिए।” संतोष ने पाँच सौ का नोट देते हुए कहा।

“चेंज दे दो भई।” काउंटर वाले ने कहा।

“चेंज नहीं है सर।” संतोष ने स्वर नीचे करके कहा।

“चलो देख लो भई, हटो साइड आ जाओ। पीछे वाले को आने दो।” काउंटर वाले ने अपना हाथ उचकाते हुए कहा। संतोष एकदम खिन्न मन से साइड हो गया।

“साला, सर शब्द भी फेल।” यही सोचा उसने मन में। उसके सारे शब्द चुके जा रहे थे यहाँ। वह धीरे-धीरे समझ रहा था कि यह शहर शब्दों से परे है, भावनाओं से परे है। संतोष साइड में खड़ा लोगों द्वारा दिए जा रहे हर नोट को बड़ी उम्मीद से देख रहा था कि जल्द पाँच सौ का खुदरा पूरा हो जाए।

“लाओ जल्दी से पैसे, कहाँ का दूँ?” अचानक अपने पैसे वाले दराज को देखते हुए काउंटर वाले ने संतोष से कहा। संतोष ने साइड से ही खड़े-खड़े झट से अपना हाथ काउंटर के शीशे के गोल छेद में घुसा दिया और बोला, “हाँ, विश्वविद्यालय का चाहिए सर।” टोकन लेकर संतोष अंदर प्लेटफॉर्म पर जाने की लाइन में खड़ा हो गया। लाइन में आगे सरकते हुए जैसे ही उसने अपने दोनों बैग और झोला स्कैनर मशीन में डाले एक क्षण में ही यह विचार उसके मन में कौंध गया कि स्कैनिंग में सत्तू, ठेकुवा, निमकी और लिट्टी का फोटो देख पता नहीं क्या छवि बन जाएगी इन जाँच करने वाले सिपाहियों के मन में। एकदम देहाती समझेंगे पक्का। बैग के मशीन से बाहर निकलते ही यह डर भी मन से निकल गया। बैग उठाकर संतोष ने एंट्री गेट पर टोकन टच कराया और गेट के खुलते ही

बिजली की फुर्ती से इस तरह उस पार हुआ जैसे नाथुला दर्रा हो, जो बस एक पल के लिए खुला है और फिर तुरंत बंद हो गया तो पता नहीं कब तक इसी पार चीन में रहना होगा। हड़बड़ाहट में अपना बैग उसने इसी पार छोड़ दिया। संतोष गेट के उस पार से अपने बैग को ऐसे देखने लगा जैसे गदर फिल्म में सन्नी देओल ने सीमा पार अमीषा पटेल को देखा था। उसे लगा मेरा बैग अब उसी पार रह जाएगा। तब तक एक व्यक्ति ने उसका बैग उसे पकड़ाया। उसे अब जाकर चैन मिला। विश्वविद्यालय जाने वाली मेट्रो आ गई, दरवाजा खुलते ही कोई तीन-चार व्यक्ति नीचे उतरे और लगभग दो-ढाई सौ लोग उसपर सवार हो गए। संतोष भी लटक-झटककर चढ़ गया। सोच रहा था कि जब से ट्रेन से उतरा हूँ साला एक मिनट का चैन नहीं है। हर जगह समस्या है। कहीं शांति नाम का चीज नहीं है। कहाँ मराने आ गए। सब कहे थे मेट्रो में आराम है। झाँट आराम है इसमें, कटहल के जैसा आदमी लोड है! सोचते-सोचते वह अब विश्वविद्यालय स्टेशन पहुँच चुका था। मेट्रो से बाहर आ उसने एक आदमी से पूछा, “हैलो, ये मुखर्जी नगर बत्रा चौक के लिए कहाँ से ऑटो मिलेगा?”

“वो सामने से मिल रहा है, पकड़ लो।” उस आदमी ने कहा। ऑटो पर बैठते ही संतोष ने ऑटो वाले से कहा, “भइया मुखर्जी नगर, बत्रा चौक पर रोक दीजिएगा।”

“टेंशन मत लो भई वहीं तक जाएगी।” ऑटो वाले ने बेफिक्र अंदाज में कहा और फुल वॉल्यूम में पंजाबी गाना बजाने लगा। अगले दस मिनट बाद संतोष मुखर्जी नगर के बत्रा सिनेमा के सामने खड़ा था।

चंद्रयान चाँद पर पहुँच चुका था।

## 3.

अब संतोष अपने सपनों के नगर 'मुखर्जी नगर' में खड़ा था। चारों तरफ सफल अभ्यर्थियों के पोस्टर-ही-पोस्टर। इनकी सफलता का शिल्प रचने वाले महान कारीगरों के नामचीन कोचिंग के होर्डिंग्स। भिन्न-भिन्न मुद्राओं में बातचीत और चिंतन कर आ-जा रहे भविष्य के सिविल सेवक। जूस की दुकान पर सूखे और बाढ़ की चर्चा। चाय की दुकान पर जीडीपी पर बहस। कोचिंग से छूटे किताब से भरे बैग वाले छात्र का तुरंत किताबों की दुकान पर ये दिल माँगे मोर टाइप से किताब ढूँढ़ना। ठीक वैसी नजर से जैसे बगुला सागर में मोती ढूँढ़ रहा हो। पराठे की दुकान पर आतंकवाद से निपटने की चर्चा। ऐसा अद्भुत नगर था मुखर्जी नगर। अभी-अभी मुखर्जी नगर उतरा संतोष जो अपने दिल में तैयारी का एक दीया लिए उतरा था ऐसे दृश्यों को देखकर अब वो कुछ ही पल में मशाल बन चुका था। बिजली के खंभों और पेशाबघरों में लगे एक से नौ सौ रैंक तक के सभी सफल छात्रों के पोस्टर में संतोष खुद को महसूस कर रहा था। वह इस नयी दुनिया का हिस्सा बनकर गौरवान्वित था। दस से पंद्रह मिनट तक इस एहसास को पी लेने के बाद उसने अपने फोन में एक नंबर डायल किया।

"हैलो, हाँ रायसाहब नमस्कार! हम संतोष बोल रहे हैं। यहाँ मुखर्जी नगर पहुँच गए हैं।" संतोष ने कहा। उधर से रायसाहब की आवाज आई, "स्वागत है। स्वागत है भाई। कहाँ पर हैं अभी आप खड़ा?

"जी, ये बत्रा सिनेमा के ठीक सामने खड़े हैं। एक ठो जूस का दुकान है उसी के पास हैं।" संतोष ने इधर-उधर नजर टटोलते हुए कहा।

"बस दस मिनट रुकिए वहीं, हम आते हैं।" कहकर रायसाहब ने फोन काटा। संतोष की रायसाहब से मुलाकात बोकारो में एक शादी के दौरान हुई थी। रायसाहब ने तभी संतोष को अपना पता-ठिकाना और नंबर देते हुए कहा था, "अगर दिल्ली में मन हो तैयारी करने का तो जरूर बताइएगा।"

रायसाहब का पूरा नाम कृपाशंकर राय था। वे मूलत: यूपी के गाजीपुर से थे। रायसाहब पिछले पाँच साल से मुखर्जी नगर में तैयारी के लिए रह रहे थे। पिछले साल ही उन्होंने अपने तीसरे प्रयास में आईएएस की मुख्य परीक्षा दी थी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. करने के बाद उन्होंने बी.एड. भी कर रखा था। किसान परिवार से थे पर किसानी ठीक-ठाक थी, पिता खेती-बाड़ी से मजबूत थे। कृपाशंकर के झड़ते बाल और तेजी से लटकती झुर्रियों के अदब में साथी उन्हें 'रायसाहब' कहते थे।

"अरे लीजिए आ ही गए आप भी आईएएस बनने!" सामने से आते ही संतोष को गले लगाते हुए रायसाहब ने कहा।

"देखिए। अब आपकी शरण में हैं, जो बना दीजिए। आईएएस या आईपीएस।"

संतोष ने अपनी चॉइस बताते हुए कहा। बातों से स्पष्ट था वह राजस्व सेवा में नहीं जाना चाहता था।

पाँच फीट छः इंच। अंडर शर्टिंग किए हुए। खुद से सिलवाया हुआ सफेद पर फिरोजी चेक की शर्ट और काली पैंट पहने। बड़ा बकलस वाली बेल्ट। बिना फ्रेम का चश्मा लगाए और पैरों में सफेद मोजे पर अपनी साइज से दो नंबर ज्यादा का लाल कलर का फ्लोटर पहने रायसाहब एकदम दो हजार सात मॉडल अरस्तु लग रहे थे।

"चलिए रूम पर चलते हैं।" रायसाहब ने हाथ से इशारा करते हुए कहा।

"हाँ चलिए, देखें आपका महल।" संतोष ने भरे उत्साह से कहा।

"महल नहीं कुटिया कहिए। तपस्या करना होता है।" रायसाहब ने मुस्कुराते हुए कहा।

"कहाँ रूम है आपका?" संतोष ने पूछा।

"बस यहीं पाँच मिनट में नेहरु विहार में है। चलिए न पैदल ही पहुँच जाएँगे।" रायसाहब ने कदम बढ़ाते हुए कहा।

"अच्छा, ये सब इलाका मुखर्जी नगर में ही है ना?" संतोष ने पूछा।

"हाँ, यहाँ सारी कोचिंग हैं और बस नाले के पास सटा हुआ है नेहरु विहार। सब एक ही एरिया है।"

"नाले के पार?" संतोष ने नाक सिकोड़ते हुए कहा।

"घबराइए नहीं, उस पर पुल बना हुआ है। नाला तैर कर नहीं जाना है।" रायसाहब ने कहा। दोनों ठहाका मार हँसने लगे। संतोष रायसाहब की वाकपटुता पर मोहित होने लगा था। मन-ही-मन सोचा, 'ये होती है खास बात आदमी में, ऐसे नहीं मेंस दे दिया है आईएएस का।'

संतोष बड़ा वाला बैग दोनों हाथों से पकड़े, छोटा वाला पीठ पर लटकाए रायसाहब के साथ चलने लगा। तैयारी करने के लिहाज से पाँच साल जूनियर होने के कारण उसने खुद से सीनियर रायसाहब को बैग पकड़ने के लिए देना उचित नहीं समझा। दूसरी तरफ पहले से ही कपार पर ज्ञान का बोझ उठाए रायसाहब ने अपनी तरफ से अतिरिक्त बोझ उठाना जरूरी नहीं समझा। कुछ ही मिनट में दोनों नाला पार कर नेहरु विहार के फ्लैट नंबर 394 के नीचे पहुँच गए। संतोष ने मकान देखते ही कहा, "महराज एकदम झकास है रायसाहब, पूरा ले लिए हैं क्या?"

रायसाहब ने मुस्कुराते हुए कहा, "अंदर तो आइए, ऊपर थर्ड फ्लोर पर है अपना, इसमें चार फ्लोर है। आठ लड़का रहता है। सब फ्लोर पर पच्चीस गज का एक कमरा है। देखिएगा थोड़ा सीढ़ी पर सर बचाकर चढ़िएगा।"

"कितने का है रायसाहब कमरवा?" संतोष ने पूछा।

"चार हजार प्लस बिजली पानी है संतोष जी।" रायसाहब ने आँखें तरेरकर बताया।

ऊपर कमरे तक पहुँचते संतोष का दम फूल चुका था। इतना भारी बैग लेकर चढ़ना एवरेस्ट की चढ़ाई जैसा था। दमे के मरीज की तरह हाँफ रहा था बेचारा।

रायसाहब ने ताला खोला और दरवाजे को अंदर की तरफ धकेला। घुसते ही संतोष

को एक ऐसी गंध आई जिसे उसने इससे पहले कभी महसूस नहीं किया था। एकदम नया, घिनहा फ्लेवर था। दुर्गंध में भी इतनी वेराइटी होती है यह संतोष ने अभी-अभी जाना था। ऐसी दुर्गंध भागलपुर सब्जी मंडी में, बरसात के दिनों में भी नहीं सूँघी थी उसने। ओकाई आने लगी पर मजबूरी में अगले ही क्षण उसने अपने स्नायु तंत्रों पर नियंत्रण कर उस दुर्लभ दुर्गंध से अनुकूलता बिठाकर खुद को एडजस्ट कर लिया था। दिल्ली उतरते ही समझौतावादी हो गया था बेचारा संतोष।

"आपको कुछ महका क्या संतोष भाई?" रायसाहब ने संतोष को नाक सिकोड़ते देखते ही पूछा।

"नहीं-नहीं! रूम बंद होगा न, इसलिए। वैसे ठीक है।" संतोष ने नाक पर एक हाथ फिराकर कहा।

"अरे जब आपका फोन आया तब हम खाना का टिफिन खोले थे, ऐसे ही खुला छोड़ निकल गए। वही थोड़ा स्मेल मार रहा है।" रायसाहब ने खुले टिफिन को चटाई से हटाते हुए कहा।

संतोष के लिए सोचना लाजिमी था कि जब खाना ऐसा गंध कर रहा है तो बाथरूम की दशा क्या होगी। संतोष को रूम पर बिठाकर राय जी दूध का पैकेट लाने नीचे चले गए। संतोष ने कुर्सी पर बैठे-बैठे एक नजर उस पूरे कमरे पर दौड़ाई। दरवाजे से घुसते ही बाईं ओर दुर्लभ शौचालय था। उसकी दशा देख कोई भी रायसाहब के सामाजिक दायरे का अंदाजा लगा सकता था। दुर्गंध बता रही थी कि दिन भर में कम-से-कम पंद्रह लोग जरूर उस बाथरूम में मूतने जाते होंगे, वो भी बिना पानी डाले। बाथरूम से बाहर एक बेसिन था जिसमें नल के पास चप्पलें खोंसी हुई थीं। पान की पीक और गुटखा ऐसा अटा पड़ा था जैसे चौरसिया पान भंडार का पिछवाड़ा हो। किचन में अखबार और जूते रखे हुए थे, चूँकि खाना टिफिन का आता था सो वहाँ कुछ और रखने का मतलब नहीं था। कभी-कभार इमरजेंसी के लिए एक छोटा सिलेंडर और कुछ समझ नहीं आने वाली सामग्री एक कोने में रखी हुई थी। कमरे के अंदर एक कोने पर एक रैक में मोटी-मोटी विशालकाय किताबें रखी हुई थीं। एक रैक के निचले शेल्फ में एनसीईआरटी की किताबें और उसके ऊपर बादाम का डिब्बा रखा हुआ था। दूसरे शेल्फ पर घी की शीशी, बनफूल तेल, इसबगोल की भूसी और बाल झड़ने की कुछ दवाइयाँ रखी हुई थीं। ऊपर के शेल्फ पर एक बड़ा-सा दर्पण, पतंजलि का फेसवाश, पतंजलि का मुरब्बा, पतंजलि का दंतकांति टूथपेस्ट, पतंजलि का आँवला जूस, मुल्तानी मिट्टी, घृतकुमारी तेल और पतंजलि की अजवाइन एवं हरड़ पाचक रखे हुए थे। पतंजलि के इतने सारे प्रोडक्ट देखकर कोई भी कह सकता था कि शायद पतंजलि का यूपीएससी के साथ कोई व्यापारिक करार हुआ हो। बैड से सटे टेबल पर पत्र-पत्रिकाओं का एक बड़ा-सा टीला खड़ा था। दीवार पर एक तरफ भारत और विश्व के नक्शे चिपके हुए थे और उन पर कई विशेष जगहों पर लाल-हरे स्केच से गोले किए हुए थे, जैसे किसी गड़े खजाने की खोज का मिशन हो। दीवार पर एक तरफ हनुमान जी और माँ काली की बड़ी-सी तस्वीरें ब्लैक टेप से चिपकाई गई थीं। बैड के सिरहाने पंद्रह-बीस पन्नों में लिखे सिलेबस को साटा गया था। जो जगह बची हुई थी, वहाँ मुख्य खबर वाली अखबार की कतरन को साट दिया गया था। पूरे कमरे को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे पहाड़ी दवाखाने वाले वैद्य का तंबू हो। पच्चीस गज के इस कमरे में

बेड, मेज, कुर्सी, रैक, समेत बाकी सामान रखने के बाद बस इतनी-सी ही जगह बची थी जहाँ संतोष ने अभी-अभी अपना बैग रखा था। संतोष ने मन-ही-मन सोचा 'सचमुच तपस्या कर रहे हैं लोग यहाँ।'

# 4.

"चलिए, पहले आपको मस्त अदरक वाला चाय पिलाते हैं।" दूध का पैकेट लेकर आए रायसाहब ने कहा।

"लाइए हम बनाते हैं।" संतोष ने औपचारिकतावश बोल दिया।

"अरे नहीं महराज, आप जाइए जल्दी फ्रेश हो लीजिए। बाथरूम में देखते हैं हम पानी आ रहा है कि नहीं।" कहते हुए रायसाहब ने बाथरूम में नल चलाया, पानी आ रहा था।

संतोष बाथरूम जाने के नाम से ही सिहर गया था। मन-ही-मन सोचा भला इस बाथरूम से कोई फ्रेश होकर कैसे निकल सकता है।

"बस हम ब्रश कर लेते हैं।" कहकर संतोष बेसिन पर ही मुँह धो वापस कुर्सी पर बैठ गया। तब तक चाय बन गई थी।

"आइए चाय लीजिए, बिस्कुट दूँ क्या?" रायसाहब ने प्रश्नवाचक मुद्रा में पूछा।

"नहीं बस चाय ही रहने दीजिए।" संतोष ने समझते हुए कहा।

"और बताइए कैसी रही यात्रा, कैसा लग रहा है दिल्ली?" रायसाहब ने इत्मीनान से बेड पर बैठते हुए पूछा।

"बढ़िया रहा, ट्रेन भी बस दो ही घंटा लेट था, यहाँ आने में भी कोई दिक्कत नहीं हुआ। हाँ साला यहाँ का बुड्ढा लोग बड़ा हरामी टाइप है हो रायसाहब।" संतोष ने चाय सुड़कते हुए कहा।

रायसाहब ने उत्सुकता से पूछा, "क्या हुआ था ऐसा?"

संतोष ने चाय टेबल पर रखते हुए मेट्रो पर मिले बुजुर्ग वाली घटना बताई। रायसाहब ने गंभीर मुस्कान चेहरे पर लिए बड़ी बारीकी से सारी बात सुनी और बोले, "देखिए संतोष जी, पहली बात तो ये है कि हरामी होना उम्रनिरपेक्ष है। आदमी किसी भी उम्र में बुरा हो सकता है। कोई छोटा बच्चा व्यस्क से ज्यादा बुरा हो सकता है तो कोई बूढ़ा उस बच्चे से ज्यादा बुरा हो सकता है। ये तो एक परिस्थितिजन्य अवस्था है और इस बात पर निर्भर है कि किसे, कैसे परिवेश में शिक्षा-दीक्षा मिली है। वो कैसे समाज में रहा है। इसलिए ये कह देना कि यहाँ के सारे बुड्ढे खराब हैं, मैं नहीं मानूँगा। हमने गाँव में भी कई खराब बुड्ढे देखे हैं और यहाँ दिल्ली में कई अच्छे विनम्र बुजुर्ग भी देखता हूँ। खुद हमारे नीचे वाले अंकल एक बेहद अच्छे इंसान हैं सो आप बस एक आदमी के व्यवहार के आधार पर पूरे वर्ग या समुदाय के प्रति कोई धारणा नहीं बना सकते। यही गलती दुनिया के कई इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों ने की है। वही गलती, वही गलती आप दुहरा रहे हैं जो किसी सिविल सेवा की तैयारी करने वाले छात्र से तो कत्तई नहीं होनी चाहिए।" यह कह रायसाहब ने चाय सुड़की।

संतोष तो बस आँख गोल किए एकटक रायसाहब को देखे और निर्बाध सुने जा रहा था। उसने सोचा भी नहीं था कि उसकी छोटी-सी बात इतिहास की गलती दोहराने वाली साबित हो सकती थी। वह उस गंध मारते कमरे में रायसाहब के चंदन-से गमकते दार्शनिक विचारों से महक उठा। उसने मन-ही-मन रायसाहब की बौद्धिकता का लोहा मानते हुए सोचा, 'वाह रे लड़का! ये होता है समझ। यही क्वालिटी है जो मेंस लिखे हैं। मजाक थोड़े है, ऐसी छोटी-सी बात के पीछे का बड़ा अर्थ पकड़ना।' वह मन-ही-मन इस बात के लिए भी रायसाहब का आभार प्रकट कर रहा था कि उन्होंने संतोष को अभी-अभी सिविल सेवा प्रतियोगी की जिम्मेदारी और ओहदे का भान कराया था जो संतोष ने रात भर की यात्रा में हासिल किया था। कल तक संतोष केवल एक छात्र था पर आज वह सिविल-सेवा प्रतियोगी हो गया था। इसकी एक अलग जिम्मेदारी होती है। समाज और अपने युग के प्रति इसके विशेष दायित्व होते हैं। संतोष की चाय रखी-रखी ठंडी हो चुकी थी पर मिजाज में एकदम गर्माहट आ गई थी।

"आप ठीके कह रहे हैं रायसाहब। असल में, हम अभी उस तरह से नहीं सोच पा रहे हैं जिस तरह से आप लोग सोच लेते हैं।" संतोष ने चेलत्व भाव में कहा।

"हाँ, हो जाएगा धीरे-धीरे। अभी तो आए ही हैं आप। हम लोग भी नया में कहाँ ऐसा सोच पाते थे! पर रहे। सौ तरह का किताब पढ़े। कई चीज को देखे, छुए, समझे, तब जाके सोच विकसित हुआ है।" रायसाहब ने गुरुत्व भाव में कहा।

इसी बीच संतोष की जेब में रखा मोबाइल बजा 'पटना से पाजेब बलम जी, आरा से होंठलाली... मंगाई द छपरा से चुनरिया छींट वाली।'

"हाँ! हेलो, प्रणाम पापा!" संतोष ने कहा।

"हाँ, खुश रहो! अरे पहुँच गए? फोन भी नहीं किए! टेंशन हो रहा था यहाँ।" उधर से विनायक बाबू बोले।

"हाँ, पापा! मोबाइल डिस्चार्ज हो गया था। पहुँच गए हैं।" फिर संतोष ने रायसाहब को एक बार गौर से देखा, मुस्कुराया और एक बार फिर अपने पापा से बोला, "एकदम सही जगह पहुँच गए हैं।"

संतोष तो अभी रायसाहब की बौद्धिकता के ताप से पककर परिपक्व होने की रासायनिक प्रक्रिया में था। रायसाहब ने इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए संतोष को टोका, "ये आपने रिंगटोन किसका लगाया है संतोष भाई?"

"अरे आप तो जानते ही होंगे भरत शर्मा व्यास का माटी से जुड़ा बड़ा हिट लोकगीत है ये।" संतोष ने गर्व से कहा। पर अगले ही पल सारा गर्व कपूर की तरह उड़ गया।

"आप कैसा गीत सुनते हैं! कैसे गानों का रिंगटोन रखते हैं! मोबाइल का वालपपेर कैसा है! इन चीजों से भी लोग आपके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हैं। सो, इन चीजों के चयन में आपको सावधानी बरतनी चाहिए। ये जो गाना आपने लगाया है रिंगटोन में ये बजेगा तो कोई क्या सोचेगा? एकदम से लंफट छेछड़ा वाला फीलिंग आ रहा है, बताइए। छोड़िए ये भोजपुरी-ओजपुरी का मोहमाया, स्टैंडर्ड बढ़ाइए। आप एक बार हमारे पर मारिए मिसकाल।" रायसाहब ने एक साँस में कहा।

"हर घड़ी बदल रही है रूप जिंदगी, छाँव है कहीं, कहीं है धूप जिंदगी..." संतोष के

कॉल लगाते ही यही गाना बजा रायसाहब के मोबाइल पर। रायसाहब ने बैड पर से तकिया ले पैर के नीचे डाला और एकदम संत के आसन में बैठ वाचना शुरू किया, “देखिए मेरा रिंगटोन माना फिल्मी है शाहरूख पर फिल्माया गया है लेकिन गीत में एक मैसेज छुपा है। ये गीत कल हो न हो, जीवन की नश्वरता को दर्शाने वाला गीत है। ये बुद्ध के क्षणभंगुरता पर आधारित गीत है। ये सिद्ध नाथ परंपराओं का गीत है। ये भारत के षड्दर्शन के कोख से निकला हुआ एक संश्लिष्ट गीत है। यह भौतिकवादी चिंतकों के चिंतन से उपजा हुआ गीत है, जो हमें आज के लिए जीने को प्रेरित करता है। देसी भाषा में अगर समझें तो ये कल करे सो आज कर वाली कहावत पर आधारित गीत है, गीत में हर घड़ी बदलते हुए जीवन के परिवर्तनशील स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। ऐसा गीत जहाँ बज जाता है लोगों को एक शिक्षा देता है आप भी अब सिविल अस्पिरेंट हो चुके हैं। ऐसा ही कोई गीत बना लीजिए रिंगटोन।”

“अब आप ही कौनो सेट कर दीजिए।” संतोष ने एकदम समर्पण भाव से कहा।

“अच्छा हम देखते हैं कोई मीनिंगफुल गाना, जो सिविल अस्पिरेंट पे फिट करेगा। आपको कल तक देंगे खोज के।” रायसाहब ने उसे भरोसा देते हुए कहा।

संतोष ने तत्काल फोन को वाइब्रेशन मोड में डाल दिया। संतोष का मन रायसाहब की बौद्धिकता को सलाम करना चाह रहा था। उसने सोचा कि सुबह सही ही कहा था मैंने कि अब आपकी शरण में आ गया हूँ। वह सोच रहा था कि ऐसे आदमी की संगत में रह आईएएस-आईपीएस बनना बहुत दूर नहीं। ‘पता नहीं रायसाहब अब तक क्यों नहीं हुए?’ अचानक यह सवाल उसके मन में आया, पर रायसाहब के सम्मान में तुरंत निकल भी गया। काफी देर बातचीत का सिलसिला चलता रहा। रायसाहब अपनी करामाती बात-विचार से संतोष को लगातार चकित किए जा रहे थे। अब संतोष को थोड़ी भूख महसूस हुई। रायसाहब की तरफ से भूख पर कोई चर्चा-परिचर्चा न छेड़ने पर संतोष ने ही पहल करना उचित समझा।

“चलिए थोड़ा बाहर चले, कुछ खाकर आया जाएगा रायसाहब।” संतोष ने पेट पर हाथ रखते हुए कहा।

“भूख लग गया! यहाँ रहिएगा तो हम लोगों की तरह इस पर विजय पा लीजिएगा। पढ़ाई और उसकी परिचर्चा में भूख का पता ही नहीं लगता है यहाँ लोगों को।” रायसाहब ने एक छेछड़ी टाइप हँसी में दाँत निकालते हुए कहा। संतोष को लगा, ‘यार यहाँ भूख तो कोई मुद्दा ही नहीं है।’

रायसाहब ने संतोष की मनोदशा भाँपते हुए अपनी बात का वजन बढ़ाते हुए कहा, “संतोष जी आदमी जैसे ही पेट का गुलाम होता है, उसके मस्तिष्क के दरवाजे बंद हो जाते हैं। विचार आने बंद हो जाते हैं। भूख का अंधा कुछ नहीं देखता। और जान लीजिए एक सिविल के छात्र के लिए मस्तिष्क का खुला होना एवं विचारों का आना भोजन से कई गुना ज्यादा जरूरी है। सोचिए इस दुनिया में कितने लोग होंगे जो दिन में एक रोटी के लिए तरस रहे होंगे, भूखे मर रहे होंगे, क्या हमारे जैसे लोग अपने लिए भूख पर बात कर उनके प्रति असंवेदनशीलता नहीं दिखा रहे? क्या ये अपराध नहीं है? क्या हम खुद से नजर मिला पाएँगे, अगर एक सिविल सिर्विस का प्रतियोगी होकर भी हम उनके लिए कुछ न कर पाए तो, क्या इस पर हमें सोचना नहीं चाहिए? बताइए संतोष जी, चुप क्यों

हैं, बताइए तो। अरे आपकी आँखों में आँसू क्यों आ गए? खुद को संभालिए संतोष जी। हमारे आपके जैसे लोगों को ही तो आईएएस बन के ये दुनिया बदलनी है! हम खाने-कमाने के लिए आईएएस बनने थोड़ी आए हैं! यूपीएससी ने बकायदा अपने सलेबस में भूख के मुद्दे को शामिल किया है, हमें वो भूख मिटाना है।" रायसाहब की इन बातों ने संतोष को वैसे झकझोर दिया था जैसे बारह बरस का कोई लड़का पेड़ पर चढ़कर जामुन से भरी कोई डाल झकझोर देता है। संतोष की आँखें नम हो चुकी थीं। उसकी आँखों के आगे भूख से बिलखते बच्चे नाचने लगे। उसे लगने लगा, 'हे भगवान! ये मैंने क्या सोच लिया! एक सिविल अभ्यर्थी होके भी खुद की भूख के जैसी सतही और तुच्छ बात कैसे कर दी?' उसने मन-ही-मन सोच लिया था कि पश्चाताप के तौर पर अब वह कम-से-कम दो दिन तो खाना नहीं खाएगा।

"जी बस यूँ ही आँखें भर आईं रायसाहब, मैं कितना नीच हूँ। छि:! मैंने अपने खाने के बारे में सोचा और दुनिया की भूख भूल गया। क्या बनूँगा मैं आईएएस!" संतोष ने आँख मिचमिचाते हुए कहा।

"आप अब इतना भी खुद को शर्मिंदा न करिए। अरे अभी तो आप आए हैं आज ही। आपको क्या पता एक आईएएस के छात्र को किस एंगल से सोचना चाहिए! हम लोग भी शुरू में ऐसे ही सोचते थे पर धीरे-धीरे खुद को बदले। आपका भी हो जाएगा। टेंशन मत लीजिए। आइए टिफिन तो रखा ही है, दो-दो रोटी खाते हैं उसी में से।" कहकर रायसाहब टिफिन उठाने बैड से उठे।

संतोष ने अबकी चुप रहना ही उचित समझा। उसे लग रहा था कि अब फिर कुछ गड़बड़ न बोल दे और फिर एक बड़ी ऐतिहासिक भूल दोहराने की ग्लानि झेलनी पड़े। रायसाहब अखबार बिछा उस पर टिफिन खोल छितरा चुके थे। संतोष ने एक हाथ नाक पर रख चुपचाप खाना शुरू कर दिया। रायसाहब ने इस तरह अपना ज्ञान तो बाँटा ही साथ ही संतोष को वैश्विक भूख की भयावह तस्वीर दिखा अपने कम-से-कम पचास रुपये भी बचा लिए थे जो मेजबान और सीनियर होने के कारण संतोष को खिलाने में लग सकते थे।

# 5.

खाना खाने के बाद रायसाहब बैड पर जा बैठे और तकिया के नीचे से 'द हिन्दू' निकालकर बोले, "थोड़ा अखबार पढ़ लेते हैं हम। आप भी थोड़ी देर कुछ पत्रिकाएँ देख लीजिए संतोष जी। थोड़ा करेंट में कुछ देख लीजिए। शाम को बत्रा में हम लोगों के सर्किल में चलिएगा तो बातचीत में कम्फरटेबल रहिएगा।" इस तरह से रायसाहब ने संतोष को अपनी मंडली के महात्म्य के बारे में बता दिया था।

द हिन्दू, हर हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए ज्ञान और जानकारी से ज्यादा प्रतिष्ठा का अखबार था। वह लड़का ही क्या जिसके कमरे पर सुबह-सुबह हिन्दू फेंका हुआ न मिले, यह अलग बात है कि उस अखबार की रबड़ खुले न खुले। यद्यपि ज्यादातर लड़के इस अखबार का बस टाइटल 'द हिन्दू' पढ़कर रख देते थे पर कुछ ऐसे भी मेहनती लड़के होते थे जो डिक्शनरी निकालकर चार घंटे तक हिन्दू पढ़ते थे और बड़ा आत्मविश्वास टाइप फील करते थे। रायसाहब ऐसे ही मेहनतकश द हिन्दू रीडरों में से थे। पर आज रायसाहब केवल तर्स्वीरें देखकर ही खबरों का अंदाजा लगा रहे थे क्योंकि संतोष के सामने डिक्शनरी निकालकर वे अभी तक का अपना टाइट भौकाल ढीला नहीं करना चाहते थे। बिना कुछ समझे आखिर आदमी कितनी देर तक अखबार के पन्ने उलटता! रायसाहब ने जल्दी ही पेपर रखकर कहा, "चलिए बत्रा निकलते हैं, आपका रूम भी तो ढूँढ़ना होगा न।"

संतोष भी हाथ में लिए क्रॉनिकल पत्रिका को टेबल पर रखते हुए बोला, "हाँ चलिए, रुमवा तो खोजना होगा!"

रायसाहब तुरंत मुँह पर पानी मार फ्रेश हुए, बाल में भृंगराज तेल लगाया। शर्ट-पैंट पहनी और संतोष के साथ बत्रा की ओर निकल पड़े। संतोष मन-ही-मन अभी थोड़ी देर पहले पढ़े हुए क्रॉनिकल के कुछ फैक्ट्स को दोहराता जा रहा था। वह पहली बार एक ऐसी मंडली से मिलने जा रहा था जहाँ पर बिना ज्ञान के मुँह केवल चाय पीने के लिए ही खोला जाता था। संतोष पहले दिन अपनी उपस्थिति केवल चाय पीने तक नहीं रखना चाहता था। वह मन-ही-मन इस बात के लिए तैयार हो रहा था कि आज अपनी गर्म उपस्थिति दर्ज करा ही दे। उसने नौवीं कक्षा के ग्रामर की किताब में एक अँग्रेजी की लोकोक्ति पढ़ी थी, 'फर्स्ट इम्प्रैशन इज द लास्ट इम्प्रैशन।' सो आज उसके उसी इम्प्रैशन की बात थी। रास्ते में चलने के दौरान रायसाहब नेहरु विहार से लेकर मुखर्जी नगर तक सड़क के दोनों किनारे पड़ने वाले हर गली-मकान का डिजाइन और किराये के बारे में बताते जा रहे थे। संतोष भी अपने संभावित गुफाओं को गौर से देखता जा रहा था। दोनों अब बैजू शुक्ला की चाय की दुकान पर पहुँच चुके थे। शुक्ला जी लगभग चालीस बरस के रहे होंगे। बनारस के रहने वाले शुक्ला जी का पूरा नाम बजरंग शुक्ला था। शुक्ला जी एक समय नोएडा की एक प्राइवेट कंपनी में सुपरवाइजर के रूप में काम कर रहे थे। साढ़े पाँच हजार महीने की पगार से क्या होना था इस महँगाई में! बजरंग

शुक्ला जी गणित के पक्के थे, हिसाब-किताब के जानकार आदमी थे। किसी परिचित ने बताया कि मुखर्जी नगर जाकर एक बार भाग्य आजमाइए। यहाँ अब बैंकिंग की तैयारी करने वालों की भी अच्छी-खासी आबादी रहने लगी थी। शुक्ला जी ने यहाँ एक मित्र की सहायता से बत्रा सिनेमा के ठीक बगल में महाराष्ट्रा बैंक के ऊपर आर्यभट्ट रिटर्न नाम से एक कमरे की कोचिंग खोल ली। शून्य से दस तक विद्यार्थी जाते-जाते तीन महीने बीत गए थे। जमा पूँजी खत्म होने लगी। तब जाकर उन्हें यहाँ के बाजार का गणित समझ में आया और कोचिंग बंद कर उन्होंने चाय की दुकान खोल ली। आज महीने में पंद्रह हजार तो कहीं नहीं जाते, आगे चाहे जो हो।

रोजाना की तरह शाम को शुक्ला जी की दुकान पर छात्रों की भीड़ लगी हुई थी। पाँच-सात के समूह में अलग-अलग गोला बनाकर लोग ज्ञान का बारूद उड़ा रहे थे। रायसाहब भी संतोष को लिए वहाँ खड़े थे। रायसाहब को देखते ही रुस्तम सिंह ने दोनों हाथ उठाए और जोर से बोला, “अरे किरपा बाबू आइए महराज! कहाँ थे दो दिन गायब, एकदम महफिल सूना था यार!”

“अरे उ लोअर मेंस का थोड़ा तैयारी में फँसे हुए हैं।” रायसाहब ने दो दिन की अनुपस्थिति के प्रति खेद जताते हुए कहा।

“क्या किरपा बाबू आप जैसा विद्यार्थी लोवर-फोवर के चक्कर में पड़ा है। अरे आप आईएएस पर फोकस होइए महराज!” रुस्तम ने रायसाहब में कृत्रिम हवा भरते हुए कहा।

“हाँ क्या कीजियएगा, चाहते तो हम भी नहीं हैं पर घर-परिवार के दबाव में मामूली परीक्षा भी देना पड़ता है। एक टीचर वाला भी फारम डाले हैं, देखिए कब होगा परीक्षा?” रायसाहब ने कंधे उचकाते हुए कहा।

“अरे दो कप हाफ चाय लाओ बे छोटू, ये आप ही के साथ हैं ना!” रुस्तम ने संतोष की तरफ देखते हुए कहा।

“हाँ, ये संतोष जी हैं। हमारे मित्र। हमारे ही साथ हैं।” रायसाहब बोले।

“कहाँ, इलाहाबाद की धरती से हैं का?” रुस्तम ने तुरंत पूछा।

“नहीं ये बिहार से हैं। भागलपुर से।” रायसाहब ने बताया। तब तक बजरंग शुक्ला के यहाँ काम करने वाला छोटू चाय लेकर आ गया था।

“अबे! जरा माचिस लेई आओ बेटा।” रुस्तम ऊपर की जेब से सिगरेट निकालते हुए बोला। तब-तक रायसाहब ने पहली चुस्की लेते हुए कहा, “चाय एकदम पंछोछ्र लग रहा है। शुक्ला जी का भी क्वालिटी गिर रहा है अब। इलाहाबाद वाला चाय यहाँ कहीं नहीं मिला रुस्तम भाई।”

“लीजिए, अरे इलाहाबाद वाला बात यहाँ कहाँ पाएँगे रायसाहब! अल्लापुर चौराहे पर लल्लन की दुकान पे पीजिए, मजा आ जाता है। अपना ही चेला है।” रुस्तम ने धुआँ उड़ाते हुए कहा।

मुखर्जी नगर में एक इलाहाबाद हमेशा चलता-फिरता रहता था। हिंदी माध्यम से तैयारी करने वालों में से सबसे ज्यादा सघन संख्या इलाहाबाद विश्वविद्यालय से आए छात्रों की ही है, ऐसा प्रतीत होता था। यहाँ हर शाम जब भी ये छात्र चाय की दुकान

पर, पान की दुकान पर, लिट्टी-चोखा की दुकान पर, जलेबी की दुकान पर और चाट-पकौड़ी की दुकान पर होते थे अपने इलाहाबाद को बहुत मिस करते थे। अमिताभ बच्चन से भी कई गुना ज्यादा। 'अहा! छेदन का पान, ओहो! मंटू की जलेबी, हाय! नेतराम की कचौड़ी, हाय रे! पलटन का पकौड़ा, साला लल्लन की चाय, ओह! पिया मिलन चौराहा', ऐसे शब्द हर शाम मुखर्जी नगर में अबीर की तरह उड़ते थे। अपने छूटे शहर और विश्वविद्यालय के प्रति ऐसा मोह शायद ही अन्य जगहों से आए छात्रों में था।

"रुस्तम भाई, एक हेल्प करिए न! ये संतोष जी को कमरा चाहिए था। जुगाड़ हो तो बताइए।" रायसाहब ने कहा।

"अच्छा, कमरा? ओह! देखते हैं, कुछ लौंडों को लगाते हैं।" रुस्तम ने फोन निकालते हुए कहा। रायसाहब ने संतोष की तरफ हँसते हुए बधाई की नजर से देखा कि मानो कमरा तो मिलना तय है अब।

"हेलो! बल्लू, हाँ बेटा! कोई कमरा खाली है क्या तुम्हारे गाँधी विहार में?" एकदम अभिभावक वाले अंदाज में पूछा रुस्तम ने। उधर से कुछ अस्पष्ट-सी आवाज आई।

"ठीक है, सारे लड़कों को बता दो कि रुस्तम भइया कमरा देखने बोले हैं। एक अपना ही चेला है बिहार का उसके लिए चाहिए।" रुस्तम सिंह ने एकदम अभिभावक वाले लहजे में कहते हुए फोन काटा।

"देखिए, लड़कों को तो एक्टिव कर दिया हूँ, मिल जाना चाहिए। नहीं तो फिर मुझे काल कर देना आप। अभी मैं एक पार्टी में निकल रहा हूँ, कल फिर दर्शन होगा।" कहकर रुस्तम अपनी बाइक स्टार्ट कर निकल गया।

संतोष इधर यही सोच रहा था कि कैसे वह खड़े-खड़े बिना रुस्तम का गुरुत्व स्वीकारे 'चेला' हो गया था। उसने सोचा कि रायसाहब से पूछे पर फिर चेला होने को ही अपनी नियति मानकर चुप रहा। उसके मन में यह बात भी चल रही थी कि चलो अच्छा हुआ आज पढ़ाई-लिखाई पर कोई चर्चा नहीं हुई, नहीं तो गलत बोलकर फँस जाता तो भी चेला ही कहाता। अच्छा हुआ बिना फजीहत के चेला बन गया। रुस्तम के अंदाज ने संतोष को प्रभावित किया था। वह रुस्तम के बारे में बहुत कुछ जानना चाहता था।

रुस्तम सिंह इलाहाबाद के रहने वाले थे। विश्वविद्यालय में पढ़ाई के बाद दिल्ली आईएएस की तैयारी के लिए आ गए थे। नेताई रुस्तम सिंह के स्वभाव में थी। लंबी-लंबी हाँकना। दो-चार पतले-दुबले मरमरहा से सेवकों के साथ घूमना उनके व्यक्तित्व में पाँच-छः चाँद लगाता था। रुस्तम सिंह का सामजिक दायरा बहुत बड़ा था। ऐसा उनके कर्ज लेकर फुटानी करने की बीमारी के कारण भी था। इनके कुछ मित्र अच्छी जगहों पर स्थापित थे। उनके हर घरेलू आफत या खुशी में शामिल होकर इन्होंने एक कामचलाऊ समाजसेवी का भी ऐच्छिक पद प्राप्त कर लिया था। रुस्तम सिंह कुल मिलाकर इलाहाबादी मठाधीशी परंपरा के दिल्ली प्रभारी के रूप में कार्यरत थे। ये चेला पालने में फिरोज शाह तुगलक के साढ़ू भाई थे। चेला बनाना और चेला से खाना बनवाना कोई इनसे सीखे। ये या तो आदमी को अपना चेला बनाते थे या जिससे इनकी फटती थी उसको गुरु बना लेते थे पर अपने समकक्ष किसी को नहीं रखते थे।

कई और छात्रों की तरह ये भी दिल्ली आईएएस बनकर आसमान छूने आए थे पर

अब बस इसी में संतुष्ट रहा करते थे कि जूनियर इनके पाँव छूते हैं। रायसाहब और संतोष दोनों वापस कमरे पर आ गए। रुस्तम ने रूम दिलवाने को कह ही दिया था।

सुबह उठते ही रायसाहब ने सबसे पहले रुस्तम सिंह को फोन मिलाया। फोन ऑफ जा रहा था। दो-तीन घंटे बाद भी यही हाल था। दोपहर तक भी फोन ऑफ ही था।

“ये रुस्तम भाई का फोन ऑफ जा रहा है काफी देर से। चलिए हम लोग चलते हैं प्रोपर्टी डीलर के पास। वही दिलवा देगा। जल्दी रूम मिलेगा तो पढ़ाई भी तो शुरू करना है।” रायसाहब ने बत्रा जाने के लिए तैयार होते हुए कहा। असल में रायसाहब भी जल्दी से जल्दी अपना पिंड छुड़ाना चाह रहे थे। कई महीनों के बाद तो रूम पार्टनर घर गया था, इस अकेलेपन का फायदा उठाकर वे भी निजता का आनंद लेना चाहते थे। पार्टनर के घर जाने वाले दिन ही वे एक मित्र का लैपटॉप और कुछ नीली-पीली सीडी ले आए थे पर संतोष ने डेरा डाल सारा मामला खराब कर दिया था। जल्दी रूम नहीं मिलता तो संतोष यहीं टिका रहता। आखिर दिल्ली में वही एकमात्र परिचित थे उसके। बेचैनी में हर पल सभी फिल्में रायसाहब मन-ही-मन चला रहे थे वो भी हीरो-हीरोइन का बिना नाम जाने।

“ई साला प्रोपर्टी डीलर सबका तो पूछिए मत, कुकर्मियों को पता नहीं किस बात का पैसा चाहिए! खाली रूम का पता बता देता है और किराये का पचास परसेंट डकार जाता है।” रायसाहब ने बत्रा पहुँचते ही खिसियाते हुए कहा।

“चलिए जो होगा दे दिया जाएगा रायसाहब, केतना दिन घूमिएगा हम लोग! पढ़ना भी तो है!”

“अच्छा चलिए अपना एक दोस्त है मनोहर, यहीं अग्रवाल मिष्ठान के पीछे वाली गली में रहता है, उसे ले लेते हैं। जरा ठीक रहेगा रूम खोजने-वोजने में।” रायसाहब ने कहा।

“हाँ, चलिए।” संतोष बोला। दोनों मुखर्जी नगर के मकान नं. 570 की सीढ़ियाँ चढ़ दूसरे फ्लोर पर पहुँचे। दरवाजा हल्का सटा हुआ था। जैसे दरवाजा खुला, अंदर मनोहर तौलिया पहने छाती पर कुछ चिपचिपा-सा सफेद पदार्थ लगाए जैन साधुओं की तरह बाल नोच रहा था। मुँह पर फेसपैक लगा हुआ था और बालों में काली मेंहदी।

“अरे का कर रहे हैं मनोहर भाई?” रायसाहब ने घुसते ही कहा। मनोहर पहले तो अकबका गया फिर तुरंत खुद को सहज करते हुए बोला, “अरे कुछ नहीं बस वो चेस्ट का बाल हटा रहे थे। हमको बाल से जाड़ा में भी पसीना आ जाता है। ऊपर बटन भी खोलिए तो थोड़ा ऑड लगता है।”

“एकदम महाराज बाल तो ऐसा नोच रहे हैं जैसे भुट्टा से बाली छोड़ाते हैं!” रायसाहब ने हँसते हुए कहा। मनोहर ने बिखरे पड़े बाल को पेपर में समेटा और मन-ही-मन रायसाहब को गाली देने लगा, ‘साला बिना बताए जब मन तब पहुँच जाता है। खड़ूस कहीं का! जरलाहा इसीलिए तो उमर से पहले बुढ़ा गया! फैशन का मइया-बहिनिया करके रख दिया है ई लोग!’

संतोष के लिए यह दृश्य एकदम नया और रोंगटे खड़े करने वाला था। छाती का बाल नोचना। दर्द भी तो करता होगा। वह सोच भी नहीं सकता था जिस छाती के बाल

को उसके गाँव में हिम्मत और साहस का प्रतीक माना जाता था उसे मनोहर तार-तार करके यहाँ नोच रहा था। अब रायसाहब ने संतोष का परिचय कराया, संतोष ने अभी तक मनोहर का वास्तविक फेस नहीं देखा था। फेसपैक वाले मुँह से ही बात हो रही थी।

“रुमवा खोजना है संतोष के लिए।” रायसाहब ने कहा।

“अच्छा रूम का लफड़ा है। चलिए, चलते हैं। जल्दी से मुँह-हाथ धो लेते हैं।” मनोहर ने बाथरूम जाते हुए कहा। संतोष ने मनोहर के रूम को ध्यान से देखा तो सारा कमरा हॉलीवुड देवियों के सुंदर मनोहारी चित्रों से सजा हुआ था। उसके ठीक सामने वाली दीवार पर एपीजे अब्दुल कलाम और विवेकानंद की तस्वीर थी। दोनों महापुरुष तस्वीर में भी लजाए हुए मालूम पड़ रहे थे। दो रैक पर सौंदर्य प्रसाधन और एक पर कुछ किताबें रखी थीं। खूँटी पर डिजाइनदार जींस और शर्ट टँगी हुई थीं। मनोहर तब तक चमक के बाहर आ चुका था।

“जरा पैरवा हटाइएगा रायसाहब।” कहते हुए मनोहर ने बैड के नीचे से सूटकेस निकालते हुए उसमें से नीली शर्ट और पेपे की जींस निकाली। पूरे बदन का वाइल्ड स्टोन डीओडरेंट से अभिषेक किया। थोथने पर लोटस की क्रीम मली। शर्ट पर स्प्रे मारा और तैयार हो गया। अब वह मिस्टर मोतिहारी लग रहा था। संतोष ने झट से पहले मनोहर का नंबर माँगा और सेव कर लिया। रायसाहब उसे ज्ञान तो दे सकते थे पर दिल्ली जैसे शहर में संतोष के बिहाररूपी छवि और काया को सिटी लुक देने के लिए एक मनोहर जैसे ही फैशनसुधी मित्र की जरूरत थी। मनोहर के कमरे में संतोष को अच्छा महसूस हो रहा था। रायसाहब के कमरे की सड़ांध से संतोष के जो नथुने फटे थे उन्हें वह यहाँ के गमगमाते वातावरण में रफू कर रहा था

# 6.

रायसाहब, संतोष और मनोहर तीनों ने बत्रा पहुँच मिलन छोले भटूरे वाले के यहाँ नाश्ता किया। फिर तीनों बगल के ही टोनी प्रॉपर्टी के ऑफिस पहुँचे। 'प्रॉपर्टी डीलर' से मतलब मुखर्जी नगर में रहने वाले उन बेरोजगार लोगों से था जो छात्रों को किराये के लिए लगने वाले अपने परिचितों के मकान का पता बताते थे। वे मकान मालिक से मकान की चाभी लेकर कमरा दिखाते थे और पसंद आ जाने पर बस इसी के एवज में छात्रों से तयशुदा मासिक किराये की पचास फीसदी जितनी राशि अपने कमीशन के रूप में लेते थे। वास्तव में यह पेशा मुखर्जी नगर और आस-पास इलाकों में चरम पर था और यह वहाँ के सबसे क्रूरतम धंधों में से एक था जिसका शिकार छात्रों को होना ही पड़ता था। प्रॉपर्टी डीलर ने अपने लिए जो बैठने का स्थान बनाया था उसे वे लोग ऑफिस कहते थे। यह ऑफिस देखने में भारत-सरकार के किसी भी आला ऑफिस से ज्यादा भारी-भरकम और टक्कर लेने वाला होता था। रंग-बिरंगे पर्दे, संगमरमर का फर्श, सोफा, झिलमिल, लाल-पीली बत्तियाँ, बड़ी एल ई डी स्क्रीन जिसका रिमोट हमेशा डीलर के हाथ में होता था, दो बेसिक फोन, दो स्टाफ के साथ चाय और नाश्ते की भी व्यवस्था। इतना सब कुछ एक सामान्य डीलर के ऑफिस में होता था।

तीनों अंदर पहुँचे तो टोनी डीलर एक भारी भरकम जिधर मन तिधर घूम जाने वाली चहुँदिशा गामिनी कुर्सी पर गंभीर मुद्रा में बैठा था। उसकी भावभंगिमा से वह सीबीआई का निदेशक लग रहा था और ये तीनों मित्र चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी की तरह खड़े थे।

"आओ जी बैठ जाओ, कितने लोग रहोगे?" टोनी ने पहला सवाल पूछा।

"जी, एक के लिए चाहिए।" मनोहर ने कहा।

"किन्ने रहना है?" टोनी ने एक साथ तीनों चेहरों को देखते हुए पूछा।

"जी, हमको चाहिए था कमरा।" बोलते वक्त संतोष इतना नर्वस था जैसे यूपीएससी के इंटरव्यू बोर्ड के सवाल का जवाब दे रहा हो।

"कहाँ से हो?" टोनी ने अगला खोजी सवाल दागा।

"जी, बिहार भागलपुर से।" संतोष ने संकोच और गर्व के मिश्रित भाव से कहा।

"बिहार!" टोनी ने आवाज का टोन बढ़ाते हुए कहा।

"हाँ, बिहार।" संतोष ने फिर कहा।

"यार मुखर्जी नगर तो नहीं, गाँधी विहार, इंदिरा विकास चलेगा?" टोनी ने पूछा।

"हाँ, चलिए दिखा दीजिए।" रायसाहब ने कहा।

"दिखा दीजिए क्या यार, बात पक्की कर लो। साड़ी की दुकान तो है नहीं जो तुम्हें बीस-तीस देखनी है!" टोनी ने रूखेपन से कहा।

"अंकल आखिर रूम पसंद आएगा तब तो लेंगे!" मनोहर ने कहा।

"अपना बजट बताओ।" टोनी ने टेक्निकल सवाल पूछा।

"चार हजार से पाँच हजार के बीच का दिखाइए।" संतोष बोला।

टोनी ने सुनते ही हँसते हुए कहा, "बेटे, इतने में तो मुखर्जी नगर में किचन मिलेगा। इतने में कैसे होगा यार! अच्छा चलो पैंतालिस सौ की ही करवा देता हूँ एक। एक बैड मिल जाएगा 1271 में। बाथरूम आठ लोगों से शेयर करना होगा और किचन सिर्फ चार लोगों से। बोलो सेट कर दूँ। जल्दी बता दो यार?" रायसाहब ने संतोष की तरफ उम्मीद की नजरों से देखा कि संतोष जल्दी हाँ बोल दे और उनके कमरे पर रखा लैपटॉप स्टार्ट हो। दिन-रात बड़े बेचैन रह रहे थे रायसाहब।

"क्या संतोष जी, देखिएगा ये वाला?" रायसाहब ने दबाव डालते हुए पूछा।

"नहीं महराज पैसा देंगे तो धर्मशाला में थोड़े न रहेंगे!" संतोष ने गर्दन घुमाते हुए कहा।

"अरे तो फिर फ्लैट वाला बजट भी रखो बेटे, चार हजार में यहाँ कहाँ से मिलेगा बंगला, और तुम्हें पढ़ना ही तो है! सारे बच्चे तो रह ही रहे हैं! दिक्कत क्या है तुम्हें! एकदम सेपरट चाहिए? लड़की-सड़की का मामला है क्या! चलो फिर एक दिखा देता हूँ। ग्यारह हजार का है, चौबीस घंटे एंट्री। छोरी लाओ, दारु पियो कोई गल नई। बोलो जल्दी, लेनी है?" टोनी ने एकदम कमीनेपन वाले अंदाज में कहा।

"अंकल, हाँ सेपरट चाहिए। माँ-बहन भी तो आती हैं कमरे पर।" संतोष ने दाँत पीसते हुए कहा। टोनी यह सुनकर झेंप गया, उसे अपनी बेहूदगी का अंदाजा हो गया था। वह समझ गया था बात लड़के को चुभ गई है। उसने तुरंत बात पलटते हुए कहा, "वोटर आई डी है अभी? लाओ चलो एडवांस निकालो। एक पैंसठ सौ का है इंदिरा विकास में। पसंद आ जाएगा, शांत कमरा है, मस्ती में पढ़ना।"

"तो चलिए न, रूम तो दिखा दो अंकल। यहीं बैठकर पूरा ब्रम्हांड का एडवांस ले लीजिएगा क्या?" मनोहर ने कुर्सी से उठते हुए कहा।

"ओए बंटी गड्डी निकाल। दिखा आ वो इंदिरा विकास वाला।" कहते हुए टोनी टीवी के चैनल बदलने लगा। तीनों बाहर निकले। बंटी की बाइक पर दो ही बैठ सकते थे तभी रायसाहब ने कहा, "आप दोनों देख आइए, हम यहीं रहते हैं।" वे दोनों बंटी के साथ निकल गए। इधर अंदर और बाहर की गर्मी से परेशान रायसाहब ने झट से बगल वाली दुकान से एक स्प्राइट खरीदी और उसको दस मिनट में पिया। तब तक संतोष और मनोहर को बाइक पर लटकाए बंटी वापस आया।

"हट साला, चार ठो रूम देखे हो रायसाहब, सब बेकार। एतना अँधेरा। एकठो में तो किचन के अंदर ही रूम का सेल्फ था। अजब-अजब रूम हैं यहाँ। हगने-मूतने-खाने का अलग से कुछ समझ में ही नहीं आता है।" संतोष ने बाइक से उतरते ही कहा।

"चलिए फिर और देखते हैं कहीं।" रायसाहब ने सर खुजलाते हुए कहा। तीनों वहाँ से निकले। संतोष के मन को टोनी के लड़की लाने वाली बात बहुत बुरी लगी थी। "साला कितना हरामी हैं यहाँ प्रॉपर्टी डीलर। लड़की लाओगे कहता है, साला भागलपुर, पटना होता तो काट देते। बहुत मन बढ़ा हुआ है यहाँ।" संतोष ने मुट्ठी बाँधते हुए कहा।

"रहने दीजिए उसकी गंदी सोच है। हमें क्या, उसका ही मन अपवित्र होगा।"

रायसाहब ने संत के फ्लेवर में कहा।

"अजी, यहाँ लोकल लोगों का व्यवहार ऐसा ही है। मकान मालिक भी लड़कों को झाँट ही समझता है। एक तारीख हुआ नहीं कि कपार पर चढ़ जाता है। लगता है जैसे देश छोड़ के भाग रहे हैं। प्रॉपर्टी डीलर का भाषा तो आप सुन ही लिए। और साला यहाँ हमीं लोग हिजड़ा हैं। एक बार मिल के आवाज उठा देते तो दिल्ली हिल जाता। लेकिन नहीं, सब चुपचाप सुनेगा काहे कि आईएएस बनने आया है। साला, हम तो कहते हैं डूब मरना चाहिए ऐसा आईएएस बनने से पहले। भोसड़ी के जब इज्जत ही नहीं बचेगा तो का उखाड़ेंगे आईएएस बन के।" मनोहर ने एक साँस में इतना बोल दिया।

"सही बात कह रहे हैं मनोहर जी, सेल्फ रेस्पेक्ट भी तो एगो बात होता है। ये क्या कोई भी कुछ आरोप लगा देता है! हम लोग क्या यहाँ साला अय्यासी करने आए हैं जो बोल दिया उल्टा पुल्टा! चल के देखिए इलाहाबाद, पटना, भागलपुर में इज्जतदारी के साथ पढ़ाई होता है। यहाँ पर एक बार छात्र का संगठन खड़ा करना होगा, कसम से एक बार ताकत देखा दिए न तो बोली, चाली, व्यवहार ठीक हो जाएगा और किराया भी मनमाना बंद हो जाएगा।" संतोष ने मनोहर की तरफ देखते हुए कहा।

"सुनिए आप लोग, यहाँ हम सब पढ़ने आए हैं! यहाँ कौन-सा जिंदगी गुजारना है जो समाज सुधारना जरूरी है! चुपचाप बैठ के पढ़ना है। सलेक्शन लेना है और निकलना है। अपने लक्षय से भटकिए मत आप लोग। केतना से लड़िएगा! कोई एकता नहीं होगा यहाँ। सब पढ़ाई पर फोकस होइए। सब पढ़ने आए हैं, यहाँ राजनीति थोड़े न करना है!" रायसाहब ने खोखले जोश के साथ कहा।

"हाँ, निकलना है! निकलना है! उ तो हम समझ गए पर निकल कहाँ पा रहे हैं! पाँच साल से तो यहाँ बौख ही रहे हैं न, पढ़ने तो आए हैं पर पढ़ने ही में कोई नीचे उँगली करे तो का करिएगा रायसाहब, चुपचाप ऐसे ही परवचन पेलिएगा!" मनोहर ने चिढ़ते हुए कहा।

"कमरे पर रहिए। कोई वहाँ थोड़े न आता है बोलने! हम लोग छात्र हैं। केवल पढ़ना हमारा काम है।" रायसाहब बोले।

"कोई हमारी खड़े मार ले तब भी, पढ़िए आप अइसन पढ़ाई।" मनोहर ने तमतमाते हुए कहा।

संतोष ने मामले को बढ़ता देख हस्तक्षेप करते हुए कहा, "अच्छा, छोड़िए। भाड़ में जाए प्रॉपर्टी डीलर और मकान मालिक। ये बताइए हम लोग कहाँ जा रहे हैं इधर?"

"चलिए न। आपके कमरे के लिए ही तो जा रहे हैं, वजीराबाद चल रहे हैं।" रायसाहब ने चेहरे पर बिना कोई भाव लाए हुए कहा।

"उ रुस्तम भाई साहब फिर फोन नहीं किए हो रायसाहब?" संतोष ने याद आने पर कहा।

"कौन, उ रुस्तम सिंह! उ नेतवा! का भाई मेरे, कउन बकचोद के चक्कर में पड़े हैं! उ फरजी के भौकाल टाएट किए रहता है। उसके छोटे चाचा एक बार इंटरव्यू दिए थे आईएएस का। चचवा के इंटरव्यू के फसल अपने काटता है। कहानी सुना-सुना के किचाइन कर देता है महराज। अपने एक बार उपाध्य्क्षी का चुनाव लड़ा था इलाहाबाद में,

बाद में शंभू सिंह हड़काए तऽ नाम वापस ले लिया। उस बार शंभुवे सिंह जीते थे। हमारे परिचित ही हैं।” मनोहर ने चलते-चलते रुस्तम का संभव चरित्र-चित्रण कर दिया था और शंभू सिंह से अपनी निकटता भी बता दी थी।

“ऐसा भी एकदम फालतूवे नहीं हैं, रुस्तम भाई दो बार यूपी का मेंस भी लिखे हैं। लोगों का मदद करते रहते हैं। अब काम मुश्किल है तो का करें। अच्छा नेचर का है।” रायसाहब ने मनोहर की बात काटते हुए कहा। वे लोग अब रिंग रोड को पार करके वजीराबाद पहुँच चुके थे।

## 7.

"इधर। अच्छा गली नं. 14 जा रहे हैं क्या रायसाहब?" मनोहर ने पूछा।

"हाँ वहीं जा रहे हैं।" रायसाहब ने कहा। गली नं. 14 का मकान नं. 72/90 ग्राउंड फ्लोर। अचानक कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई।

"अरे आइए रायसाहब, आप हैं! आओ भाई मनोहर। कैसे हो भई?" दरवाजा खोलते ही गुरुराज सिंह ने कहा।

"सब दुआ है गुरु भाई, आप कहिए क्या चल रहा है?" मनोहर ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"बस घड़ी और साँस, फिलहाल यही दोनों लगातार चल रही हैं।" हँसते हुए गुरुराज सिंह ने कहा।

"और हो रायसाहब, आप सुनाइए। कहाँ के दौरे पर निकले हैं?" गुरुराज ने पूछा।

"बस गुरु भाई, आप ही के पास आए थे। ये अपने मित्र हैं संतोष जी। इनके लिए एक कमरा ढूँढ़ रहे थे।" रायसाहब ने कहा।

"अच्छा, अच्छा! मिल जाएगा कमरा। रुकिए, पहले आप सब बैठिए तो।" गुरुराज ने बैड पर से कंबल समेटते हुए कहा।

संतोष के लिए गुरुराज का कमरा भी एक नया अनुभव था। उसने देखा तीन रैक पर खूब सारी किताबें ठूँस के रखी हुई थीं। एक बड़े टेबल पर लैम्प रखा था, उस पर कुछ पत्रिकाएँ और दो कॉपी पड़ी हुई थीं। टेबल के नीचे एक म्यूजिक सिस्टम जिसमें आबिदा परवीन की गजल धीमी आवाज में बज रही थी। एक कोने में छोटी चौकी पर देवताओं की तस्वीरें रखी हुई थीं। तकिये के पास सिगरेट का डिब्बा ऐसे रखा हुआ था जैसे दमे का मरीज हमेशा अपने सिरहाने साँस फूलने की टेबलेट रखता है। दीवार पर बस विश्व का एक नक्शा चिपका हुआ था। नीचे चटाई पर अल्वेयर कामू की 'द रिबेल' के पन्ने उलटे पड़े थे।

"तब हो रायसाहब, कहिएगा क्या खाइएगा, फिर पीने का व्यवस्था करते हैं?" गुरु ने किचन की तरफ जाते हुए कहा।

"अरे नहीं, कुछ नहीं गुरु भाई। पीने-वीने का प्लीज ये सब छोड़िए।" रायसाहब ने थोड़ा लजाए अंदाज में कहा।

"काहे छोड़िए महराज, काहे आप पीते नहीं हैं क्या? याद है न जब अनामिका पटेल को देख लिए थे आप सनेमा हाल में एक लौंडे का बाँह धर के बैठे तऽ कैसे आके हमरे कमरे पर पैंट खोलकर घोलट-घोलट के पिए थे, भूला गए का?" गुरुराज ने प्लेट में नमकीन निकालते हुए कहा। अचानक गुरुराज की संतोष पर नजर पड़ी फिर तुरंत बोला, "ओ अच्छा, जूनियर के सामने संकोच कर रहे हैं! हा-हा-हा, अरे ई भी एडजस्ट हो

जाएगा। जैसे मनोहर हो गया। है कि नहीं मनोहर?” कहते हुए गुरु और मनोहर ने ठहाका लगाया। रायसाहब ने लजाते हुए ही बात का रुख मोड़ते हुए कहा, “ये किताब किसकी है गुरु भाई, क्या है इसमें?”

“ये अल्बेयर कामू की है ‘द रिबेल’। ये मार्क्सवाद की छाती पर बैठ के लिखा गया है। उसकी कायदे से ली गई है। आप रख दीजिए और नमकीन खाइए। आपके सलेबस से बाहर है। और अभी त एकदम मत छुइए। नय तऽ लोवरवा भी सरक जाएगा कमर से। कब है लोअर का मेंस आपका?” गुरु ने बिस्कुट का पैकेट रायसाहब की तरफ बढ़ाते हुए कहा।

गुरुराज सिंह झारखंड के संत कोलंबस कॉलेज का छात्र रहा था। कुछ समय राँची में भी सिविल की तैयारी के लिए रहा। अपनी पहली मुख्य परीक्षा उसने वहीं रहते दी थी। पाँच साल से दिल्ली में था। पिता सरकारी नौकरी में थे। गुरुराज अपने आप में कई विरोधाभासों का मिश्रण था। दुनिया दाएँ चले तो वह बाएँ चलता था। आईएएस की तैयारी के लिहाज से वह उतना पढ़ चुका था जितने की जरूरत नहीं थी। दुनिया को अपनी दृष्टि से देखता था और बिना हिचक अपनी बात कह भी देता था। कुछ लोग उसे अक्खड़ और दंभी कहते थे, पर मूलत: वह साहसी था। मुखर्जी नगर के बौद्धिक वर्ग के लिए वह एक बिगड़ैल आदमी था। बौद्धिकता की गंभीरता और तार्किकता पर बड़ी निर्ममता से व्यंग्य करता था। ‘बुद्धिजीवी वर्ग’ इस शब्द को वह एक गंभीर फूहड़पन कहता था। दारू और किताब उसके दो प्रिय साथी थे। काम भर का धार्मिक भी था और ज्योतिष का इल्म भी पा रखा था उसने। अब तक आईएएस में असफल था। पिता दशरथ सिंह उसे अपने जीवन की सबसे बड़ी समस्या कहते थे पर गुरुराज के लिए उसके पिता ही उसके जीवन दर्शन के गुरु थे। गुरुराज ने अपने जीवन के कई साल झारखंड के आदिवासियों के बीच गुजारे थे और उनके प्रति उसकी संवेदना कभी-कभार उसके विचारों में छलककर दिख ही जाती थी। कुछ लोगों का कहना था कि वह कभी नक्सली संपर्क में भी रहा था। यद्यपि उसके सर पर कुछ पुलिस केस भी थे जिसे वह अपने छात्र जीवन के दौरान कई सामाजिक संगठनों से जुड़े होने के कारण राजनीतिक षडयंत्र का नतीजा बताता था। कुल-मिलाकर उसे देखकर कहा जा सकता था कि वह संभावनाओं से भरा एक निराश और बेचैन आदमी था।

रायसाहब गुरु के सामने हमेशा बचाव की मुद्रा में रहते थे। वे गुरु को रग-रग से जानते थे। रायसाहब की विद्वता और उनका आदर्श गुरु के सामने उस ढीले जाँघिए की तरह था जो कभी भी गुरु के एक झटके से सरक सकता था। संतोष गुरु के सामने अपने पहले गुरु रायसाहब की दशा देखकर हैरान था। उसे अब गुरु में महागुरु नजर आने लगा।

“गुरु भइया, जरा रुमवा देखिए न संतोष भाई के लिए।” मनोहर ने पानी की बोतल खोलते हुए कहा।

“हाँ गुरु भाई, ये संतोष बिहार से हैं। भागलपुर से। तैयारी के लिए आए हैं।” रायसाहब ने संतोष पर प्रकाश डालते हुए कहा।

“एक कमरा कल ही मेरे ऊपरी तल्ले पर खाली हुआ है। देख लीजिए। ठीक लगे तो ले लीजिए। पचपन सौ रुपये का होगा।” गुरुराज ने कहा।

“हाँ क्यों नहीं, चलिए देखते हैं।” रायसाहब कहते हुए कमरा देखने उठे। सब ऊपरी तल्ले पर पहुँच गए। कमरा खुला था, साफ-सुथरा था। संतोष को कमरा, शांत वातावरण और नीचे रह रहा गुरु सब ठीक लगा। उसने हाँ कर दी। रायसाहब को तो मानो अब जाकर चैन मिला। लैपटॉप और सीडी की गुदगुदी से भर उठे रायसाहब।

“आज ही शिफ्ट हो लीजिए, चलिए आपका बैग ले आते हैं।” रायसाहब ने झट से कहा। गुरु ने मकान मालिक को फोन लगाया और शाम तक शिफ्ट हो जाने की बात फाइनल कर ली।

“चलिए रूम मिल गया, इसी बात पर एक शानदार पार्टी होना चाहिए संतोष भाई आपके कमरे पर।” मनोहर ने चहकते हुए कहा।

“हाँ, हाँ क्यों नहीं?” संतोष ने कहा।

अब संतोष वजीराबाद में स्थापित होने जा रहा था। अब उसे अपने सपनों को पूरा करना था। उसने सोच लिया था, खूब पढ़ेगा, खूब मेहनत करेगा। अकेला कमरे पर रहना है सो कोई बाधा भी नहीं होगी। रूम पर शिफ्ट होने के बाद रायसाहब ने उसे सुझाव देते हुए कहा था कि अभी पहले छः महीने खुद से कमरे पर एनसीईआरटी की किताबें पढ़ ले फिर कोई कोचिंग ज्वाइन करे।

“चलिए, आपको कुछ सामान भी तो लेना होगा।” गुरुराज ने संतोष को कहा।

“हाँ, किचन का सामान। एक मेज, एक कुर्सी, और बैड तो आज ही ले लीजिए। उसके बाद धीरे-धीरे और भी जरूरी सामान लेते रहिएगा।” मनोहर ने एक कुशल गृहस्थ की भाँति सुझाव देते हुए कहा।

“हाँ उधर से ही इनका बैग भी उठा लाएँगे। ओके बहुत धन्यवाद गुरु भाई। कमरा दिलवा दिए आप। ऊपर से आपका सानिध्य मिलेगा संतोष जी को। एकदम ठीक रहा ये।” रायसाहब बोले।

“थैंक यू गुरु भाई।” संतोष ने भी कहा।

“सुनिए, गुरु को थैंक यू बोलने से काम नहीं चलता। गुरु को थैंक्स का मतलब होता है कि कुछ रंग-बिरंगा पानी बरसना चाहिए।” हँसते हुए मनोहर ने कहा।

“नहीं यार संतोष, तुम भाई जाओ अपना सामान खरीद जल्दी एडजस्ट हो जाओ। ई मनोहर साला ऐसे ही मजाक कर रहा है।” गुरु ने संतोष से कहा। पर संतोष भी हृदय से धन्यवाद देना चाहता था और मनोहर ने इशारों में वह तरीका बता दिया था।

“ठीक है, मेरी तरफ से प्लीज कमरे पर एक पार्टी रहेगा, शाम को जल्दी आ जाइएगा आप लोग।” संतोष ने सबको आमंत्रित करते हुए कहा।

“ओ हो, बहुत बढ़िया संतोष भाई! ओके चलिए, अब कैम्प चलते हैं। वहीं मिलेगा बेड, मेज और कुर्सी बढ़िया वाला।” खुशी से भरे मनोहर ने कहा।

गुरु से विदा लेकर तीनों अब किंग्सवे कैम्प के मार्केट पहुँच चुके थे। ऑटो से उतरते ही रायसाहब ने कहा, “एक लिस्ट बना लीजिए सामान का।”

“अरे लिस्ट का बनाना है! चलिए फटाक से एक बेड, चेयर, और टेबल लीजिए पहले।” मनोहर ने ‘सरदार फर्नीचर’ की दुकान की तरफ बढ़ते हुए कहा।

सरदार जी ने झट से बाहर पड़ी हुई बैड की धूल झड़वाई और स्टाफ से उसे बिछाकर दिखाने को कहा। बैड के बिछते ही रायसाहब उस पर चढ़कर हुमच दो-तीन बार उछले। उतरकर बैड की चारों टाँगें हिलाकर देखी।

"ठीक है, मजबूत है, इसे दे दीजिए, दाम ठीक-ठाक लगा दीजिएगा सरदार जी।" रायसाहब ने सरदार जी से कहा।

"दाम की चिंता न करो, मार्केट से एक रुपिया कम ही लगाऊँगा जी, हमारा फिक्स रेट है। चीज देखो, कोई भी सामान लो चलता रहेगा।" सरदार ने कैलकुलेटर का बटन दबाते हुए कहा।

"ओके, एक कुर्सी और टेबल भी दिखा दीजिए।" मनोहर ने आगे आकर कहा।

"निकाल ओये, बढ़िया गद्दी वाली कुर्सी और बड़ी वाली टेबल दिखा बच्चों को।" सरदार जी ने आवाज लगाई। कुर्सी-टेबल की मजबूती भी जाँचकर रायसाहब ने ओके कर दिया। सामान पैक कराकर रिक्शा पर लाद दिया। रिक्शा वहीं खड़ी कर, तीनों और भी सामान लेने आगे की दुकान पर गए। बैड का गद्दा और तकिया खरीद उसे भी बँधवा लिया। किचन का सामान खरीदते वक्त भी रायसाहब ने तवे को तीन बार पटककर देखा। रायसाहब हर सामान की मजबूती देख लेना चाहते थे। उनका अनुभव जानता था कि विद्यार्थी को यहाँ तैयारी में पाँच-आठ साल लगना आम बात है, सो हर साल नया सामान खरीदने का झंझट न रहे। जो भी लेना हो टिकाऊ ही लें जो आईएएस के चार प्रयास और पीसीएस के अनेक प्रयास में भी साथ निभाता रहे। जरूरत के और भी सामान लेकर तीनों ने एक और रिक्शा लिया। दोनों रिक्शों पर सामान लादे वहाँ से निकल पड़े।

संतोष ने बिना कटौती किए जरूरत का हर सामान खरीद लिया था। उसने किसी सामान की मजबूती या गारंटी नहीं देखी, वह तो बस एक साल में ही अपने सपनों को साकार करने की ठानकर आया था। वह रिक्शा पर लदे सामान को युद्ध सामग्री के तौर पर देख रहा था। उसे अब यूपीएससी से लड़ाई जीतनी थी। वह बस जल्द कमरे पर पहुँचकर सारा सामान एडजस्ट कर पढ़ाई में जुट जाना चाहता था।

"लीजिए एक एक-कर के अंदर करिए सब सामान और चलिए अंदर लगाते हैं सामान को।" मनोहर ने कुर्सी को दरवाजे तक पहुँचाकर कहा। पाँच मिनट में सारा सामान कमरे के अंदर था।

"आप लोगों का बहुत ऋणी हूँ मनोहर जी और रायसाहब।" संतोष ने कृतज्ञ भाव से कहा।

"अरे इसमें ऐसी कोई बात नहीं, बस अब आप अपने हिसाब से ये सब सामान सेट कर लिजिएगा फिर पढ़ाई में जुट जाइए और हाँ, एक निब वाला पेन और स्याही ले लीजिएगा, निब वाले पेन से लिखने का अभ्यास डालिए।" रायसाहब ने नल खोलकर हाथ धोते हुए कहा।

"ठीक है रायसाहब, कल सुबह किताब लेने आ जाऊँगा बत्रा पर, मनोहर जी भी आ जाएँगे सुबह फिर हम तीनों वो रात की पार्टी वाला भी सामान सब खरीद लेंगे, गुरु भाई को भी मैं अभी बोल आऊँगा कल के लिए।" संतोष ने रैक को दीवार के साथ लगाते हुए कहा।

“ठीक है हम लोग चलते हैं अब।” रायसाहब ने कहा।

“जी ठीक है, कल मिलते हैं।” संतोष उन्हें दरवाजे तक छोड़ने निकल आया।

“चलिए मनोहर जी, गुरु भाई से भी कल ही मिलेंगे।” रायसाहब ने धड़ाधड़ सीढ़ी उतरते हुए मनोहर से कहा।

“हाँ महराज, आप एतना हड़बड़ी में हैं। आज सीडी चलेगा का खूब?” कहकर मनोहर ठहाका मारकर हँसा। रायसाहब भी गुदगुदा गए।

# 8.

संतोष अब कमरे पर बड़े करीने से अपने सपनों की दुनिया सजा रहा था। अब उसे मिशन आईएएस शुरू करना था। बैड को दक्षिण-उत्तर की दिशा में लगा कुर्सी और मेज को पूरब की दिशा में लगाया। भगवान की छोटी-छोटी मूर्तियों के लिए एक छोटा-सा टेबल पूरब और उत्तर के कोने में लगाया। उत्तर की तरफ किताब का रैक लगाया। उसने कमरे के रख-रखाव में अपनी जानकारी भर पूरे वास्तु का ख्याल रखा। कमरे से लेकर किचन तक की सजावट के बाद संतोष बिना खाए-पिए थककर न जाने कब सो गया।

सुबह रायसाहब की कॉल के साथ ही उसकी नींद खुली, "हैलो! सुप्रभात संतोष जी। कब आ रहे हैं बत्रा? जल्दी आइए, किताब खरीदना होगा न सब ठो?" रायसाहब की एकदम फ्रेश आवाज आई उधर से।

"हम बस उठ गए हैं रायसाहब। तुरंत आधा घंटा में आते हैं। आप भी पहुँचिए।" संतोष ने आँख बंद में ही कहा।

फोन रखते ही संतोष एक झटके में उठा और बाथरूम की तरफ दौड़ा। नहा-धोकर जल्दी-जल्दी हनुमान-चालीसा पढ़ तुरंत कपड़ा पहन जाने को तैयार हो गया। इधर रायसाहब तो रात भर सोए ही कहाँ थे! पूरी रात लैपटॉप पर आँख गड़ाए गुजारी थी। सुबह जल्द-से-जल्द खुले वातावरण में जाकर अब कुछ सजीव चित्र देखना चाह रहे थे, इसलिए संतोष को फोन लगा बत्रा बुला लिया था। ब्रश करके, मुँह पर पानी मार, तौलिया हटाकर फुल पैंट पहनी और शर्ट डाल रायसाहब भी बत्रा के लिए निकल गए।

बत्रा पहुँच संतोष ने रायसाहब को कॉल लगाया। रायसाहब तब जूस पीकर बस-स्टॉप वाली सीट पर बैठे संतोष का इंतजार कर रहे थे। संतोष को वहीं बुला, दोनों किताबों की दुकान की तरफ चले। दुकान पहुँचते ही रायसाहब ने संतोष को पीछे किया और अपने पर्स से एक पुर्जा निकाला। यह किताबों की लिस्ट थी जो रायसाहब ने अपने अनुभव और जानकारी से तैयार की थी। इस पुर्जे में मुखर्जी नगर के सारे अनुभवी शिक्षकों और संस्थानों के द्वारा सुझाई गई पतली-मोटी किताबों के नाम अंकित थे। रायसाहब ने इस पुर्जे से न जाने कितने विद्यार्थियों के कमरे किताबों से भरवाए थे! आज संतोष की बारी थी। सीनियर होने और यहाँ मुखर्जी नगर में पाँच-छः सालों से लगातार रहने का दायित्वबोध इतना था कि रायसाहब के पास सामान्यअध्ययन समेत लगभग सभी प्रमुख विषयों के किताबों की लिस्ट थी, यद्यपि उनके अपने विषय हिंदी साहित्य और इतिहास थे।

"आप विषय क्या रखिएगा, कुछ सोचे हैं संतोष जी?" रायसाहब ने एकदम गंभीर भाव से पूछा।

"इतिहास से बी.ए. हूँ, वही रख लेंगे एक तो। दूसरा आप ही मार्गदर्शन कर दीजिए।" संतोष ने बड़े संयम और साफ मन से कहा।

“चलिए फिर दूसरा हिंदी साहित्य रख लीजिए। हाल से अच्छा अंक आ रहा है इसमें। काफी लोग सलेक्ट हो रहे हैं इतिहास और हिंदी साहित्य के काम्बिनेशन से।” रायसाहब ने एक एलआईसी एजेंट की भाँति पॉलिसी समझाने जैसा कहा।

“हमारे एक परिचित एक बार समाजशास्त्र से मेंस दिए थे, कैसा विषय है समाजशास्त्र?” संतोष ने जिज्ञासावश पूछा।

“विषय सारे ठीक हैं, आप अपनी रुचि देख लीजिए। हिंदी साहित्य का सलेबस छोटा है, अंकदायी विषय है। अच्छे टीचर भी हैं यहाँ इसके और सबसे बड़ी बात है कि हमारा भी हिंदी ही विषय है। सो, कोई भी समस्या होगी तो आपको एक सपोर्ट मिल जाएगा। कितने लड़कों को हिंदी पढ़ाया हूँ मैं। आज सब-के-सब बहुत सहज हैं हिंदी में। बस पीटी हो जाए तो फिर देखिएगा सबको अच्छा नंबर आएगा हिंदी में।” रायसाहब ने अपने विषय की पुरजोर वकालत की।

“अच्छा, रायसाहब अभी तो इतिहास और सामान्य अध्ययन का किताब दिलवा दीजिए। दूसरा विषय थोड़ा समय ले के सोच लेंगे।” संतोष ने खुद को तत्काल विषय चयन के ऊहापोह से निकालते हुए कहा।

“जैसी आपकी इच्छा भई। हम तो जो विषय कहिएगा, उसी में आपको हेल्प कर देंगे। आइए पहले ले लें आपका किताब सब।” रायसाहब ने अपनी सर्वविषय पारंगत होने की जानकारी देते हुए शेल्फ से एक किताब निकालते हुए कहा। रायसाहब एक के बाद एक रंग-बिरंगी, हर साइज की कई किताबें चुन-चुनकर साइड में रखे जा रहे थे। किताबों का चयन बड़ी निर्ममता से बिना मूल्य देखे करते जा रहे थे। सबसे पहले तो तीस से अधिक किताब कक्षा छः से कक्षा बारह तक की एनसीईआरटी के अलग कर रख दिए थे। उसके बाद अन्य किताबें और साथ में इंडिया ईयर बुक के साथ चार पत्रिकाएँ भी। संतोष चुपचाप रायसाहब के द्वारा दी जा रही किताबों का ढेर लगाए जा रहा था। उधर दुकानदार एक तरफ से कैल्कुलेटर पर खुट-खुट करके मूल्य अंकित किए जा रहा था। संतोष ने देखा अब तक बाईस सौ रुपये से अधिक की किताब जमा हो गई थीं और उधर रायसाहब की नजर निष्ठुर भाव से और भी किताबें ढूँढ़ रही थीं। संतोष कुछ ना-नुकुर भी नहीं कर सकता था, जरा-सी ‘ना’ उसे तैयारी के प्रति अगंभीर साबित कर सकती थी। किताबें खोजते-खोजते जब रायसाहब पसीने से तर-ब-तर हो गए तब उन्होंने कहा, “अब आज इतना ही रहने देते हैं।”

“ठीक है, इसको पैक करवा दीजिए।” संतोष ने एक लंबी साँस लेते हुए कहा। संतोष ने पाँच सौ के छः नोट निकाल दुकानदार को दिए। कुल सत्ताईस सौ तीस रुपये मात्र का बिल बना। सारी किताबों को एक बड़े कार्टन में पैक कर बाँध दिया गया। संतोष को अब जाकर अचानक मनोहर का ख्याल आया। सोचा अगर थोड़ी देर पहले बुला लेता तो शायद यह कार्टन थोड़ा हल्का भी हो सकता था। उसने मनोहर को फोन लगाया। मनोहर भी तैयार बैठा था, “ओ हो हो! हमरे आने से पहले ही आप लोग बीयर का कार्टन खरीद लिए का रायसाहब!” मनोहर ने आते ही कार्टन देख कहा।

“वाह मनोहर जी, जाकि रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन्ह तैसी।” रायसाहब ने बिना अवसर गँवाए कहा।

"बीयर नहीं, रायसाहब की लिस्ट से किताब खरीदे हैं।" संतोष ने हँसी और दर्द के मिक्स भाव से कहा। मनोहर एक पल के लिए झेंपा पर उसने तुरंत पलटवार करते हुए रायसाहब की तरफ देखा, "क्या बात है रायसाहब, आँख बड़ा लाल-लाल लग रहा है! रात भर जगे हैं क्या?" मनोहर ने मुस्कुराते हुए कहा।

"हाँ, थोड़ा लेट सोए थे।" रायसाहब ने बिना कोई भाव चेहरे पर लाए कहा।

"रात भर खूब पढ़े हैं, लगता है!" मनोहर ने व्यंग्य में कहा।

संतोष समझ चुका था कि अब बात सीडी और फिल्म पर जा सकती है और मामला फिर आदर्श और नैतिकता जैसे महान मुद्दों की तरफ मुड़ सकता है। रायसाहब आहत भी हो सकते हैं। आज शाम संतोष का कमरा लेकर, सेट होने की पार्टी थी। सो, वह इस उत्सव में कोई खटपट नहीं चाहता था। "महराज, शाम के लिए क्या-क्या लेना है, जल्दी बोलिए।" संतोष ने बीच में टोकते हुए कहा।

"आप भेज हैं कि नानभेज, ई बताइए?" मनोहर ने संतोष से सवाल किया।

"हम तो शाकाहारी हैं मनोहर जी।" संतोष ने कहा।

"चलिए फिर, बस आधा किलो ही चिकन लेते हैं और आधा किलो पनीर ले लेते हैं आपके और गुरु भाई के लिए। वो भी शाकाहारी हैं।" मनोहर ने संतोष से कहा।

"हम भी चिकन कम ही खाएँगे भाई।" रायसाहब ने कहा।

"ठीक है आप दरुवा तऽ पीजिएगा न, बता दीजिए उसी हिसाब से लेना होगा। आदर्श मत पेलिए अभी। रात को घट जाएगा तऽ मूड खराब हो जाएगा पूरा, बता देते हैं!" मनोहर ने पूरा चिढ़ते हुए कहा।

"आप अपने मन से ले लीजिए जितना लेना है। दारू सड़ता नहीं है समझे आप। एक बोतल ज्यादा ले ही लीजिएगा तो आप और गुरु भाई के रहते दारू बर्बाद नहीं हो जाएगा मनोहर जी।" रायसाहब ने एक साँस में कह दिया।

रायसाहब ने एकदम किसी मँझे हुए वैश्विक नेता की भाँति बिलकुल कूटनीतिक भाषा में बोलते हुए अपनी स्वीकृति दे दी थी। वे भी नहीं चाहते थे कि रात को अगर पीने की जोरदार इच्छा हो गई तो दारू घट जाए। वैसे भी अब वे संतोष के सामने धीरे-धीरे खुलने ही लगे थे। उन्हें यह भी लग रहा था कि मनोहर ने तो उनके कई कारनामों के बारे में बताया ही होगा संतोष को और अब संतोष भी गुरु के ही फ्लैट में है। सो, वहाँ भी कभी-कभार चर्चा निकल ही पड़ेगी। इससे अच्छा है कि ज्यादा आदर्श की जगह थोड़ा प्रासंगिक दिखकर अपना प्रभाव बनाए रखें।

पनीर, चिकन, नमकीन, चिप्स आदि के साथ तेल-मसाला, और सलाद के आइटम खरीद, सारा सामान दे संतोष को ऑटो पर बिठा रायसाहब ने विदा ली।

"अब शाम को आते हैं। चलें थोड़ा दिन में कुछ करेंट के टॉपिक का नोट्स बनाना है।" रायसाहब ने चलते-चलते 'तैयारी बम' पटक दिया।

"मनोहर जी आप कब आएँगे?" संतोष ने पूछा।

"हम भी आते हैं शाम में। अभी तो आप बुलाए तो आ गए। एक मित्र को समय दिए हैं अभी। मिलकर पाँच बजे तक पहुँच जाएँगे।"

"ये बीयर वाला कार्टन और दारू वाला बोतल थोड़ा ठीक से ले जाइएगा।" मनोहर ने ध्यान दिलाते हुए कहा। जाते-जाते ऑटो वाले को पचास रुपये का नोट निकालकर मनोहर ने अपनी ओर से दे दिया।

"अरे ये क्या कर रहे हैं मनोहर भाई?" संतोष ने हाथ पकड़ते हुए कहा।

"रहने दीजिए, कोई औपचारिकता थोड़े है। आप इतना खर्च कर रहे हैं। कहाँ रोके, अब चेंज था सो दे दे दिया। प्लीज। हाँ, अच्छे से पकड़े रहिएगा ये काँच है देखिएगा थोड़ा।" मनोहर ने हाथ हिलाते हुए कहा।

ऑटो चल दिया। संतोष पूर्णत: वैष्णव था। न कभी शराब पी थी, न माँस-मछली छुआ था। अभी संतोष के अंदर का द्वंद्व देखने लायक था। मुँह उससे भी ज्यादा दर्शनीय था। किताबों के कार्टन को ऑटो में पीछे धकेलकर रख दिया था। बीयर और दारू भरे कार्टन को गोद में लिए बैठा था कि कहीं काँच फूट न जाए। दिल्ली आने का मूल उद्देश्य अनजाने में ही पीछे हो गया। दाहिने हाथ में पनीर, सलाद का सामान और तेल-मसाला झुलाए हुए था, बाएँ में चिकन की काली पॉलीथीन। चिकन हाथ में लिए उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे किसी की लाश के टुकड़े-टुकड़े करके ले जा रहा हो। दोनों जाँघों के बीच रखे बीयर-दारू भरे कार्टन और हाथ में चिकन की पॉलीथीन उसके शरीर में अजीब-सी सिहरन पैदा कर रहे थे। उसे अचानक दस साल पहले का अपने नए बने घर का गृहप्रवेश याद आया। किस तरह भयंकर पूजा-पाठ और मंत्रोच्चारण के बीच गौमाता के साथ प्रवेश किया था उसके माता-पिता ने घर में। आज संतोष का दिल्ली में अपने कमरे में प्रवेश का ये दिन था, दारू-मुर्गा, बीयर। यही सब सोचे जा रहा था संतोष। फिर संतोष मन-ही-मन अपने समर्थन में तर्क गढ़ने लगा। उसने खुद को समझाया कि यह दिल्ली है और हम सिविल की तैयारी करने वाले छात्र हैं। हमारा धर्म पढ़ना है न कि हिंदू या मुस्लिम या ईसाई। ये कर्मकांड और पाखंड ने ही तो बेड़ा गर्क किया है। क्या खाने और पीने से कुछ होता है! बस मन साफ होना चाहिए। ऊपर से मैं तो माँस खाता या शराब पीता भी तो नहीं हूँ! दूसरों को खुशी देना सबसे बड़ा धर्म है और मैं अगर चिकन खिलाकर, दारू पिलाकर तीन लोगों को खुश कर रहा हूँ तो यही तो मानव सेवा है, धर्म है।

संतोष तब तक कमरे पर पहुँच चुका था। मन में द्वंद्व जारी था। सोचा गुरु से शेयर करूँ। पर फिर सोचा अभी पहले पहल इस तरह की पिछड़ेपन की बात कर शर्मिंदा होने से क्या फायदा! दारू पीकर और माँस खाकर भी तो रायसाहब ने मेंस दिया है। भारी पियक्कड़ गुरु ने भी इंटरव्यू दिया है। यह सब चलता रहा संतोष के मन में। आखिरकार संतोष ने मन को खूब दृढ़ किया और तय किया कि पार्टी खत्म होते ही कमरे को धो-पोंछ लेगा और गंगाजल के छींटे मार अगरबत्ती जलाकर पवित्र कर लेगा, फिर आगे से रूम पर माँस-दारू से परहेज रखेगा।

"अरे वाह! इतना इंतजाम। भव्य आयोजन है का संतोष जी आज!" सीढ़ियों पर चढ़ते संतोष पर नजर पड़ते ही गुरु ने कहा।

"अरे नहीं गुरु भाई, आप ही सबके लिए है इंतजाम।" संतोष ने हँसते–हँसते कहा।

"चलिए चलिए हम आते हैं ऊपर अभी।" गुरु ने कहा। गुरु कुछ मिनट के बाद ऊपर पहले तल्ले पर संतोष के कमरे पर पहुँचा। उसकी नजर भी दोनों कार्टनों पर पड़ी। संतोष

ने बताया कि एक में सोमरस और दूसरे में ज्ञानरस यानी किताबें हैं। गुरु के आते ही संतोष ने बीयर की एक बोतल खोली और गुरु की तरफ बढ़ा दी। संतोष के जीवन में यह पहला मौका था जब उसने बीयर की बोतल खोली हो, इससे पहले कोका-कोला या स्लाइस की बोतल भी दुकानदार ने ही खोलकर दी थी। अभ्यास न होने के कारण बीयर खोलते वक्त थोड़ी-सी छलककर शर्ट पर भी लग गई थी। मतलब स्वत: ही बीयर छिड़कते एक सिविल अभ्यर्थी के रूप में शुभारंभ हो गया संतोष का।

"अजब महकता है गुरु भाई, आप लोग को इसका स्वाद बड़ा अच्छा लगता है न?" संतोष ने नाक-मुँह सिकोड़ते हुए मगर चेहरे पर मुस्कुराहट बनाए रखते हुए कहा।

"हूँ, लो कभी पिए नहीं हो का भाई?" गुरु ने अचरज से पूछा।

"आप पीने का कहते हैं, हम कभी हाथ भी नहीं लगाए और आज हाथ-टाँग दोनों ओर से दबोचे गोदी में भर के लाए हैं बीयर और दारू।" संतोष ने हँसते हुए कहा।

सुनकर गुरु को लगा जैसे गटकी हुई बीयर बाहर उगल दे। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह संतोष की इस बलिदानी दिलेर मेजबानी पर गर्व करे या उसकी बेवकूफी पर अफसोस करे। खुद के लिए भी शर्मिंदगी महसूस कर रहा था गुरु। गुरु ने तुरंत दूसरा वाजिब सवाल दागा "माँस-मछली खाते हो?"

"नहीं गुरु भाई, हम लोग एकदम वैष्णव परिवार हैं।"

"दारु पीते नहीं हो, माँस खाते नहीं हो, तो ये सब तामझाम काहे के लिए कर लिए हो भाई?"

"अब वो रायसाहब और मनोहर की इच्छा थी। आप भी थे। सो, सोचा एक पार्टी हो जाए। फिर तो जम के पढ़ना ही है।" संतोष ने कहा।

"ये साले चूतिए राय और मनोहर, जिसे-तिसे फँसाते रहते हैं। यार, तुम अभी-अभी आए हो। तुरंत रफ्तार पकड़ लिए। हटाओ यार ये सब। खुद को इतना भी गीला न रखो कि कोई जैसा चाहे आकार दे दे। व्यक्तित्व का लचीला होना और गीला होना दोनों अलग-अलग बातें हैं मित्र।" गुरु ने बीयर की बोतल खाली करते हुए कहा।

अपराधबोध के बावजूद भी उसने इसको अपने बीयर पीने की गति में कोई बाधा नहीं बनने दिया क्योंकि वह जानता था बीयर के निर्बाध अंदर जाने पर ही अच्छे विचार ऊपर आएँगे। गुरु ने बीयर वाली कार्टन अपने कमरे पर रखवा दी और एक मित्र को फोन करके चिकन वहाँ बनवाने की व्यवस्था कर दी। खाना-पीना गुरु के ही रूम पर होना तय हो गया यद्यपि गुरु भी शाकाहारी था पर वह संतोष की असहजता को समझ गया था।

# 9.

शाम पाँच बजते ही मनोहर और रायसाहब पहुँच चुके थे। रायसाहब के साथ उनका एक मित्र भरत कुमार भी लटक आया था। अक्सर मुखर्जी नगर में ऐसी पार्टियों में दो-चार लटकन का आना प्रत्याशित रहता था। जिसका अतिरिक्त इंतजाम हमेशा से मेजबान को रखना ही पड़ता था। हर मित्र के साथ एक सहमित्र के आने-जाने से ही परिचय का आदान-प्रदान होता था और इस तरह एक सिविल प्रतियोगी का सामाजिक दायरा विस्तृत होता जाता था। हर तरह की अलग-अलग विशेषताओं और भिन्न-भिन्न विषयों के पारंगतों का आपस में मिलना तैयारी को और ठोस बना सकता था, इसी कारण यहाँ हर छात्र एक ग्रुप बनाने को प्रयत्नशील रहता था जो G-8 या G-20 से ज्यादा कारगर हो।

वे लोग अभी सीढ़ियों से ऊपर ही चढ़ रहे थे कि गुरु के कमरे से संतोष की आवाज आई। मनोहर ने लपककर दरवाजा खोला तो देखा संतोष और गुरु दोनों वहीं थे।

“आइए नीचे ही आइए, संतोष जी यहीं हैं।” मनोहर ने अंदर आते हुए रायसाहब को आवाज लगाई।

बीयर का कार्टन यहाँ देखते ही मनोहर ने कहा, “यहीं जमेगा का महफिल?”

“हाँ यहीं जमा दो। साले मनोहर जब जानते थे कि ये लौंडा न चिकन खाता है, न दारू पीता है तो क्या जरूरत थी इस मुगलिया दावत की?” गुरु ने चिड़चिड़ाते हुए कहा।

रायसाहब अंदर घुसते ही गुरु के तेवर देख अकबका गए और फोन निकाल उल्टे पाँव बाहर आ गए।

मनोहर, गुरु की बातों और उसके मिजाज से भलीभाँति परिचित था और उसकी हर कड़वी-मीठी बातों को सहज ही लेता था। मनोहर ने रायसाहब को बाहर जाता देख हँसते हुए कहा, “अब हमारी तो ले लिए पर ई बुढ़वा को छोड़ दीजिएगा गुरु भाई, गलती हो गया। चलिए अब पिया जाए, मूड न खराब करिए अपना भी और बेचारे संतोष जी का भी।”

“अरे कहाँ गए हो बुढ़ऊ रायसाहब?” गुरु ने आवाज लगाई।

“हाँ हाँ, आ गए। अरे वो घर से एक फोन आ गया था।” रायसाहब ने अंदर आते हुए कहा।

रायसाहब के पीछे-पीछे भरत भी अंदर आ गया। एक बात यह भी थी कि रायसाहब ने सुबह जो पेटी देखी थी बीयर की, उसकी बर्बादी न हो इसके लिए भी उनका दायित्व था कि एक बारहवाँ खिलाड़ी लेते चलें जिसे जरूरत पड़ने पर मैच में उतारा जा सके। भरत एकदम शांत स्वभाव का दिख रहा था। सबसे अपरिचित भी था। सो, तत्काल शालीनता स्वाभाविक ही थी। रायसाहब ने भरत का सबसे परिचय करवाया। रायसाहब ने

बताया कि भरत ने इसी बार छत्तीसगढ़ पीसीएस, उत्तर प्रदेश लोअर सबोर्डीनेट की मुख्य परीक्षा दी है। उसके विषय भी बताए और बिहार पीसीएस की अच्छी तैयारी है इनकी, यह भी बताया।

अच्छा, यहाँ मुखर्जी नगर में एक-दूसरे का परिचय नाम और उसके गाँव घर के नाम वाले पुराने ढर्रे पर नहीं कराया जाता था। यहाँ किसी का परिचय बिल्कुल यहीं विकसित मौलिक पैटर्न के आधार पर कराया जाता था, जिसमें विद्यार्थी का विषय और उसने कई बार कहाँ-कहाँ मेंस दिया है, यह बताया जाता था। यहाँ एक ही परिचय सूत्र था 'पीटी मेंस ही मेरा परिचय है।'

थोड़ी देर के लिए सब भरत को देखने लगे। फिर वापस सब लग गए खाने-पीने में। तब तक चिकन भी बनकर आ चुका था। म्यूजिक सिस्टम पर नुसरत फतेह अली खान का गाना 'ये जो हल्का-हल्का सुरूर है' बज रहा था।

जिसने जितने अधिक मेंस लिखे हों वह महफिल का सबसे खास व्यक्ति होता था। जिसने इंटरव्यू दे दिया हो वह अति-विशिष्ट की श्रेणी में आता था। दारू पीने के बाद वह जो भी 'बकचोदी' बकता उसे बाकी लोग ज्ञान के रूप में लेने को प्रतिबद्ध थे। ऐसा प्रतियोगी कुछ भी बोल सकता था, और उसकी थर्ड क्लास टाइप कही बातों में भी एक सार्थक मैसेज खोजना मेंस दिए प्रतियोगी का काम था और पीटी फेल प्रतियोगी का काम केवल टुकुर-टुकुर देखना और ज्ञान की बातें सुनना होता था। किचन से सब्जी की कड़ाही लाना, रोटी खरीद कर लाना, बिसलेरी की बोतल लाना, बर्फ जुगाड़ करना, ये सब पीटी फेल विद्यार्थी का दायित्व होता था। बदले में उसे मेंस इंटरव्यू दिए विद्वानों का सानिध्य प्राप्त होता था, वह इसी सत्संग का लाभ प्राप्त कर खुद को पुन: अगली परीक्षा के लिए तैयार करता रहता था।

मनोहर ने चिकन की थाली भरत की तरफ बढ़ाई और एक बीयर की बोतल भी सरका दी। भरत ने बीयर की जगह साथ ही रखे मैजिक मोमेंट को वरीयता दी और एक पेग उसी का बनाया।

"बॉस, ये कम तो नहीं पड़ जाएगा और मँगा लिया जाए क्या?" भरत के बोतल खोलने के साथ ही उसकी शालीनता का ढक्कन एकदम से उछलकर कमरे के किसी कोने में जा घुसा। लोग धीरे-धीरे खुलते हैं पर यहाँ समय कम था। सो, भरत एक झटके में खुल गया।

रायसाहब ने तत्काल हस्तक्षेप करते हुए कहा, "नहीं-नहीं, हो जाएगा भरत जी। रहने दीजिए काफी है।" भरत एक्सपर्ट की भाँति लगातार पेग बनाकर सर्व कर रहा था। अब बीयर को साइड में हटाकर रख दिया गया था। फिर सबने संतोष की तरफ देखते हुए उसके कमरे का जयकारा लगाते हुए चियर्स किया। संतोष ने भी दूर से ही अपनी कोका-कोला का ग्लास सटाकर हटा लिया और उनका साथ निभाने लगा।

"खुल के इन्जॉय करने के बाद पढ़ाई का मजा ही कुछ और है। पढ़ने में दोगुना एनर्जी आ जाता है।" भरत ने पीने के वैज्ञानिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए बताया।

"हाँ, मेंटल स्ट्रेस कम होता है। हम इसलिए कभी-कभार लेते रहते हैं।" मनोहर ने पक्ष मजबूत करते हुए कहा।

"देखिए पीना बुरा थोड़े है। कुछ लोग कहते हैं ये चरित्र का मामला है पर ऐसा नहीं है। आप पूजा करके उठे और किसी का बलात्कार कर दीजिए तो वो बुरा है कि कोई दारू पी के उठे और किसी को बलात्कार से बचा ले ये बुरा है, बताइये! सो, दारू बुरा नहीं होता, आदमी का मन कैसा है, ये मायने रखता है।" रायसाहब ने शराब-ए-पाक की पाकीजा चरित्र को बताते हुए कहा। रायसाहब यहीं नहीं रुके, "मुझे देखिए, ओकेजनली पीता हूँ पर आज तक पीने के बाद कुछ भी अनैतिक न किया न बोला। आत्मनियंत्रण होना चाहिए फिर आप चाहे कुछ भी पीजिए। दारू चरित्र नहीं खराब करता है। आदमी खुद अच्छा या खराब होता है।" रायसाहब ने दारू को लगभग निर्दोष साबित करते हुए, एक जीते हुए वकील की तरह ग्लास गटकते हुए कहा। आत्मनियंत्रण के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने दारू के अलावा सिगरेट वगैरह के लिए भी माहौल तैयार कर लिया था।

"हाँ, भोसड़ी के राय! दारू चरित्र नहीं, किडनी खराब करता है। हल्के पीजिए आप, एक पैग पीते ही चूतड़ पर हाथ रख के घोलट जाते हैं और यहाँ ज्ञान पेल रहे हैं।" गुरु ने बड़ी निर्ममता से कहा।

सबने ठहाका लगाया। संतोष ने भी ठहाका टाइप लगाया। उसके अंदर की खलबली शांत भी थी और नहीं भी। वह जो देख रहा था उसे यहाँ की जरूरत समझ रहा था पर वह जो सोच रहा था वह उसकी जरूरत थी। उसे रह-रहकर बीच में एकाध बार घर याद आया पर फिर मस्ती और ठहाकों के बीच यादें धुँधली पड़ती गईं।

संतोष ने पहली बार सुरा में ज्ञान को इस कदर डूबे देखा था। शराब की पाकसाई पर इतनी सार्थक चर्चा सुनने का पहला मौका था उसके लिए। उसका मन कर रहा था हाथ में चुल्लू भर शराब ले और आचमन कर ले। आज तक वह दारू को आवारों और अय्याशों का तामसी पेय मानता रहा था पर अब उसकी आँखें खुल गई थीं। शराब अच्छी या बुरी नहीं होती, आदमी अच्छा या बुरा होता है, यह दिव्य ज्ञान उसे अभी मिला था। वहाँ मौजूद हर आदमी उसे हरिवंशराय बच्चन टाइप दिखाई दे रहा था और उनकी कही हर बात मधुशाला को साकार करती हुई प्रतीत हो रही थी। संतोष बिना पिए ही उस मस्ती के माहौल में तैर रहा था, कभी डूबता, कभी निकलता। रात ऐसे ही गुजर गई।

## 10.

संतोष सुबह होने से पहले ही अपने कमरे पर जाकर सो गया था। बाकी लोग वहीं गुरु के कमरे में फर्श पर लेटे हुए थे। अचानक मनोहर उठा और जल्दी-जल्दी जाने को हुआ। उसे याद आया कि आज गाँव से उसके चाचा आने वाले थे। 10 बजे की ट्रेन आनी थी, नई दिल्ली स्टेशन पर। 8.30 बज चुके थे। मनोहर कमरे पर पहुँचकर सीधे फ्रेश हुआ, ब्रश किया और स्टेशन निकल पड़ा।

ट्रेन आने में अभी आधा घंटा विलंब था। मनोहर के मोबाइल पर तभी रायसाहब का नंबर घनघनाया।

"हैलो, अरे महराज कहाँ हैं आप, उठ के किधर निकल दिए?" रायसाहब की आवाज आई।

"हमारे चाचा आने वाले हैं, एकदम ध्यान से उतर गया था। उन्हीं को लेने आ गया हूँ स्टेशन।" मनोहर ने कहा।

"अरे ये भरत जी कह रहे थे आज शाम इनके कमरे पर महफिल जमे, नयी दोस्ती की खुशी में पार्टी देना चाह रहे हैं, कितने बजे आइएगा बता दीजिए।"

"रायसाहब आप लोग कर लीजिए, हम नहीं आ पाएँगे। चाचा आए हैं। रात भर बाहर रहें या पी-पा के आएँ तो सब गड़बड़ा जाएगा। बाबूजी को खबर जाते देर नहीं लगेगा। हमको माफ करिए आज भर।" मनोहर ने कसक के साथ कहा और फोन काट दिया।

मनोहर मन-ही-मन चाचा के आने के बाद की प्लानिंग सोच रहा था। उसने मन पर जोर देकर सोचा तो उसे तुरंत एक बात याद आई। उसने तत्काल अपने फ्लैट में रहने वाले लड़के को फोन लगाया और कहा, "यार आज जरा एक 'द हिन्दू' खरीद कर मेरे दरवाजे के नीचे डाल देना। अभी के अभी प्लीज।" उसे फोन करने के बाद तुरंत मनोहर ने अखबार वाले को फोन लगाया और कहा, "हाँ, सेवकराम जी! कल से तीन दिन दैनिक भास्कर की जगह 'द हिन्दू' डाल देना मेरे यहाँ"।

"जी ठीक है, कोई आया है का घर से सर?" अखबार वाले सेवकराम ने उधर से कहा।

"हाँ, वही समझो।" मनोहर ने निर्लज्जता से कहा और फोन काट दिया।

असल में अखबार वाले भी इस बात को जानते थे कि कई ऐसे लड़के हैं जो किसी मेहमान के कमरे पर आने पर ही अँग्रेजी अखबार मँगवाते थे। इतने में ट्रेन आकर प्लेटफॉर्म पर रुकी। कोच नं. एस-5 से उतरते हुए दो बड़े बैग लिए और बाँह में झोला लटकाए चाचा जी दूर से ही मनोहर को दिख गए।

"जी चाचा जी, चरण स्पर्श!" मनोहर ने पहुँचते ही पाँव छूकर कहा।

"खुश रहो, खुश रहो! लो पहले ई झोलवा पकड़ो जरा और बैगवा धरो। हम जरा

पेशाब करके आते हैं।”

‘अभी तो ट्रेन से उतरे, अंदर बाथरूम में नहीं कर लिए जो यहाँ स्टेशन पर दक्षिणी ध्रुव खोज रहे हैं मूतने के लिए ओह!’ मनोहर ने मन-ही-मन सोचा।

मनोहर वहीं खड़ा चाचा का इंतजार करता रहा। पूरे दस मिनट बाद चाचा ने वापस लौटते ही कहा, “साला ईहाँ तऽ जगह ही नहीं है। चलो तुम्हारे डेरा पर ही करेंगे।” चाचा ने एक झोला उठाते हुए कहा।

“चाचा ट्रेनवा में काहे नहीं कर लिए?” मनोहर ने पूछा।

“छि:-छि:! ट्रेनवा में बाथरूम जाने लायक है का! कैसे घुसता है लोग उसमें! तुमको बताए हम तो मोतिहारी से ही दाबे हुए हैं कि अब एके बार दिल्ली में करेंगे।” चाचा ने हल्की चाल में चलते हुए कहा।

चाचा का भारी-भरकम झोला-झंगटा देख मनोहर ने मेट्रो की जगह ऑटो से जाना बेहतर समझा। वह चाचा के जिज्ञासु स्वभाव से भी परिचित था। मेट्रो में जाने पर टोकन से लेकर स्वत: दरवाजे के खुलने और बंद होने तक के सभी वैज्ञानिक कारण वाले सवाल वे खोद-खोदकर पूछ सकते थे। मनोहर के चाचा किडनी के मरीज थे। गाँव में सबने समझाया, ‘दिल्ली जाकर एम्स में दिखा लीजिए, जब वहाँ मनोहर का डेरा है ही तो रहने खाने का कोई दिक्कत तो होगा नहीं।’

दिल्ली में रहने वाले छात्रों के साथ यह एक सामान्य समस्या थी कि साल भर कोई-न-कोई परिचित इलाज कराने दिल्ली आता रहता था। इसका मूल कारण अच्छे चिकित्सक से दिखवाने से ज्यादा इस बात की निश्चिंतता होती थी कि हमारा पहचान वाला एक लड़का दिल्ली रहता है, रहने खाने की चिंता नहीं। एक बात और थी, इलाज कराने आए व्यक्ति को फोकट में एक स्मार्ट और पढ़ा-लिखा गाइड और हेल्पर मिल जाता था जो आईएएस की तैयारी करता है। मनोहर भी चाचा के आने का प्रयोजन जान ही रहा था। सोच रहा था कि सुबह तड़के उठकर एम्स निकलना होगा। लाइन में भी हमीं को लगना होगा। चचवा को खाली किडनी दिखवाने पहुँचा दिए हैं, बाकी तो सारा समस्या हमरे ही कपार है।

“तब कैसा चल रहा है तुम्हरा तैयारी मनोहर?” चाचा ने ऑटो चलते ही पूछा।

“ठीक है चाचा, बस देखिए इस बार हो जाना चाहिए।” मनोहर ने कहा। रास्ते में कोई भी इमारत देखते ही चाचा उसकी स्थापना का दिवस पूछते। कोई चौराहा मिलते ही जाती हुई सड़क दिखाकर पूछते कि ‘ये सड़क किधर जाएगा?’ मुखर्जी नगर पहुँचते-पहुँचते लगभग 150 प्रश्न पूछ लिए थे चाचा ने। मनोहर ऑटो से उतरा तो लगा जैसे परीक्षा हॉल से पीटी देकर निकला हो।

कमरे पर पहुँच ऑटो वाले को चाचा ने पैसे दिए, तब तक मनोहर बैग और झोला लिए ऊपर सीढ़ी पर चढ़ने लगा। पीछे-पीछे उसके चाचा भी।

“केतना का डेरा है ई?” कमरे में घुसते ही पहला सवाल दागा चाचा ने।

“साढ़े पाँच हजार का है, बिजली पानी प्लस है।” मनोहर ने बैग रखते हुए कहा।

“बाप रे! एतना जी, साला सोना के भाव डेरा मिलता है ईहाँ।” चाचा ने लगभग

चीखते जैसा कहा।

"और नय तऽ का! कितना संघर्ष कर रहे हैं हम यहाँ ई महँगाई में ऊ त हमीं जानते हैं चाचा, सबको लगता होगा कि दिल्ली में फुटानी कर रहा है बाप के पैसा पर।" मनोहर ने अपने मर्मस्पर्शी धारावाहिक का पहला एपिसोड सुनाते हुए कहा।

"अरे बथरुमवा केने है तुम्हरा?" चाचा को अपना दबा दर्द याद आया।

"यहीं तो है। उधर कर लीजिए, बाहर निकलकर।" मनोहर ने रूम के बाहर गली में इशारा करते हुए दिखाया। चाचा बाथरूम होकर आए। आते ही उनके मुँह से निकला, "यही ठो तुम्हारा बाथरूम था का? इसी में रोज जाते हो! ट्रेनवा से थोड़ा ठीके था। केतना आदमी जाता है इसमें भी?" गाँव-देहात के खुले वातावरण से आए आदमी के लिए यह समझना बिलकुल मुश्किल नहीं था कि मनोहर का बाथरूम भी सार्वजनिक शौचालय था जिसे उसके अलावा फ्लैट के और सात लड़के उपयोग में लाते थे।

"चाचा शेयरिंग है फ्लैट के लड़कों से। अपना सेपरेट बाथरूम वाला रूम लेंगे तो आठ हजार में मिलेगा।" मनोहर ने दर्दे-बाथरूम बयाँ करते हुए कहा।

"और ई खाना-ऊना कहाँ बनाते हो, चूल्हा सिलेंडर कुछ है कि नहीं?" चाचा ने एक और सवाल पूछा।

"हाँ सब है। चूल्हा, सिलेंडर सब खटिया के नीचे हैं। खाना टिफिन में आता है। चाय-चुक्कड़ बनाना हुआ तो अपना चूल्हा जलाकर बनाते हैं। रुकिए आपको चाय पिलाते हैं।" कहते हुए मनोहर ने अपने बैड के नीचे से छोटा सिलेंडर और सिंगल चूल्हा खींचा। एक सिविल अभ्यर्थी का यह संघर्ष देख चाचा का दिल पसीज गया। उन्होंने तुरंत चूल्हा बैड के अंदर धकेला और कहा, "नहीं, नहीं। चलो चाय बाहर ही पी लेंगे। कुछ खाने का भी ले आएँगे।"

मनोहर ने चैन की साँस ली। क्योंकि न दूध था, न चायपत्ती, न चीनी और न सिलेंडर में गैस। असल में पेय के तौर पर कभी भी मनोहर ने चाय लेना उचित समझा ही नहीं था। उसकी जगह पर वह हमेशा रेडीमेड ठंडी बोतल प्रिफर करता था।

चाचा जी बैग खोलकर अपना ब्रश, तौलिया, जाँघिया और गंजी निकालने लगे। ट्रेन से उतरे थे सो, नहाना चाहते थे। अभी अपना साजो-सामान लेकर मुड़े ही थे कि उनकी नजर दीवार पर सटे बड़े-बड़े पोस्टरों पर पड़ी। एक तरफ की दीवार लेडी गागा, शकीरा और ब्रिटनी स्पीयर्स के पोस्टर से कवर थी, दूसरी तरफ स्वामी विवाकानंद और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की तस्वीरें चिपकी हुई थीं। "ई सब का साटे हो भतीजा, किसका फोटो है?" चाचा ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा।

"ई लोग खाली अँग्रेजी में गाती हैं। ये सब हॉलीवुड की गायिका हैं। दुनिया में नाम है इन लोग का। आपके अनुराधा पौडवाल और साधना सरगम से एक करोड़ गुणा बड़ा नाम है। वो तो यहाँ तैयारी करने आए तऽ इन लोगों के बारे में पता चला नहीं तो मामूली गाँव-देहात में तऽ लोग ई सबका नाम भी नहीं सुने होंगे। आर्ट और कल्चर में इससे प्रश्न भी पूछ देता है कभी–कभी, ऐसे थोड़े लगाए हैं!" मनोहर ने झेंपते हुए ही सही पर उन देवियों के महत्व को समझाते हुए अपनी बात रखी।

"अच्छा ई लोग ये माइक को इस तरह टेढ़ा करके छाती से काहे लगाए हैं! गजबे-

गजब लीला है भाई!” चाचा ने चुहलबाजी वाले अंदाज में कहा।

“चचा ऊ सिंगिंग पोज है। ई मुखिया जी का भाषण थोड़े है 15 अगस्त वाला, जे माइक सीधा खड़ा कर सावधान पोजीशन में बोलेगी। इसमें आपको गाना के अनुसार अपने साथ माइक भी नचाना होता है। भारत में ऐसा बस एक ठो हनी सिंह ही करता है और कोई माई के लाल नहीं हुआ है अभी जो इस तरह का आर्ट जानता हो। चाचा ई सब आगे बहुत इम्पोर्टेंट होने वाला है देखिएगा।” मनोहर ने समझाते हुए कहा।

“ठीके है, लेकिन एक दु ठो देवी-देवता के भी फोटो लगा लो। नुक्सान नय हो जाएगा।” कहकर चाचा बाथरूम की तरफ बढ़े। बाथरूम अंदर से बंद था और एक लड़का बाल्टी, तौलिया लेकर बाहर भी खड़ा था। चाचा समझ गए उनका नंबर अभी लेट है। सो, अपनी बाल्टी वहीं रखकर नंबर लगा अंदर कमरे में आ गए।

“ऊहाँ तऽ तत्काल के टिकट जैसन लाइन लगल है।” कहकर चाचा बैड पर आकर बैठ गए और टंगी शर्ट की जेब से खैनी निकालकर रगड़ने लगे।

“अच्छा दस मिनट में हो जाएगा चचा, तब तक पेपर पढ़ लीजिए। आज गलती से हिंदी वाला अखबार भी दे दिया है, बढ़िए रहा।” मनोहर ने पेपर बढ़ाते हुए कहा। चाचा को पेपर दे खुद ‘द हिन्दू’ लेकर कुर्सी पर बैठ गया। मोबाइल में हल्की आवाज में अँग्रेजी गाना लगा दिया। मनोहर ने एक कलम उठा पेपर को अंडरलाइन करना शुरू किया। चाचा अपना अखबार रख एकटक मनोहर को अँग्रेजी अखबार में डूबकर पढ़ता देख रहे थे। चार-पाँच साल मुखर्जी नगर में तैयारी करने के बाद हिंदी माध्यम के विद्यार्थी को अँग्रेजी अखबार देखने का लहजा तो आ ही जाता है। मनोहर के अखबार देखने के हाव-भाव और कलम से किसी-किसी वाक्य को अंडरलाइन करने की कला को देख उसे कोई भी अँग्रेजी का प्योर विद्वान कह सकता था। मनोहर अखबार की तस्वीर देखते हुए आँखों को बड़ी कर किसी न्यूज पर ऐसा ठहरता और होंठ हिलाता मानो एक-एक शब्द वह अखबार लिखने वाले से ज्यादा समझ रहा हो।

मनोहर के चाचा उसके इस पाठन सौंदर्य पर मंत्रमुग्ध हुए जा रहे थे। भतीजा अँग्रेजी पढ़ रहा है, अँग्रेजी सुन रहा है, कोई मामूली बात थोड़े थी। सामान्य तौर पर हिंदी पट्टी के परिवार और समाज के लिए ‘अँग्रेजी’ वो पतित पावन धारा थी जो हर पाप धो देती थी। अगर अँग्रेजी जानते हैं तो फिर आपका सब अच्छा-बुरा इस आवरण में ढक सकता है। अँग्रेजी जानने वाला वहाँ सियारों के बीच लकड़बघ्घे की तरह होता है। गाँव से बाहर पढ़ने जाने वाले बच्चे की योग्यता भी बस इसी बात से मापी जाती थी कि इसने अँग्रेजी कितनी जानी। आईएएस की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के अभिभावकों को भी यह लालसा सदा बनी रहती थी कि बच्चा कलेक्टर बने पर अँग्रेजी में बोलेगा तो बढ़िया कलेक्टर बनेगा।

मनोहर वैसे ही अँग्रेजोफोबिया वाले हिंदी समाज से आया था जहाँ अँग्रेजी भाषा नहीं, बौद्धिकता और विद्वता का शिलाजीत था जिसने इसे पिया है वही बुद्धिमान है और विद्वान है। वह अँग्रेजी के इस संजीवन गुण को खूब जानता था इसलिए उसने भी चाचा के आते ही उन पर अँग्रेजी गैस का धुआँ छोड़ दिया था कि अगर कुछ ऊँच-नीच देख भी लें तो अँग्रेजी के नशे में बाबूजी को सुनाने के लिए कुछ याद न रहे। मनोहर ने इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर पूरा इंग्लिश-इंग्लिश माहौल बना रखा था कमरे में।

एक तो वह अपने चाचा के हर टॉपिक पर पूछे गए यक्ष प्रश्नों से परेशान था। वह सोच रहा था कि काश! इनकी किडनी की जगह इनका हार्ट खराब होता और सौभाग्य से फेल हो जाता तो कम-से-कम प्रश्नों के इस अतिरिक्त सलेबस से मुक्ति तो मिलती। हालाँकि, उसका अँग्रेजी बम काम कर गया था। अभी तक सवाल पर सवाल दागने वाले चाचा अब इस इंगलिशिया माहौल में चुपचाप खटिया पर बेंग की तरह बैठ गए। वे लगातार बस मनोहर को निहारे जा रहे थे। वे नहाना भूल गए। मनोहर को चाचा के मन:स्थिति का पूरा भान था। वह अब खेल पृष्ठ का पन्ना देख रहा था। आखिरी पन्ना बदलने के बाद अखबार को मेज पर रखा और चाचा की ओर पलटते हुए कहा, "चलिए चाचा, बाथरूम खाली हो गया होगा। आप नहा लीजिए।"

"हाँ, चलो। अच्छा इंगलिश तुम्हारा बहुत बढ़िया हो गया है। हाँ, यहाँ का पढ़ाई-लिखाई में तो होना ही है!" मनोहर अब समझ चुका था कि उसका इंगलिश इंद्रजाल कायम हो चुका है, अब चाचा थोड़े शांत रहेंगे।

चाचा नहाकर आए और अब बाहर घूमने की इच्छा व्यक्त की। मनोहर जानता था कि अभी तीन दिन उसे चैन नहीं मिलने वाला। उसने विस्तार से बताया कि दिन भर में उसे तीन क्लास के अलावा एक टेस्ट की स्पेशल क्लास भी लेनी पड़ती है लेकिन वे चिंता न करें, वह उनके लिए सारी कक्षाएँ छोड़ देगा। वह अपना कीमती समय तत्काल चाचा के लिए देगा। इस तरह उसने एक भारी-भरकम नैतिक बोझा चाचा के माथे पर रख दिया।

"ऐसा है मनोहर बाबू, तुम अपना समय खराब ना करो। कल एम्स जाना है भोरे-भोरे। आज तुम अपना क्लास कर लो, हम यहीं रहते हैं रूम पर। अपना पढ़ाई मत बर्बाद करो।" चाचा ने बाल झाड़ते हुए कहा।

मनोहर का हर दाँव सही बैठ रहा था। मनोहर ने तुरंत टिफिन वाले को फोन कर एक एक्स्ट्रा टिफिन लाने को कहा और एक कॉपी, दो किताब हाथ में लिए चाचा के पाँव छू क्लास को निकल लिया जो उसे दिन भर किसी मित्र के कमरे पर करनी थी। जाते-जाते उसने चाचा को ताला चाबी देते हुए समझा भी दिया कि अगर थोड़ा घूमने-फिरने का मन करे तो ताला लगा सड़क पर घूम आएँ। उसे आने में रात सात-आठ बज जाएँगे।

# 11.

दोपहर का समय था। गुरु कमरे पर लेटा हुआ था कि तभी बाहर उसने विमलेंदू की आवाज सुनी। उठकर दरवाजा खोला।

"आओ यार विमलेंदू, कैसे हो? अचानक अभी दोपहर में?" गुरु ने कुर्सी से तौलिया और अखबार हटाते हुए कहा।

"हाँ, गुरु भाई। इधर आया था एक लड़के से नोट्स लेने को। सोचा तुमसे मिलता चलूँ।" विमलेंदू ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

विमलेंदू यादव यूपी के बलिया का रहने वाला था। पिता किसान थे। वह पढ़ने में एक ठीक-ठाक छात्र था। हालाँकि, स्नातक उसने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी में ही किया था पर अपनी मेहनत और ईमानदारी से की गई रणनीतिक पढ़ाई की बदौलत उसने दो बार आईएएस की मुख्य परीक्षा दे दी थी और एक बार तो साक्षात्कार तक भी पहुँच चुका था। गुरु से उसकी खूब पटती थी सिवाय इस बात के कि वह शराब पीने का घोर विरोधी था। उसके एक चचेरे भाई की मौत शराब पीने की वजह से हो गई थी। उसने शराब के कारण अपने परिवार को बर्बाद होते देखा था। शराब और किसी भी तरह के नशे से वह कोसों दूर था। उसे सिर्फ एक बात का नशा था, वह अपने पिता के पसीने की भेजी कमाई को सफलता के अमृत में बदल देना चाहता था। शायद ही कोई पल आया हो जब उसकी नजर से संघर्ष करते और खेत में हल लेकर जाते उसके पिता की तस्वीर ओझल हुई हो। वह इस तस्वीर को बदल देना चाहता था।

गुरु ने चाय चढ़ा दी। विमलेंदू वहीं बैठा कुछ किताबें उठाकर पलटने लगा। तभी संतोष भी आ पहुँचा। अभी तक उसने कहीं कोचिंग के लिए एडमिशन भी नहीं लिया था। अभी कमरे पर ही NCERT की किताबें पढ़ रहा था। रायसाहब ने पेंसिल से अंडरलाइन कर नोट्स बनाने को समझाया था। संतोष अभी उसी योजना को पूरा करने में लगा हुआ था।

"चाय पिओगे?" संतोष के अंदर आते ही गुरु ने पूछा।

"हाँ पी लूँगा, थोड़ा दीजिएगा" संतोष ने कहा।

"अरे विमलेंदू, ये संतोष है। अभी-अभी कुछ दिन पहले आया है। कोचिंग लेना है इसे, कहाँ फँसा दिया जाय? कोई आइडिया दो।" गुरु ने हँसते हुए कहा।

"विषय क्या है इनका?"

"एक तो इतिहास है जो इसका पुश्तैनी है, ये लेकर आया है और एक इसे यहाँ हासिल करना है। हिंदी की वकालत रायसाहब करके गए हैं जबकि इसके एक परिचित समाजशास्त्र समझाए हैं।" गुरु ने स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा। विमलेंदू सारी बातों को सीधे तौर पर ले रहा था। उसका गुरु की शैली पर ध्यान नहीं जा रहा था। उसने संतोष

को कुछ संस्थानों के नाम बताए। कोचिंग से जुड़े कुछ और भी सुझाव देने लगा। तब तक गुरु ने चाय कप में डाल दी थी। अब कोचिंगों का चरित्र-चित्रण होने ही वाला था।

"वैसे कोचिंग का सलेक्शन में सीमित ही महत्व है। मैं तो कहता हूँ बिना कोचिंग किए भी तैयारी करके सफलता प्राप्त की जा सकती है।" विमलेंदू ने चाय सुड़कते हुए कहा।

"भाई विमलेंदू, जरा एक नए आए विद्यार्थी के नजरिये से सोचकर देखो। ये कैसे संभव है कि हम किसी को कोचिंग न लेने की सलाह दे दें। अरे यार, कोई आदमी हजार किलोमीटर अपने घर से दूर यहाँ दिल्ली आता है कि यहाँ रह के तैयारी करेगा, अच्छा मार्गदर्शन पाएगा, विषयों को पढ़ाने वाले विशेषज्ञों से पढ़ेगा, सफल लोगों का अनुभव लेगा, ऐसे में दिल्ली आया कैसे कोचिंग नहीं लेगा भई! उसके तो आने का प्रयोजन ही कोचिंग लेना था। भला एक कमरा लेने थोड़े आया है दिल्ली इतनी दूर!" गुरु ने कहा।

"पर ये तो मानना होगा कि यहाँ कुकुरमुत्तों की तरह उगे कोचिंग में क्वालिटी नहीं है। कुछ को छोड़कर बाकी खाली मायाजाल फैलाए हुए हैं गुरु।" विमलेंदू ने कहा।

"तुम्हारी बात एकदम सही है लेकिन ये सब तुमने कोचिंग लेने के बाद ही जाना न! तुमने कोचिंग करके ही जाना न कि यहाँ एडमिशन लेके पढ़ना बेवकूफी है! तुमने कुछ छलिए से पढ़ने के बाद ही जाना न कि कौन-सा टीचर यहाँ सच में बेहतर है! सो, जान लो विमलेंदू 'कोचिंग एक आवश्यक बुराई है' इससे कोई नहीं बच सकता। तुम्हारे मेरे जैसे विचार बनने में 5 साल लगे। दर-दर भटके। माथा धुने तब जा के आज समझे हो।" गुरु ने ठंढी हो चुकी चाय का कप उठाते हुए कहा।

"हाँ साला 2-3 साल तो ये समझने के लिए कोचिंग लेना होता है कि अब कौन-सी कोचिंग में एडमिशन लेना अच्छा होगा। जब तक ये समझ में आता है तब तक पैसा और समय दोनों खत्म हो चुका होता है।" विमलेंदू ने बड़ी कोफ्त के साथ कहा।

संतोष चाय का कप हाथ में लिए दोनों की बातें सुन रहा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर कोचिंग किस तरह का मायाजाल है। वह तो यह सोचकर आया था कि कोई एक-दो कोचिंग पकड़कर साल भर में अपनी नैया पार लगा लेगा। पर यहाँ इन दोनों की बातों ने तो उसके मन में कोचिंग को लेकर अजब-सा रेखाचित्र खींच दिया था। कभी-कभी उसे लग रहा था कि कहीं ये दोनों अपनी असफलता का फ्रस्ट्रैशन तो नहीं निकाल रहे। फिर सोचता कि नहीं यार, इन दोनों ने इंटरव्यू दिया है। भला इनके अनुभव को कैसे दरकिनार किया जाय! वह तो सोच रहा था कि वह भाग्यशाली है कि उसे शुरू में ही ऐसे लोग मिल गए हैं जो सालों-साल गँवाकर अच्छी कोचिंग का पता लगा चुके हैं। उसे बस नाम जानकर एडमिशन लेना था। लेकिन संतोष शायद इतना भी सही नहीं सोच रहा था।

"हमको क्या करना चाहिए, कोचिंग लें कि नहीं, और लेना हो तो कहाँ लें गुरु भाई?" संतोष ने पूछा।

"नहीं लें! अरे ई तो आज तक हुआ ही नहीं कि कोई मुखर्जी नगर आए और इतना भाग्यशाली हो कि बिना पैसा लुटाए, बिना कोचिंग में फँसे सलेक्ट होकर चला जाए। यहाँ एलियन भी आएगा न तो उसको भी पहले कोचिंग में एडमिशन लेना होगा। तऽ

बाद में कोई उसकी बात सुनेगा कि वो एलियन था।" गुरु ने हँसते हुए कहा।

"और हाँ जब वो बताएगा कि मैं तो एलियन हूँ, मैं कैसे पढ़ूँगा, मेरी फीस वापस कर दीजिए तो उसे भी ये कोचिंग वाले समझाते हैं कि अब आ गए हो तो क्लास कर लो, क्या पता सलेक्शन हो जाए। भइया हार-फार के एलियन भी बिना फीस वापस लिए अपने ग्रह जाता है यहाँ से।" विमलेंदू के कहते ही सब ठहाका लगाने लगे।

ठहाका थमने के बाद संतोष तो कोचिंग की कल्पना तक से सिहरने लगा था। बड़ी मुश्किल से एक बार कोचिंग का पैसा जुगाड़ करके पिताजी ने उसे भेजा था। एक बार पचास-साठ हजार की कोचिंग लेने के बाद उसे पता चले कि उसने गलत जगह कोचिंग ले ली तो फिर शायद ही कहीं और पढ़ पाएगा, यह सब उसके दिमाग में चल रहा था।

"घबराओ नहीं यार, सबके सब ठग ही नहीं है यहाँ, कई अच्छे टीचर हैं। विषय सोच लो और जा के एडमिशन ले लो जल्दी। पढ़ो जम के।" गुरु ने उसके धड़कते दिल को थामते हुए कहा।

"अच्छा मैं चलता हूँ अब, और हाँ, मेरा नंबर रख लो संतोष भाई, जरूरत हो तो फोन कर लेना।" विमलेंदू ने गुरु से विदा लिया।

संतोष का अभी तक विषय तय नहीं हुआ था। गुरु ने उसे जल्द सोचकर एडमिशन लेने की सलाह दी और सिगरेट जलाकर इंडिया ईयर बुक पलटने लगा। संतोष वापस अपने कमरे पर चला गया।

कमरे पर आने के बाद संतोष ने NCERT की इतिहास की किताब निकाली और पाँच मिनट कुर्सी पर बैठा। फिर बैड पर गया और किताब को छाती पर रख लेट गया। गुरु और विमलेंदू की बातें ठीक लगने पर भी उसका मन उसे मानने को तैयार नहीं था। उसने सोचा एक बार खुद जाकर जानकारी ले ले। दूसरों की बातों से निर्णय लेना ठीक नहीं। ये सब तो वर्षों से बैठकर पढ़ लिए हैं और तब जाकर कोचिंग को गरिया रहे हैं। हम तो अभी आए ही हैं। बेसिक की जानकारी के लिए कोई भी कोचिंग देख लेंगे बाकी तो आगे खुद की मेहनत ही काम आएगी। आखिर संतोष की सोच ठीक उसी रास्ते पर जा रही थी जैसा गुरु ने थोड़ी देर पहले बका था पर संतोष को इसका तनिक भी भान नहीं था। कुछ देर बाद संतोष ने सोचा क्यों न रायसाहब को बुलाकर कोचिंग देखी जाय। उनकी कुछ टीचर से अच्छी पहचान भी है, व्यवहार कुशल आदमी हैं, सो कुछ फीस में रियायत भी दिलवा देंगे। संतोष ने रायसाहब को फोन लगाया।

"रायसाहब, अरे सर हमारा एडमिशन तो करवा दीजिए।" संतोष ने कहा।

"ठीक है, ठीक है आज शाम सात बजे आइए आप बत्रा पर, हम देखते हैं आपका एडमिशन।" रायसाहब ने एकदम प्रोफेशनल अंदाज में कहा। तब चार बज रहे थे। संतोष कोचिंग की जानकारी के लिए छटपटा रहा था। उससे रहा नहीं गया। वह उसी समय बत्रा निकल गया।

# 12.

संतोष बत्रा पहुँच पहले बजरंग शुक्ला की चाय की दुकान पर गया। संतोष ने ज्यों ही शुक्ला जी से एक फुल चाय माँगी, शुक्ला जी समझ गए नया लड़का है। क्योंकि सामान्य तौर पर यहाँ पुराने लड़के हाफ कप वाली ही चाय लेते थे, इसका कारण आर्थिक ही न होकर कुछ और भी था क्योंकि चार घंटे की बकैती में एक-एक लड़के को कई बार अलग-अलग मेजबानों के पैसों से चाय पीनी पड़ती थी सो, हाफ-हाफ कप करके ही लेना पेट के लिए उचित था। शुक्ला जी ने बत्राखोरी के पीक टाइम में संतोष को अकेला देख, खौलती चाय में चम्मच घुमाते हुए उसकी तन्हाई तोड़ते हुए कहा, “नया आए हैं क्या तैयारी करने सर?”

“हाँ, अभी कुछ ही दिन हुआ है। एक दिन और हम आए थे आपके दुकान पर।” संतोष ने कहा।

“अच्छा, अच्छा लीजिए चाय।” शुक्ला जी ने चाय थमाते हुए कहा।

“शुक्ला जी, यहाँ तो आप बहुत दिन से हैं, यहाँ सामान्य अध्ययन का कोई बढ़िया कोचिंग बताइए।” संतोष ने एक जासूस की भाँति जानकारी लेने के लिहाज से पूछा।

“जी देखिए, यहाँ तो है कि ‘जाकि देखी पोस्टर जैसी, ऊहाँ एडमिशन लियो कराय’। अरे यहाँ रोज नया-नया सेंटर खुल रहा है, सब अच्छा ही है। पढ़ाने वाला कोनो बाहरी थोड़े है। अरे आपके हमरे जैसा ही है, जिसका नहीं हुआ कहीं नौकरी तो पढ़ाने लगा है। कोय-कोय दूसरा धंधा भी कर रहा है। जिससे जो सपरा वो कर रहा है। सो, कहीं भी लीजिए सब ठीके है। अब एक ठो का नाम क्या बतावें।” शुक्ला जी ने चाय छानते-छानते कह डाला।

संतोष का तो जैसे सर चकरा गया। यहाँ तो गुरु और विमलेंदु से भी खतरनाक अनुभव था शुक्ला चाय वाले का। संतोष अभी चाय पी ही रहा था कि शुक्ला जी ने फिर कहा, “वैसे आप एक बार यहीं बगल में है एक कोचिंग ‘नवरतन आईएएस’ वहाँ देख लीजिए। हम वहाँ चाय देते हैं, बढ़िया चलता है उसका। एक दो क्लास डेमो करके देख लीजिए।”

अक्सर मुखर्जी नगर में चाय वाले, किताब वाले, मोमोज वाले, जूस वाले से कई कोचिंग वाले संपर्क में होते थे जो उनके लिए कभी-कभी विद्यार्थियों को भेज दिया करते थे। बदले में उन्हें क्या मिलता था ये सब कोई नहीं जानता था। संतोष, शुक्ला जी के मुँह से डेमो क्लास जैसे टेक्निकल शब्द सुन इतना तो समझ गया कि आदमी जानकार है। संतोष वहीं चाय पीने लगा। आज पहली बार वह मुखर्जी नगर की महान ज्ञानमयी शाम को महसूस कर रहा था। आज उसे लग रहा था कि वह दुनिया के सबसे बौद्धिक अड्डों में से एक मुखर्जी नगर का अंग बन चुका है। बस किसी कोचिंग में एडमिशन होते ही वह भी इस विश्वव्यापी दुनिया का वैध नागरिक हो जाएगा। वह अपने बगल में खड़े एक

समूह की बातचीत सुनने लगा। वह भी कुछ सीखना चाहता था।

"ये मनमोहन सिंह का स्टैंड यार हमको तो एकदम अजब कनफ्यूजिंग लगता है। चाहे पाक वाला मैटर हो या संयुक्त राष्ट्र संघ में ईरान के मुद्दे पर..." एक लड़के ने चाय सुड़कते हुए कहा।

"बेटा चीन और अमेरिका का खेल समझो, हम तो वही देख रहे हैं, पहले थोड़ा डीपली समझो हू-जिन-ताओ और ओबामा के चाल को, दोनों अपना गोटी सेट कर रहा है।" दूसरे लड़के ने चश्मा पोंछते हुए कहा।

"हम तो समझ ही रहे हैं पर यार मनमोहन सिंह समझे तब न भाई! पता नहीं कैसे पीएम हो जाता है ई लोग!" तीसरे ने रजनीगंधा मुँह में डालते हुए कहा।

संतोष उनकी बातें सुन सोच में पड़ गया। कहाँ वह आज तक गाँव के ग्राम प्रधान की भी चाल समझ नहीं पाया था और यहाँ उसे ऐसे-ऐसे सूरमा चाय पीते दिखाई पड़ रहे थे जो हू-जिन-ताओ और ओबामा की हर भीतरी चाल तक पकड़कर बैठे थे। वह खुद को इस वैश्विक प्रतिभाओं के साथ खड़ा देख रोमांचित हो रहा था और मन-ही-मन धरती के इन लालों को सलाम कर रहा था। संतोष सोचने लगा, कहाँ भागलपुर- साइकिल से टुनटुन घंटी बजाकर गणित और अँग्रेजी ग्रामर का टयूशन पढ़ने को जाता हुआ शहर और कहाँ देश-दुनिया के मसलों को समेट चाय की दुकान पर लाकर उसका पोस्टमार्टम करता हुआ एक सपनों का नगर- मुखर्जी नगर।

इस नगर में केवल दो ही वर्ग मिलते थे। या तो सेलेक्टेड विद्वान या नॉन-सेलेक्टेड विद्वान, पर विद्वता और उसके आत्मविश्वास से परे यहाँ कुछ भी नहीं था। लिट्टी बेचने वाला भी अपने जमाने की पी.टी. का अनुभव सुनाता मिल जाता था यहाँ। संतोष वहीं खड़ा-खड़ा आस-पास की दीवारों, खंभों पर लटके कोचिंग के होर्डिंग्स देख रहा था। किस्म-किस्म के जादुई सफलता दिलाने का वादा करने वाले होर्डिंग्स से पूरा इलाका पटा पड़ा था। ऐसे अचूक दावों वाले विज्ञापन इससे पहले संतोष ने अलीगढ़ से गाजियाबाद के बीच रेल यात्रा के दौरान बड़े-बड़े अक्षरों में रेलवे ट्रैक के दोनों ओर की दीवारों पर ही लिखे देखे थे। बत्रा के इन विज्ञापनों में आईएएस बनाने का दावा गाजियाबाद और अलीगढ़ के वैद्यों से भी ज्यादा गारंटी वाला था। कुछ ने लिखा था, 'सफलता की गारंटी, तीन बार फेल एक बार आजमाएँ।' एक का विज्ञापन था, '100% सफलता पाएँ वर्ना पैसे वापस।' एक संस्थान का दावा था 'हमसे सस्ता कोई नहीं, जरूर पढ़े, आईएएस बनें।' संतोष सोच में पड़ गया था कि आखिर किसकी दवा खाए और कहाँ ऑपरेशन कराए। संतोष दस कदम चलकर एक होर्डिंग के नीचे रुककर रायसाहब का इंतजार करने लगा। उस होर्डिंग का विज्ञापन था, 'सबसे निराश, आइए हमारे पास, सब बार फेल अबकी बार पास, गारंटी आईएएस एक बार बनकर देखें।'

यह तो बात थी कोचिंग के विज्ञापनों की। दुनिया में एक साथ एक ही जगह पर सबसे ज्यादा वेरायटी के मानव मुखर्जी नगर में ही मिल सकते थे। कोई इतिहास का जानकार, तो कोई विश्व कूटनीति का खिलाड़ी, कोई अर्थशास्त्र का ज्ञाता तो कोई अरस्तु के जैसा चिंतक। ये सब आपको एक ही कैंपस में टहलते मिल जाते। यहाँ संसार के सबसे आशावादी लोग पाए जाते थे। बार-बार असफल होने के बाद भी एक-दूसरे का अगले एग्जाम के लिए हौसला बढ़ाते हुए यहाँ टिके रहना अपने आप में अद्भुत था।

'लगे रहिए, लगे रहिए हो जाएगा' यह यहाँ का सबसे लोकप्रिय नारा था। छोटे-छोटे कस्बों-गाँवों से आए छात्र अपने मिजाज में पूर्णत: वैश्विक थे। यहाँ पान की दुकान पर सिगरेट का धुआँ उड़ाकर लड़के उससे विश्व का मानचित्र बना देते थे। अमेरिका में ओबामा के राष्ट्रपति बनने पर यहाँ अपने पिता को बधाई देने वाले लोग केवल मुखर्जी नगर में ही पाए जा सकते थे। जैसे स्पेन में संवैधानिक सरकार बनने पर उसकी खुशी का भोज यहाँ कलकत्ता में राजा राममोहन राय ने दिया था। भारत में किसी भी परीक्षा के लिए इतना आकर्षण नहीं था और न ही इसकी तैयारी के लिए मुखर्जी नगर जैसा चुंबकत्व। डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टेड-एकाउंटेड, बैंक अधिकारी, वैज्ञानिक से लेकर इतिहास, राजनीति शास्त्र में शुद्ध स्नातक सब-के-सब अटे पड़े थे यहाँ आईएएस की तैयारी के लिए।

संतोष इसी आबोहवा का झोंका ले रहा था कि रायसाहब ने पीछे से पीठ पर हाथ धरा, "का देख रहे हैं, कुछ समझ में आया कि नहीं यहाँ का माहौल?" रायसाहब ने मुस्किया कर कहा।

"हाँ वही देख और समझ रहे थे खड़े-खड़े जरा।" संतोष ने भी मुस्कुराते हुए कहा।

"चलिए अब आपके लिए कोचिंग चलते हैं। अभी शाम का समय है, खाली ही होगा ऑफिस। आराम से बतिया लेंगे।" कहकर रायसाहब संतोष के साथ बत्रा सिनेमा के पीछे वाली गली की ओर निकले। कुछ दूर चलकर वे दोनों एक इमारत में दूसरी मंजिल पर 'लोकसेवक मेकर' नाम की कोचिंग के ऑफिस में पहुँच गए। रिसेप्शन पर एक पतली-दुबली-सी, बड़ी आँखों वाली, चेहरे पर निराभाव मुस्कान लिए दिखने में पढ़ी-लिखी युवती बैठी हुई थी। रायसाहब ने उसे देखते ही नमस्कार कहा। बदले में उसने एक मोहक मुस्कान के साथ हाय कहकर बैठने का इशारा किया। उसकी मुस्कान की गर्माहट से संतोष को लगा कि रायसाहब पहले से परिचित हैं। तभी उसने संतोष की तरफ देखते हुए भी लगभग उतनी ही ऊष्मा वाली मुस्कान बिखेरी।

"मैडम, ये मेरे मित्र हैं। इनको एडमिशन लेना था। बैच कब से है और जरा बताते फैकल्टी के बारे में?" रायसाहब ने लगातार चेहरे पर जीवंतता बनाए हुए कहा।

"ओके, फर्स्ट यू आर मोस्ट वेलकम। बिल्कुल हमारा बैच बस दो दिन बाद से स्टार्ट होगा। फॉर योर इनफार्मेशन कि आप आज ही एडमिशन लेते हैं तो दो हजार की छूट भी है। हमारी फैकल्टी यू नो कि बत्रा में सबसे बेस्ट है। बट आप सब्जेक्ट क्या चूज कर रहे हैं?"

"जी हम तो एक इतिहास सोचे हैं, दूसरा सब्जेक्ट को लेकर एकदम कनफ्यूज है। बहुत लोग से डिस्कशन किए पर समझ में नहीं आ रहा है।" संतोष ने एकदम कोमल स्वर में कहा।

"इफ यू डोंट माइंड तो मैं कुछ सजेस्ट करूँ?" लड़की ने हाथ को लगभग पी.सी. सरकार की तरह घुमाते हुए कहा।

"हें जी! बिलकुल माइंड का क्या बात है! एकदम कहिए न मैडम प्लीज।" रायसाहब ने कुर्सी दो इंच आगे खींचते हुए कहा। वे लगभग कुर्सी लेकर टेबल पर चढ़ चुकने जैसी स्थिति में थे। रायसाहब इतने जोश में थे कि अगर लड़की और उनके बीच मेज न होती

तो दृश्य कुछ भी हो सकता था, संतोष के होने के बावजूद भी।

"मैं सबको सजेस्ट नहीं करती, बट आपको पर्सनली बता रही हूँ कि आप हिस्ट्री तो बिल्कुल लो ही मत। एक तो सलेबस बड़ा है और काफी न अजीब-सा सब्जेक्ट है। आई मीन मुझे तो न हमेशा से कम नंबर आए हिस्ट्री में। मैं स्कूल में थी तब भी। बिलकुल ओपेनली आपसे पर्सनली टॉक कर रही हूँ। बट आपकी चॉइस है, मैं तो हिस्ट्री ना बोलूँगी।" लड़की ने अपने होंठों को साठ-पैंसठ डिग्री टेढ़ा-सीधा कर कहा।

"एकदम ठीक बात है। सिलेबस तो सच में बड़ा है और बताइए कि आप जैसी स्टूडेंट रह चुकी लड़की को कम नंबर आया स्कूल में मतलब है कि दिक्कत तो है हिस्ट्री में!" रायसाहब ने गर्दन जिराफ की तरह हिलाते हुए कहा। उसकी अदाओं की धुँध में वे भूल गए थे कि उनका खुद का एक विषय इतिहास था।

"सो मैं तो कहूँगी आप पब्लिक ऐड और सोशियोलॉजी का कॉम्बिनेशन ले लो। छोटा सलेबस है। औनली थ्री मंथ में कोर्स कम्पलीट हो जाएगा। आपके पास सब्जेक्ट को रिविजन करने का भी पूरा टाइम मिल जाएगा और ये पब्लिक ऐड तो आपको अभी से लेकर रिटायरमेंट तक काम आएगा। आपको आईएएस की ट्रेनिंग के दौरान भी बड़ा कम्फर्ट फील होगा।"

"हाँ, आप ठीक बोल रही हैं, और वैसे भी हमें सलेक्शन चाहिए, विषय कोई भी हो।" संतोष ने आँख मूँदकर सहमत होते हुए कहा।

"तो ओके, फस्ट आप ये फॉर्म फिल कर दो। देन फी जमा कर देना और कोई क्वेरी हो तो कहिए?" लड़की ने रजिस्टर निकालते हुए कहा।

"अच्छा आपका नाम क्या है?" रायसाहब ने चहकते हुए पूछा।

"मनमोहिनी वर्मा।" लड़की ने फिर उसी ऊष्म मुस्कुराहट के साथ बताया।

"वाह केतना सुंदर नाम है! एकदम व्यक्तित्व से मैच करता है। अच्छा आप कहाँ की हैं?" रायसाहब ने अपनी जिज्ञासा के पर खोलते हुए पूछा।

"कानपुर से हूँ मैं।" लड़की ने मोबाइल पर हाथ फेरते हुए बताया।

"क्या कानपुर! बताइए हम लोग घर जाते हैं न तो रास्ते में हर बार पड़ता है।" रायसाहब ने उछलते हुए कहा।

"आप कभी दी थीं कि नहीं मैडम यूपीएससी?" संतोष ने अपना मौलिक सवाल दागा।

"या! थ्री टाइम्स दिया। टू टाइम्स मेंस लिखा, बट मुझे लगा कि दिस इज नॉट माई फील्ड, मैं और कुछ करना चाहती थी। सो, अब तैयारी छोड़ दी है।"

"चलिए, अब आप हम जैसों को आईएएस बना रही हैं, ये ज्यादा बड़ा काम है।" संतोष ने हँसते हुए कहा।

"ओ इट्स माई प्लेजर कि आप लोग जल्दी सेलेक्ट हो जाइए। अपने पैरेंट्स का और हमारे कोचिंग 'लोकसेवक मेकर' का नाम रोशन करिए। मैं स्पेशली आप दोनों के लिए विश करूँगी।" मनमोहिनी ने अपनी अदा की जोरदार गदा चलाते हुए कहा। मनमोहिनी की विश उन दोनों को मिली आज तक की सबसे गर्म दुआ थी। दोनों

आत्मविश्वास से भर उठे।

"वैसे आप मुझे पहचान नहीं पाईं क्या मैडम, मैं तो वही देख रहा था इतने देर से? मेरा नाम कृपाशंकर राय है। जब आप 'सूरदास कोचिंग सेंटर' में थीं न तब मैं वहीं हिंदी साहित्य पढ़ रहा था।" रायसाहब ने अपना स्पेशल आत्मिक संबंध होने का दावा पेश करते हुए कहा।

"ओह यस, आई रीमेम्बर। आप तो हमेशा आते-जाते भी थे रिसेप्शन पर भी। हाँ हाँ ठीक कहा, आप तो रायसाहब हो ना?" मनमोहिनी ने कुर्सी को पीछे की ओर धकेलते हुए कहा।

"हाँ, अब आप पहचान गईं। अजी हमको तो जैसे पता चला कि आप अब इस कोचिंग में आ गई हैं, हम सोचे क्यों न यहीं कराया जाय अपने मित्र का एडमिशन। आलतू-फालतू जगह जाने का कोई मतलब नहीं है। यहाँ कम-से-कम आप गाइड तो करती रहेंगी!" रायसाहब एकदम स्फूर्ति भरे अंदाज में बोले।

"ओके तो फिर मैं लोक प्रशासन और सोशियोलोजी में कर दूँ ना एडमिट, ये फाइनल है न? और कुछ देखना तो नहीं है?" मनमोहिनी ने अपनी ओर से अंतिम सवाल किया।

"अरे फाइनल करिए मैडम, हम लोग आपका सब देख लिए, कोई दिक्कत नहीं है।" रायसाहब ने संतोष की तरफ से आँखों का इशारा पाते हुए कहा। संतोष तो जैसे उसकी हर बात पर बस हाँ हाँ बोलने के लिए ही बैठा था। संतोष पैसे लेकर ही गया था। तुरंत फॉर्म भर फीस की रकम जमा कर दी।

इतने दिनों से विषय के चयन को लेकर संतोष जितने लोगों से सुझाव लेने के बाद भी अनिर्णय की स्थिति में था उसे मनमोहिनी की मोहक मुस्कान ने केवल पंद्रह मिनट में हल कर दिया था। इंटरव्यू दिए गुरु और विमलेंदु या अपने मेंस लिखे संबंधी के सुझाव से परे संतोष ने रिसेप्शन पर बैठी बारहवीं पास मनमोहनी के सुझाव पर लोक प्रशासन और समाजशास्त्र का चयन कर लिया था, वह भी बिना शिक्षक का नाम पूछे। दोनों ने मिलकर सारी जानकारी टीचर की जगह मनमोहिनी के ही बारे में ली और एडमिशन फाइनल कर लिया। हालाँकि, अभी वे अपने निर्णय का इतना सूक्ष्म विश्लेषण करने की स्थिति में नहीं थे क्योंकि अभी उन पर मनमोहिनी की मोहक मुस्कान का जादू कायम था। एडमिशन के बाद दोनों वहीं बगल में मोमोज पॉइंट में कुछ खाने पहुँचे। यह एडमिशन की खुशी में लगभग एक मिनी पार्टी थी।

"मुझे तो ये लड़की काफी समझदार और इस फील्ड की अनुभवी लगी रायसाहब, मैंने इसलिए इसके बताए विषय ही रख लिए, ये कितना क्लियर और सुलझा हुआ सुझाव दे रही थी देखे! एक वो गुरु और विमलेंदु या हमरे रिलेशन वाले जो हैं, एकदम कनफ्यूज किए हुए थे। ओह भला हुआ जो मनमोहिनी के पास ले आए आप।" संतोष ने एडमिशन के बाद बड़े संतोष के साथ कहा।

"अरे संतोष भाई, बहुत जेनविन लड़की है। हम तो इसको बहुत साल से जानते हैं। एक बात बताए आपको हम, हमारा भी जो हिंदी में एडमिशन हुआ था न वो इसी के सजेशन पर लिए थे। नहीं तो हम तऽ भूगोल से पीजी थे महराज। लेकिन यही समझाई

तऽ आँख खुला और हिंदी ले लिए। तब ई 'सूरदास कोचिंग सेंटर' में काम करती थी। देखे नहीं बदवा में पहचान गई जब नाम बोले तो!" रायसाहब ने फुदकते हुए अपने विषय चयन के किस्से का रहस्योद्घाटन करते हुए कहा।

संतोष यह जानकर आश्चर्यचकित था कि रायसाहब जैसे मँझे हुए प्रतियोगी ने भी मनमोहिनी की सलाह पर विषय चुना था। उसे अब अपने निर्णय पर और ज्यादा खुशी हो रही थी।

अब संतोष एक संपूर्ण सिविल प्रतियोगी छात्र बन चुका था। वह अब पूरे मनोयोग से जुट जाना चाहता था तैयारी में। कमरा, किताब, कोचिंग और कोचिंग जाने का एक खूबसूरत बहाना, अब उसके पास सब था।

# 13.

“अरे कल से कहाँ हैं मनोहर लाल जी, फोनवो नहीं लग रहा था आपका, अजी संतोष जी का एडमिशन करवा दिए हैं, बधाई दे दीजिए और पार्टी का तय कर लीजिए” रायसाहब ने इस जोश के साथ बताया जैसे भारत को यू एन सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता दिला कर आ रहे हों।

“अरे हम तो अभी ईंहाँ साला लाल किला में हैं महराज, चचा को घुमाने लाए हैं। एम्स में किडनी दिखाए हैं अब अपने पूरा दिल्ली देखेंगे। साला बताइए ई सौंवा बार आ गए हम लाल किला, अभी हुमायूँ के कब्बर पर जाना है और गाँधी जी के भी। फिर कहे हैं कि कुतुबमीनार और इंडिया गेट दिखाओ। साला हम तऽ गाँव के लोग को दिल्ली पर्यटन कराने में ही आधा साल गँवा देते हैं। एकदम पूरा दिल्ली का जनरल नालेज पढ़कर आए हैं ई, एको गो चीज नय छोड़ रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे कम्बोडिया का सुल्तान आया है भारत भ्रमण पर। ऊपर से इनका प्रश्न तऽ आप जानबे करते हैं, एकदम पढ़ाई भी कल से छूटा हुआ है रायसाहब। अब ई चचा जाएँ तबे तऽ कुछ काम का बात हो, अच्छा सुनिए न ऊ पार्टी दो दिन बाद का रख लीजिए न, चचवा का परसों ट्रेन है, धरा देते हैं तब कपार फ्री होगा थोड़ा, हेडेक हो गया है साला” मनोहर ने एक साँस में अपनी पूरी वेदना कह डाली।

दिल्ली रहने वाले छात्र अपने गाँव-इलाके के लोगों के लिए एक गाइड की तरह थे। दिल्ली आए परिचितों को दिल्ली परिभ्रमण कराना उनके सामाजिक दायित्वों में था। एक ही जगह पर कई बार जाना और हर बार अलग-अलग लोगों के साथ नए जोश के साथ जाना निश्चित रूप से बड़ा कष्टकारी था। आपको ऐसा दिखाना होता था कि आप भी उनके साथ पहली बार ही उस स्थान पर आए हैं और आपको भी उनके जैसे ही उत्साह और रुचि के साथ चीजों को देखना होता था, नहीं तो साथ वाला बुरा भी मान सकता था। घूमने-फिरने के साथ ऐसे लोग चोर बाजार और पालिका बाजार में खरीदारी का भी अटल कार्यक्रम लेकर आते थे। ऐसे लोगों के साथ पीछे-पीछे दुकान-दर-दुकान घूमना जीवन के सबसे खराब क्षणों में से एक होता था किसी भी छात्र के लिए। चोर बाजार और पालिका बाजार दिल्ली से बाहर के बिहार यूपी के लोगों के लिए सबसे लोकप्रिय और जाना-पहचाना बाजार था। रायसाहब से बात कर मनोहर वापस लाल किला के मुख्य गेट पर खड़े अपने चाचा के पास पहुँचा।

“का हुआ, बहुत जल्दी में तो नहीं हो, किसका फोन था?” चाचा ने लाल किले में प्रवेश में हो रही देरी पर खीजते हुए कहा।

“नहीं कोय बात नहीं है, ऊ सर का फोन था कि इतना इम्पोर्टेंट टॉपिक चल रहा है और हम क्लास नहीं जा रहे हैं, तऽ हम बोल दिए कि सर कल भर छुट्टी दे दीजिए, हमारे चाचा आए हैं, हॉस्पिटल में हूँ।” मनोहर ने मन-ही मन कुढ़ते हुए कहा।

“ठीक है तऽ, अब चलोगे भीतरवा?” चाचा ने बढ़ते हुए कहा।

दो मिनट कतार में चलते हुए दोनों लाल किले के अंदर पहुँच गए। “भाई, बहुत पुराना है यार ई तो” चाचा ने किले के चारों ओर एक नजर घुमाते हुए कहा।

सुनते ही मनोहर ने मन में चिढ़ते हुए कहा, “हाँ चचा! आप तनी देर से आए, जिस साल हम आए थे शुरू-शुरू में तब एकदम नया था।” मनोहर ने चाचा की लगभग लेते हुए कहा।

“केतना साल पहले बे, कोनो आजे का बना है का, अच्छा छोड़ो, देखो ये यहीं से झंडवा फहराते हैं न मनमोहन सिंह?” चाचा ने उँगली से इशारा करते हुए कहा।

“हाँ, नेहरु जी भी यहीं से फहराए थे।” मनोहर ने मुँह बिचकाकर कहा।

चाचा लाल किले का एक-एक कोना घूम-घूमकर ऐसे देख रहे थे जैसे इसे खरीदने का बयाना करने आए हों। दीवारों को छूकर देख रहे थे, खंभों को उँगली से खोदकर लाल बलुआ पत्थर की क्वालिटी देख रहे थे। चूँकि उनका भी मोतिहारी में छड़-सीमेंट का धंधा था सो ये पुराने जमाने की प्लास्टर की भी विशेषता देखना चाह रहे थे। थोड़ी देर घूमने के बाद वे ठीक मुख्य बरामदे के पास जहाँ कभी मुगल बादशाह का तख्ते-ताउस रखा जाता था, वहाँ बैठ गए और ऊपरी जेब से खैनी की डिब्बी निकाली।

“चलो जरा यहाँ खैनी खा लें, यादे रहेगा कि लाल किला में बैठ के खैनी खाए थे कबो” चाचा ने चहुँकते हुए कहा।

“चाचा गार्ड देख लेगा तऽ मना करेगा, जहाँ तहाँ थूकिएगा तो जुर्माना लग जाएगा, बाहर खाइएगा चलिए न!” मनोहर ने टोकते हुए कहा।

“बेटा जब हम सातवीं में थे तब से खाते हैं, बाप तऽ मने नहीं कर सका, अब गार्ड करेगा हो? अरे कोय नहीं देखेगा, खाने दो, कहीं नहीं थूकेंगे” चाचा ने निश्चिंत करते हुए कहा।

फिर दोनों जाँघों के बीच हाथ को घुसेड़ इतनी सफाई के साथ खैनी बनाया और खा लिया कि एक झलक में तो मनोहर को भी पता नहीं चला। अक्सर ऐसे धुरंधर खैनीबाज इस तरह का हुनर खास तौर पर रखते हैं, क्योंकि माँ, बाप, चाचा, मामा से नजर बचाकर रोज खैनी खाने का अभ्यास उनको बचपन से होता है। उसमें भी मनोहर के चाचा तो सातवीं कक्षा से ही खैनी खाते थे, उनका एक लंबा अनुभव था। उन्होंने स्वाभ्यास से घंटों खैनी को बिना थूके होंठ में जमा कर दबाए रखने की क्षमता भी विकसित कर ली थी। ये सारी क्षमताएँ ऐसे स्मारकों, मंदिरों या समाधियों में घूमने-फिरने के दौरान खूब काम आती थीं, जैसे आज आई थी। मनोहर का इस तरह खैनी खाने से रोकना चाचा को थोड़ा खटक गया था। उनसे रहा नहीं गया सो उन्होंने खैनी की डिब्बी जेब में डालते हुए कहा “बेटा, खैनी रटाने, बनाने और खिलाने के बहाने ही तो रिश्ते बनते हैं, भला तुम्हारे शहर के आइसक्रीम में ये क्षमता कहाँ है!”

चाचा ने अनजाने में ही एक दार्शनिक वाले अंदाज में गजब की बात कह डाली थी। वास्तव में, खैनी में लोगों को जोड़ने की अद्भुत क्षमता होती है। एक अनजान व्यक्ति भी किसी अजनबी से बेहिचक खैनी माँग सकता था और दूसरा बड़े आत्मीयता से रगड़-रगड़ बना उसे खिलाता था। इस दौरान दो अजनबियों के बीच हुई बातचीत से वे अजनबी नहीं

रह जाते थे। गाँवों में तो खैनी और गाँजा को चौपालों को जोड़े रखने वाला फेविकोल ही जानिए।

चाचा ने फिर उचककर कहा “सुनो मनोहर एक बात कि हम कहीं खैनी खा के थूकेंगे नहीं, लेकिन अगर गलती से मानो थूक भी दिए तो दो सौ रुपये का जुर्माना देकर ही न जाएँगे, किसी के बाप का कुछ लेकर तो नहीं न जाएँगे।” खैनी की थूक पर रुपया न्योछावर करने का साहस कोई बिहारी ही कर सकता था।

“हो गया चाचा, अब छोड़िए भी, आप तऽ खैनी पुराण चालू कर दिए” मनोहर ने कहा।

लगभग दो घंटे तक लाल किले में बिताने के बाद अब उनका अगला पर्यटन स्थल था ‘राजघाट’। राजघाट का खुला वातावरण चाचा को बड़ा अच्छा लगा। अंदर गाँधीजी की समाधि पर पहुँच चाचा उसे बड़े ध्यान से देखने लगे। इधर-उधर देखा और मौका देख समाधि को छूकर प्रणाम किया। मोतिहारी से आए आदमी का गाँधी से एक विशेष लगाव बन जाना लाजिमी था, आखिर पहला सत्याग्रह चंपारण में ही तो किया था गाँधीजी ने। चाचा बड़े देर तक तीनकठिया नील किसान की भाँति एकटक समाधि को देखे जा रहे थे, मानो कह रहे हों ‘फेर चंपारण चलिएगा का बापू?’

मनोहर मन-ही-मन सोच रहा था कि अब जल्दी से चलें चाचा नय तऽ देख तो ऐसे रहे हैं जैसे समाधि कोड़ के अस्थिकलश मोतिहारी ले जाने का प्लान बना हो। राजघाट से निकलते ही चाचा ने अपने अर्जित इतिहास के ज्ञान का पिटारा खोला “आदमी बहुत फिट थे ये गाँधीजी, एतना कुछ किया देश के लिए बस एक ठो मिस्टेक कर दिया ई आदमी, पाकिस्तान बनवा दिए, यही एगो गलती कर दिए ई” चाचा ने गाँधीजी की ऐतिहासिक गलती के प्रति अपनी ताजी सहानुभूति के साथ कहा। मानो ऐसी ही रोज मिलने वाली सहानुभूति के तेल से राजघाट की समाधि का चिराग जला रहता था।

गाँधीजी के साथ यह अजीब विडंबना आज तक रही थी कि जिस देश ने इन्हें बापू कहा, उसी अपने देश ने इन्हें सबसे कम पढ़ा था। इनके बारे में सबसे कम जानना चाहा था। हैरी पॉटर और चेतन भगत को दिन-रात एक करके पढ़ने वाली पीढ़ी ने कभी गाँधीजी के लिए समय नहीं निकाला और गाँधीजी जैसे और भी कई व्यक्तित्वों के बारे में उनकी जानकारी केवल पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक-दूसरे से सुने किस्से-कहानियों के सहारे ही थी और उनकी सारी धारणाएँ भी इसी पर आधारित होती थीं। हिंदुस्तान में लगभग हर साक्षर, पढ़ा-लिखा टाइप आदमी गाँधीजी को पाकिस्तान के बनने का शाश्वत कारण मानता था, और यह फैंसी ऐतिहासिक ज्ञान खूब प्रचलन में था। यह अलग बात थी कि उनमें कुछ लोग मनोहर के चाचा की तरह सहानुभूति रखते थे और कुछ तो सीधे नफरत करते थे। इस देश ने जितना मार्क्स को पढ़ा, समझा और अपने में गूँथा-ठूँसा, उतना अगर गाँधीजी को पढ़ा-समझा होता तो शायद पीढ़ियों का सबक कुछ और होता।

मनोहर ने राजघाट से सटे शक्ति स्थल, किसान घाट, एकता स्थल, समता स्थल, वीर भूमि आदि के भी दर्शन चाचा को करा दिए। “चाचा अब जेतना कब्बर और समाधि था दिल्ली में, आप सब देख लिए, कुछु छूटा नहीं है, सोनिया जी, और वाजपेयी जी या मनमोहन जी तऽ अभी खैर ठीके हैं, दस पंद्रह साल में फेर कभी आइएगा तऽ घुमा देंगे” मनोहर ने हाँफते हुए कहा। साथ ही मनोहर ने मन-ही-मन पूरे प्रतिशोध के साथ सोचा

'और अगर ई बीच आपका किडनी फेल हो गया तऽ उपरे भेंट करिएगा छूटा-बचा से'।

"चलो अब साँझ हो जाएगा, डेरा चलते हैं, कल लोटस टेमपुल, इंडिया गेट आरू कुतुबमीनार बाकी रह गया है" चाचा ने अगले दिन के कार्यक्रम की घोषणा करते हुए कहा।

"चचा, अरे लोटस टेम्पल तो मेट्रो जब बन रहा था, तबे टूट गया, अब कहाँ है लोटस टेम्पल, वहाँ से मेट्रो का पुल बनाकर पार कर दिया न!" मनोहर ने कार्यक्रम को छोटा करने की उम्मीद से एक भयंकर झूठ बोला।

"हाय टूट गया, ई साला दिल्ली में रस्ता नय था क्या पुल बनाने का, अबे टेमपुल टूट गया, कोनो बवाल नहीं हुआ?" चाचा ने बड़ी हैरत से पूछा।

"बवाल काहे का, कोनो मंदिर या मस्जिद थोड़े टूटा था, ई टेम्पल फेम्पल में का बवाल होगा ई देश में" मनोहर ने व्यंग्य वाले लहजे में कहा।

"अरे भतीजा ठीक कह रहे हो लेकिन तुमको बताएँ, ऊ अपने गाँव के आगे रघुपुर से माधवपुर वाला रस्ता में जो बजरंगबली मोड़ पर एक छोटका हनुमानजी के मंदिरवा था न, उसका दीवार का कोई एक ठो ईंटा उखाड़ दिया था, अरे सोलह घंटा एनएच जाम कर दिए थे हम सब साला, पानी पिला दिए जी परशासन को हम लोग। बारह ट्रक एक के बाद एक फूँक दिए, लास्ट में डीएम साहब बोले कि यहाँ भव्य मंदिर बनेगा तब जा के जाम टूटा, अभी काम चल रहा है। बगल में अस्पताल बनने का भी प्रोजेक्ट आया था, पर उसका बाउण्ड्री मंदिर का दीवाल से सट रहा था, अब मंदिर के बगल में रोज आदमी मरेगा-जिएगा हॉस्पिटल में ई ठीक थोड़े रहेगा, उसका भी विरोध किए हम लोग, अस्पताल उठाकर दूसरे जिला में चल गया साला, धरम बचा हम लोग का" चाचा ने महान वृतांत सुनाया।

चाचा इतने में ही नहीं रुके, टेम्पल टूटा और बवाल न हुआ पर लगातार आश्चर्य करते हुए उन्होंने एक और किस्सा सुनाया "अच्छा और बताएँ, वो रहमतगंज गाँव में जो ठीक गाँव के घुसते ही मस्जिद है, वहाँ से सटकर गाँव में घुसने का पक्की सड़क वाला रस्ता बन रहा था। अब सड़क जा के मस्जिद के हाता से सट रहा था। कौन बर्दाश्त करेगा जी! आठ गाँव का मुसलमान घेर लिया सड़क के काम करने वाला कर्मचारी और इंजीनियर सब को, बुलडोजर में आग लगा दिया। आखिर काम रोकना पड़ा भाई। जनता के आगे आपको झुकना होगा। मस्जिद के बगल से सड़क ले जाइएगा तो विरोध त होवे करेगा! आज तक सड़क नहीं बना गाँव घुसने का, काम रुकले है, वही सड़कवा भेलवा गाँव में दे दिया पीडब्लूडी विभाग। सबको अपना धरम प्यारा होता है, ऊ बचेगा तबे ना आगे कुछ है, अरे मेट्रो चढ़ कर नरक जाएगा ई दिल्ली वाला देखना, टेमपुल तोड़ा है न!"

"हाँ आप ठीक बोल रहे हैं, एक-दो ठो मर्डर तो होना ही चाहिए था टेम्पल टूटने पर, का करिएगा, दिल्ली में सब मतलबी है, किसी को किसी से कुछ लेना-देना है नहीं, ऊपर से सब यहाँ अधर्मी टाइप है चचा" मनोहर ने चाचा को फुल सपोर्ट करते हुए कहा। साथ ही उसका कपार पीटने का मन कर रहा था।

मनोहर को लग रहा था कि बस यह दिन-दिन भर भूखे बउआने से जान छूटे। वह तो

कुतुबमीनार और इंडिया गेट भी तुड़वा देता पर सोचा कि इनकी तस्वीर हमेशा टीवी या अखबार में आती रहती है सो इतना बड़ा झूठ पच नहीं पाएगा, धरा ही जाएगा। वह तो मन में सोचने लगा कि 'भला हो अप्पूघर अब खतम हो गया नहीं तो एक दिन वहाँ भी झूला झूलने और तारामाची चढ़ने में लगा देते चचा।'

उस दिन दोनों कमरे पर वापस आ गए। दूसरे दिन निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार इंडिया गेट पर जाना हुआ। इंडिया गेट को देख चाचा को यह बड़ा रोचक लगा कि ये कैसा गेट है जिसमें आर-पार नहीं हो सकते।

"इसको यहाँ बनाने का का मतलब था ए मनोहर, हमको कुछ समझ नहीं आया" चाचा ने पुन: एक सवाल पूछा।

"चचा अब आप आज भर तो हैं दिल्ली में, काहे एतना चिंता और रिसर्च कर रहे हैं दिल्ली के बारे में, भाँड़ में जाने दीजिए न जिसको जो बनाना था, जहाँ बनाना था बना दिया, का मतलब इससे हम लोग को, अब आईएएस की तैयारी कर रहे हैं इसका मतलब थोड़े है कि हर चीज के बनाने तोड़ने का सब कारण पूछ के रखे हैं सरकार से!" मनोहर पूरी तरह झुँझलाहट से बोला।

"अरे ई सब जानना चाहिए, का पता कुछु पूछ दे इंटरव्यू में, ऐसे कैसे होगा तैयारी बेटा, तुरंत बौखला जाते हो!" चाचा ने नपे-तुले खीज से कहा।

"अच्छा आप ई बताइए ऊ गाँव में पंचायत भवन के सामने सरकार चबूतरा काहे बनवाया था?" मनोहर ने पूरे दिन में पहला सवाल पूछा।

"अरे लोग उठते-बैठते हैं, ताश-उश खेलते हैं, और काहे" चचा ने कहा।

"तो यहाँ भी क्या पहलवानी हो रहा है, लोग चारों तरफ उठता-बैठता है, घूमता है, बच्चा-बड़ा खेल कूद रहा है, इसलिए बनवा दिया इंडिया गेट, लौक नहीं रहा है!" मनोहर ने मौलिक कारण बताते हुए कहा।

"ओ हो, हाँ ई हुआ न एक ठो कारण, अच्छा ये जो चिराग है ई हरदम जलते रहता है का, बुतता नहीं है कबो?" पहले जवाब से संतुष्ट न होने के बाद भी दूसरा प्रश्न पूछ दिया चाचा ने।

"चचा ई हमनी के बड़का बाबु के दुआरी का लालटेन थोड़ी है जो रात आठ बजे ही भभक के बुत जाता है, अरे इसको जलाने के लिए यहाँ चौबीसों घंटा आदमी रहता है" मनोहर ने दाँत खटखटाते हुए कहा।

इंडिया गेट संबंधी जिज्ञासा को शांत कर वहाँ से मनोहर चाचा को लेकर कुतुबमीनार पहुँचा। इस बीच उसे यह भी डर लग रहा था कि कहीं चचवा किसी से लोटस टेम्पल के बारे में इन्क्वायरी न शुरू कर दे, इसलिए वह चाचा के साथ साये की तरह सटा रहा और उनके हर सवाल का जवाब दे उन्हें अपने साथ ही बातों में उलझाए रखा। यह अलग बात थी कि उनके हर सवाल में वह खुद उलझ जाता था। कुतुबमीनार पहुँच चाचा ने कुतुबमीनार की ऊँचाई और उसकी नींव की गहराई से संबंधित सवाल पूछे। वहाँ गड़े लौह स्तंभ के लोहे की क्वालिटी पर भी कुछ बातें की जो इनका छड़ बेचने का पुश्तैनी धंधा होने के कारण लाजिमी था। चाचा ने यह बताया कि ऐसा लोहा मिलना अब मुश्किल है, साथ यह भी बताया कि उनके सत्तर वर्ष पुराने पुश्तैनी मकान में इसी तरह

का लोहा इस्तेमाल हुआ था। अब उसी जगह मनोहर के पिता और चाचा ने वह घर तोड़ नया घर बना लिया था। बस वे यह नहीं बता पाए कि वे छड़ और लोहे अब किस संग्रहालय में गड़े या रखे हुए हैं।

लगभग संपूर्ण दिल्ली दर्शन के बाद वे पुन: शाम तक कमरे पर लौट आए। हालाँकि चाँदनी चौक न घूम पाने का मलाल चाचा जी के मन में रह ही गया था, पर यह संतोष था कि लाल किला जाने के दौरान एक झलक चाँदनी चौक की भी देख ली थी उन्होंने। वे जामा मस्जिद भी देखना चाहते थे पर मन की बात अब मनोहर से कहना उचित नहीं समझा। सोचा फिर कभी आऊँगा तो देखा जाएगा। इधर रात को खाना खाने के लिए मनोहर चाचा को बत्रा ले आया। मनोहर के मित्रों रायसाहब और संतोष के अलावा औरों ने भी चाचा से मिलने की इच्छा जताई थी। मनोहर ने सोचा सबको बुलाकर एक बार इस सुनामी के दर्शन करा ही दूँ। मनोहर के चाचा ज्यों ही बत्रा पहुँचे यहाँ के माहौल और भीड़-भड़क्का, आवाजाही देखकर उनके मुँह से निकला “बाप रे यहाँ तऽ मीनाबाजार जैसन माहौल है रे मनोहर, इहें तैयार होता है देश का आईएएस-आईपीएस, है न?, साला देख के तऽ एतना नय लगता है, पढ़ो बेटा मनोहर पढ़ो, ई शाम के घुम्मा-फेरी से नय होगा सलेक्शन”।

असल में ऐसा कहने के पीछे चाचा जी की कोई गलत मंशा नहीं थी। उन्होंने या उनके जैसे लाखों लोगों ने मुखर्जी नगर और आईएएस के लड़कों की तैयारी के माहौल को लेकर जो खाँटी गंभीर टाइप कल्पना कर रखी थी, उससे वास्तविक मुखर्जी नगर का चेहरा अलग था। यहाँ लोग शाम को घूमते-फिरते, हँसते-मिलते थे। रंग-बिरंगे कपड़े पहने थे, ठिठोली और बहस सब चल रहा था। जबकि मनोहर के चाचा जैसे लोगों की कल्पना थी कि ये कोई ऐसी जगह होगी जहाँ लड़के रात-दिन कमरे में बंद बस पढ़ते होंगे। हर आदमी गंभीर होगा। लोग केवल किताब खाते और स्याही पीते होंगे। उन्हें लगता था कि हर आदमी शंकराचार्य की तरह सर मुड़ाए होगा या रवींद्रनाथ टैगोर की तरह दाढ़ी बढ़ाए होगा। यहाँ के शिक्षक गुरु द्रोण की भांति तेज से भरे होंगे। हर छात्र एक अर्जुन होगा और सब मछली की आँख फोड़ने के प्रयास में लगे होंगे। कुछ ऐसी ही कल्पनाओं से भरा होता था यहाँ आने वाले हर अभिभावक का मन। पर यहाँ वास्तव में ऐसा तो था नहीं। हाँ, यहाँ कई अर्जुन अपनी-अपनी मछली के साथ बत्रा विहार करते भले दिख जा रहे थे। मनोहर ने तब तक फोन करके अपने मित्रों को बुला लिया।

“ये हैं हमारे चाचाजी” मनोहर ने सबसे परिचय कराते हुए कहा।

आते ही एक-एक कर सबने चाचा जी के पाँव छुए। एक साथ इतने लंबे-चौड़े, पढ़े-लिखे लड़कों से पाँव छुआने का चाचाजी के लिए यह पहला मौका था। इस वक्त उनका चेहरा गर्व से झिलमिल कर रहा था। मोतिहारी में दुकान पर रोज ग्राहकों से खिचखिच करने वाले, उधार के पैसों को लेकर गाली-गलौच सुनने वाले चाचाजी के लिए यह बड़ा सुखदायी और गौरवदायी क्षण था। वे सोच रहे थे कि इन्हीं में से कल को कोई आईएएस बन जाएगा, वाह! एक भविष्य का आईएएस पाँव छू रहा है। यद्यपि उन्होंने मनोहर के लिए ऐसा शायद ही कभी सोचा था, असल में वे उसके चाचा थे और भतीजे की प्रतिभा को लेकर निश्चिंत भी थे कि कुछ अप्रत्याशित नहीं होने वाला है। चाचाजी ने प्रफुल्लित मन से सबको एक-एक कर आशीर्वाद दिया और ध्यान से देखा। वे शायद

उनमें अपने भतीजे मनोहर से कुछ अलग ढूँढ रहे थे। रायसाहब ने एकदम तमीजदार अंदाज में कहा “अंकल चलें, चाय पी लें।”

“हाँ हाँ चलिए सब चाय पीजिए, चलिए न पहले कुछ समोसा-पकौड़ा खा लीजिए आप लोग” चाचा ने पूरे चचत्व भाव के साथ कहा। समोसा-पकौड़ा खिलाने की बात सुनते ही मनोहर ने सोचा, ‘चलो इनको ईश्वर ने सही समय पर सद्बुद्धि तो दे दी, वरना तीन दिन में दस रुपया का भूँजा तक न खाए, न साला हमको खिलाए ई, चलो शायद आज ही के लिए बचा के रखे थे खर्चवा’।

“हाँ हाँ चलिए संतोष, भरत, रायसाहब आइए आइए” मनोहर ने दुकान की ओर चलते हुए कहा।

दुकान पहुँच सब समोसा खाने लगे, इतने में भरत ने पॉकेट से सिगरेट निकाली और ‘एक्सक्यूज मी’ का मंत्र पढ़ सिगरेट जलाने लगा। एक जोरदार कश लेकर उसने सिगरेट मनोहर की तरफ बढ़ाई ही थी कि मनोहर कुछ पीछे हो लिया और मुँह घुमा पकौड़ी का आर्डर देने लगा। चाचा ने भरत को भर नजर देखा। भरत के लिए ये सब नार्मल था।

“आप सिगरेट पीते हैं?” चाचा ने यूँ ही पूछ लिया।

“या अंकल $10^{th}$ से पीता हूँ, एक्चुअली हमारे हॉस्टल में न सब पीते थे, हाँ बट स्मोकिंग हद से ज्यादा नहीं होनी चाहिए, मैं ड्रिंक भी करता हूँ न तो लिमिट में ही” भरत ने गोल-गोल छल्ला बनाते हुए कहा। चाचा को पहली बार सवाल से बड़ा जवाब मिला था। रायसाहब ने मामला भाँप लिया। संतोष तो समोसा बस गले में अटकाए खड़ा था और मनोहर पकौड़ा लेकर आ ही नहीं रहा था।

“असल में यहाँ लोग इतना मेंटल प्रेसर में होते हैं न दिन-रात पढ़ के, सो कभी-कभी ले लेते हैं कुछ लड़के, पर हाँ, सब नहीं करते हैं ऐसा, अब अपने मनोहर को ही ले लीजिए, छूना भी पाप समझता है” रायसाहब ने मामला रफू करते हुए कहा।

चाचाजी ने भी असहज होते हुए भी खुद को संभाला और चुपचाप ही रहे। इसके बाद मनोहर के मित्र चले गए। वे दोनों चाचा-भतीजा कमरे पर वापस आ गए। चाचाजी ने भरत उवाच पर कोई चर्चा नहीं की। मनोहर तो तब से लगातार चिंता और दहशत में था कि अब आगे बाबूजी को कुछ पता न चल जाए।

सुबह मनोहर और चाचा जी दोनों देर से उठे। दिल्ली दर्शन करने में काफी पैदल चल चुके थे कि थकान तो होनी ही थी। शाम को चाचाजी की ट्रेन थी। थोड़ा जल्दी ही निकल वे दोनों नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँच गए। ट्रेन प्लेटफॉर्म पर खड़ी हो गई। अब चाचा जी ने अपने मन का सारा गुबार निकालते हुए पूछा “तुमको भी बहुत मेंटल स्ट्रेस रहता है का बेटा?” सुनते ही मनोहर का सर चकरा गया कि ये कैसे हुआ, कहाँ चूक हो गई कि चाचा को सब पता चल गया। “बेटा तुम्हारा अँग्रेजी अखबार, अँग्रेजी गाना, अँग्रेजी गायिका तो ठीक है लेकिन थोड़ा ज्यादे अँग्रेजी नहीं हो गए हो, हम तुम्हारे कमरे पर बैड के नीचे अँग्रेजी बोतल भी देख लिए हैं, थोड़ा अँग्रेजी मीडियम कम ही रखो तुम, हिंदी ही ठीक है समझे, बहुत मेंटल स्ट्रेस है न तो घर वापस चल चलो बाप-चाचा का बिजनेस संभालो, बहुत पढ़ लिए तुम” चाचा ने एकबारगी सारा क्रोध उगल दिया था मनोहर पर।

“नहीं चाचा आपकी कसम कुछ नहीं पीते हैं हम” मनोहर ने एक निरीह खरगोश की भांति कहा।

“चुप बेहूदा, हमारा झूठा कसम खाता है, किडनी फेल करवाओगे का रे, और तुम्हरा जो सर्किल हम देखे हैं, बोलो ऊ चोट्टा लड़का फ्रेंच दाढ़ी वाला हमरे मुँह पर धुआँ उड़ा रहा था, संस्कार नाम का चीज नहीं है, बड़ो के आगे सिगरेट पी रहा था” चाचा ने आग-बबूला होते हुए कहा।

“चाचाजी वो उसका ऐसा ही है कल्चर, हमको तो माफ कर दीजिए ना, हम अब गलती नहीं करेंगे” मनोहर ने आँखों में पानी की कुछ बूँदें लाते हुए कहा।

चाचाजी अपनी दिए जा रहे थे। “वो कौन था एक बुजुर्ग-सा आदमी” चाचा ने किसी के बारे में पूछा।

“जी वो रायसाहब थे” मनोहर ने कहा।

“कहाँ का साहब है?” चाचा ने थोड़ा डाउन होकर कहा।

“जी, वो हम लोग प्यार से रायसाहब कहते हैं, वो भी साथ में तैयारी कर रहे हैं”। मनोहर ने चाचा को भ्रम से निकालते हुए कहा।

“क्या इतना उम्र का आदमी भी तैयारी करता है? धन्य है ई जगह हो बाबू” चाचा ने सर ऊपर कर कहा। ट्रेन खुलने को हुई। तब तक मनोहर ने सीधे चाचा के पाँव पकड़ लिए और बाबूजी से कुछ नहीं कहने को कहा। चाचा आखिर चाचा ही तो थे। दिल पसीज गया। मनोहर को ऊपर उठाते हुए कहा “ठीक है सुधर जाओ, हम कुछ नहीं बताएँगे, और सुनो हमारा रिपोर्ट दिखाकर, दवा खरीदकर टाइम पर कुरियर कर देना समझे” चाचा ने मौके पर चौका मारते हुए कहा।

मनोहर ने आँसू पोंछते हुए हाँ कहा और ट्रेन खुल गई। चाचा दौड़कर ट्रेन पर चढ़े और एक बार हाथ हिलाया। मनोहर को चैन आया। स्टेशन से निकलते समय वह यही सोच रहा था कि जाते-जाते भी कपार पर एक हेडेक दे गए चचा, चचा हैं कि कसाई?

# 14.

आज संतोष की कोचिंग की क्लास का पहला दिन था। आज उसने अपने सपनों के सफर में पहला औपचारिक कदम बढ़ा दिया था। गुरुवार का दिन था। सफेद पैंट पर उसने पीली शर्ट पहनी। पीली शर्ट पर सफेद फब नहीं रहा था, उसका मन था कि काला पहने तो सूट करेगा पर आज पहले दिन वो काला पहन कर नहीं जाना चाहता था। काला शुभ नहीं होता न! पूजा-पाठ के साथ शिव और हनुमान चालीसा का पाठ कर नयी कॉपी पर अबीर से स्वास्तिक का चिह्न बनाया। माथे पर तिलक किया। पहले पन्ने पर ऊपर जय माँ सरस्वती का शॉर्ट फॉर्म 'jms' लिखा। दही-चीनी खाया और निकल गया अपनी पहली क्लास के लिए। क्लास जाने से पहले उसने सारे संभव धार्मिक क्रियाकलाप बड़े पवित्र मन के साथ किए। पूजा और ध्यान का जो अधिकतम परफॉर्मेंस दिया जा सकता था, वह उसने दिया। उसकी खुद की धार्मिक साज-सज्जा देखकर ऐसा लग रहा था कि बस उसके कानों में अगरबत्ती खोंस दी जाती तो वो खुद चलता-फिरता जगन्नाथपुरी का रथ लगता।

कोचिंग पहुँचते ही उसने प्रवेश द्वार को नीचे झुक हाथ से छूकर प्रणाम किया और सबसे पहले बाईं ओर बने ऑफिस में गया जहाँ मनमोहिनी किसी और एक लड़के को लोक प्रशासन और समाजशास्त्र का कॉम्बिनेशन दिलवा रही थी। संतोष ने ऑफिस के दरवाजे से ही एक गर्म जलेबी टाइप मुस्कान के साथ मनमोहिनी को नमस्कार किया। उधर से मनमोहिनी ने भी सुषुम रबड़ी वाली मुस्कान के साथ 'मोस्ट वेलकम संतोष जी' बोल अभिवादन किया और फिर एक क्षण रुककर कहा, "ओके, आप क्लास में चलिए। सर बस आने ही वाले होंगे। गुडलक संतोष जी।" संतोष ने वहीं खड़े-खड़े थैंक्स कहा और क्लास की तरफ मुड़ गया।

पहली क्लास समाजशास्त्र की थी। कक्षा में दस मिनट के इंतजार के बाद एक नहाए-धोआए स्मार्ट से आदमी का प्रवेश हुआ। ये 'दुखमोचन मंडल सर' थे, समाजशास्त्र के शिक्षक। बच्चों ने खड़े होकर अभिवादन किया। यह देख संतोष को बड़ा अच्छा लगा कि यहाँ इतने बड़े लेवल की पढ़ाई में भी स्कूली शिष्टाचार वाले संस्कार कायम हैं। वह तो इतने जोश और ऊर्जा से भरा था कि सर के अभिवादन में बेंच पर खड़ा हो जाता पर पहले दिन के लोक-लाज से नॉर्मल रहा।

"चलिए स्वागत है आप सबका, सबने फीस जमा कर दी है क्या?" सर का पहला वाक्य था कक्षा में।

"जी सर। जी मेरा हाफ। जी कर देंगे सर।" मिली-जुली कई आवाजें आईं।

"अच्छा, अच्छा चलिए बताइए, आप में से कितने लोगों ने पूरी फीस जमा कर दी है? हाथ उठाइए।" सर का दूसरा वाक्य था आज की कक्षा में। संतोष ने झट अपना हाथ हवा में लहराया, अगल-बगल देखा तो कोई हाथ नहीं उठा था, पीछे मुड़कर देखा तो तीन

लड़के और एक लड़की ने हाथ उठाया था।

"चलिए, अब आधे फीस वाले।" सर का यह कक्षा में तीसरा वाक्य था। इस बार हाथ पहले से ज्यादा उठे।

"चलिए डेमो क्लास वाले, जो फीस बाद में जमा करेंगे, वैसे कितने?" कक्षा में सर का यह चौथा वाक्य था। इस बार बाकी के सभी ने हाथ उठा दिए थे।

कक्षा में आते ही दुखमोचन सर ने जो चार वाक्य कहे वो महात्मा बुद्ध के चार आर्य सत्य की तरह थे जिसके सहारे दुखमोचन सर ने पहली कक्षा के वास्तविक सत्य का पता लगाया।

संतोष पहले बेंच पर बैठा था। पूरी फीस जमा करने के बाद पहली बेंच पर बैठना बनता भी था। दुखमोचन सर की नजर संतोष से मिली, दोनों मुस्कुराए। संतोष को एकदम से लगा कि पहले ही दिन के केवल पाँचवें मिनट में वह सीधे शिक्षक की नजर में आ गया। वैसे भी पूरी रकम जमा करने वाले चार-पाँच ही लोग थे सो, उनका शिक्षक की नजर में आ जाना तो स्वाभाविक ही था।

"आप लोग सोच रहे होंगे कि कैसे सर हैं, क्लास में आते ही सबसे पहले पैसे-फीस की बात कर रहे हैं, है न! कितने लोग हैं जो ऐसा नहीं सोचते हैं?" दुखमोचन सर ने फिर हाथ उठावन प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए कहा। ज्यादातर लोगों ने हाथ उठा दिया था पर कुछ ऐसे भी बैठे थे जो सच में ऐसा सोच रहे थे और हाथ न उठाकर उन्होंने यह जता भी दिया था।

"देखिए, कुछ लोगों को सच में ऐसा लग रहा है। वैसे ज्यादा को ऐसा नहीं लग रहा है। देखिए, असल में हम आज से समाजशास्त्र पढ़ने जा रहे हैं और मैं आपको ये दिखाना चाहता था एक दुनिया, एक देश से लेकर एक छोटी-सी कक्षा तक में लोग बँटे हुए हैं कई आधारों पर, अलग-अलग समाज है। कोई आर्थिक आधार पर बँटा है तो कोई सोच के आधार पर बँटा है। हमें समाजशास्त्र में इसी का तो अध्ययन करना है, यही तो पड़ताल करना है।" दुखमोचन सर ने समाजशास्त्र के कोर्स का फीता काटते हुए अपना प्रवचन प्रारंभ कर दिया था। कक्षा में बैठे छात्र अपने शिक्षक के समाजशास्त्र का अर्थ समझाने की इस चमत्कारिक कला से अचंभित थे। वाह! क्या सर हैं! इतने कठिन तथ्य को इतना सरल कर, इतनी सहजता से समझा दिया। यह होता है कॉलेज और आईएएस के लिए पढ़ाने वाले शिक्षक का अंतर। दुखमोचन सर ने तो कमाल कर दिया था। लड़के-लड़कियाँ आपस में फुसफुसाने लगे कि कितना व्यवहारिक तरीका है इनका पढ़ाने का। अपने से जुड़ी चीजों से ही तथ्य को समझा देते हैं, यही मौलिकता तो किसी शिक्षक को खास बनाती है।

दुखमोचन सर का जादू चल गया था। संतोष ने दुखमोचन सर के कहे एक-एक वाक्य को अपनी नयी स्वास्तिक बनी हुई कॉपी में उतार लिया था। नए-नए छात्र बोर्ड पर शिक्षक के द्वारा खींची गई आड़ी-तिरछी रेखाओं को भी कॉपी में हू-ब-हू उतार लेते हैं कि कहीं इनका भी कोई सार्थक अर्थ न हो और उनसे ये छूट न जाएँ। आगे दुखमोचन सर ने समाजशास्त्र के सलेबस पर चर्चा की। उसे पूरा करने में लगने वाले समय पर चर्चा की और इस तरह पहले दिन की क्लास पूरी हुई। बाहर निकलते ही संतोष पुन: मनमोहिनी के

पास पहुँचा, वह अभी मोबाइल पर गर्दन गाड़े एंग्री बर्ड खेल रही थी।

"ओहो सॉरी मैडम, बिजी हैं क्या?" संतोष ने पहुँचते ही पूछा।

"नहीं-नहीं आ जाइए, बताइए कैसी लगी क्लास?" मनमोहिनी ने सिर उठाकर कहा।

"जी वही तो बताने आया था, बहुत पसंद आया। सर बहुत मौलिक तरीका से पढ़ाते हैं। समाजशास्त्र तो हमारे लिए इतना नया विषय है लेकिन एक ही मिनट में ऐसा समझा दिए कि अब लग रहा है कोनो दिक्कत ही नहीं होगा पढ़ने और समझने में। और बाकी आप तो हैं ही न, कोई प्रॉब्लम हुआ तो आपको बताएँगे ही!" संतोष ने एकदम प्रसन्न भाव से कहा।

संतोष वहाँ से निकलकर सड़क पर आया ही था कि बजरंग शुक्ला की दुकान पर उसे मनोहर, गुरु, भरत और रायसाहब दिख गए। वहाँ पहुँच उसने सबसे हाथ मिलाया पर वहाँ पहले से कुछ गर्मागर्म बहस चल रही थी।

"ये क्या चूतियागिरी कर दिए थे आप भरत जी, क्या तरीका है ये? आप मेरे चाचा के सामने ही सिगरेट, दारू, लंद-फंद शुरू कर दिए!" मनोहर झल्लाए स्वर में बोल रहा था।

"इट्स माई नार्मल बिहेवियर मनोहर, इट्स माई लिविंग स्टाइल। मैं हिंदी मीडियम के लौंडों की तरह छुप कर सिगरेट-दारू नहीं पीता और न ही पब्लिक में आइडियल पर्सन बनकर घूमता हूँ। वी आर फ्रैंक। हम इंग्लिश मीडियम वाले कुछ छुपाते नहीं। खुद को एक्सपोज करते हैं। आपको बुरा लगा तो सॉरी, बट मैं राइट हूँ, ये मैं जानता हूँ।" भरत ने हाथ और कंधे बगुले की भाँति उचकाते हुए कहा।

भरत ने ऐसा बोलकर हिंदी और अँग्रेजी माध्यम के बीच एक सांस्कृतिक रेखा खींच दी थी। संतोष सोचने लगा कि क्या पढ़ाई का मीडियम भी किसी को सांस्कृतिक रूप से ऊपर या नीचे कर देता है। भरत के पिता बिहार के आरा में बिजली विभाग में इंजीनियर थे और भरत आरा में ही पढ़ा-लिखा था सो, उसके मुँह से हिंदी माध्यम की संस्कृति को लेकर यह हीनता का भाव और अँग्रेजी को लेकर इतनी कुलीनता का भाव किसी को हजम नहीं हो पा रहा था। मनोहर यह भी जान गया था कि भरत ने अपनी स्नातक तक की पढ़ाई हिंदी माध्यम में ही की थी और दिल्ली आकर अँग्रेजी माध्यम रख लिया था, जबकि अँग्रेजी में वह अभी उतना सहज कतई नहीं था।

मनोहर की आँखें क्रोध से लाल हो गई थीं। सवाल अब उसके सिर्फ इस डर का नहीं था कि चाचा उसके बाबूजी को कुछ बता देंगे बल्कि अब तो उसे अपनी पूरी पृष्ठभूमि और संस्कृति के पिछड़ेपन का हिसाब करने का मन हो रहा था भरत से। मनोहर ने भरत की बातों को दो संस्कृतियों के टकराव का मुद्दा समझ लिया था। संतोष भी मनोहर की तरफ झुका हुआ प्रतीत हो रहा था और रायसाहब तो बेचारे दो संस्कृतियों के बीच में खड़े थे क्योंकि वे हाल ही से भरत से अँग्रेजी ग्रामर और ट्रांसलेशन सीख रहे थे।

"साला हम लोग क्या गिरमिटिया मजदूर हैं बे, केतना हाई लेवल कल्चर है आपका भरत कुमार जी! आप राजा गोलीसिंह हाईस्कूल से ही पढ़कर आए हैं आरा जिला से। बी.ए. तो डुमराव कालेज से किए आप। ये लंदन और न्यूयार्क वाला कल्चर कब सीख

लिए आप! साला इंगलिश में परीक्षा लिखते हैं तो इसका का मतलब है कि मीडियम के नाम पर पेट्रोल मूतिएगा?" मनोहर ने मुट्ठी भींचते हुए कहा।

"मैं हिंदी मीडियम वालों से बहस नहीं करता। मैं आप सबका लेवल जानता हूँ। एक अच्छी किताब तक तो है नहीं किसी विषय पर हिंदी मीडियम में!" भरत ने मुँह बनाते हुए कहा।

"हाँ ये तो है, मैटेरियल का तो कमी है हिंदी माध्यम में।" रायसाहब ने मौका देखते ही भरत का हल्का-सा पक्ष लेते हुए कहा।

"अच्छा हमको तो चालीस किताब खरीदवा दिए आप रायसाहब, बिना मैटेरियल के ही इतना खरीदवा दिए थे क्या? और कमी नहीं होता तो एक ट्रक किताब खरीदवा देते क्या आप? अँग्रेजी मीडियम वाला मैटेरियल ट्रैक्टर भरकर खरीदता है क्या?" संतोष ने पहली बार तल्खी से बोला।

रायसाहब किसी नए छात्र के पहले क्लास के जोश से परिचित थे सो उन्होंने संतोष की बातों का कोई जवाब न देना ही अपने हित में समझा। वे मुँह घुमाकर सड़क की ओर देखने लगे। अब तक गुरु साइड में खड़ा हो चाय पी रहा था और पूरी बहस को दो मित्रों की हल्की-फुल्की उठा-पटक के रूप में ले रहा था पर अभी-अभी भरत की कही हिंदी माध्यम के लेवल की बात ने एक पूरी जमात को इस बहस में कूदने का नेवता दे दिया था। गुरु के अंदर का भी महागुरु जग गया। उसे हिंदी और अँग्रेजी माध्यम की नहीं बल्कि भरत के मन में घर कर गए बेवजह की एक सांस्कृतिक बढ़त वाली भ्रामक भावना की बात बहुत खटकी थी। गुरु चाय का ग्लास रख उन सबके करीब आया।

"भरत जी, सारी बात मैंने भी सुनी आप लोगों की लेकिन ये बताइए कि आपने खड़े-खड़े हिंदी माध्यम में पढ़ने वालों का लेवल कैसे माप लिया यहाँ? किसी भी चीज के बारे में जानना, समझना, उस पर सोचना ज्ञान है कि उसे हिंदी या अँग्रेजी के माध्यम से जानना समझना ज्ञान है! भाई साहब! एक भाषा आपके द्वारा जाने और समझे गए बातों या ज्ञान को संप्रेषित करने, व्यक्त करने का माध्यम भर ही तो है ना! या अँग्रेजी में बोलना-लिखना ही ज्ञान है क्या? अगर ऐसा होता तो अमेरिका और इंग्लैंड में तो स्कूल ही नहीं होना चाहिए था, वहाँ तो बच्चे बचपन से ही अँग्रेजी बोलते हैं। इंग्लैंड में बर्गर बेचने वाले को यहाँ आईएएस बना देना था क्योंकि वो तो अँग्रेजी बोलता है। भरत कुमार जी अँग्रेजी दुनिया की एक कामगार भाषा है, इसे सीखना चाहिए इससे हमें कोई एतराज नहीं पर अँग्रेजी ही जीवन का आधार और सबसे कामगार है, ये हजम नहीं होगा सुन के। भाषा संवाद का माध्यम भर है, उसे वही रहने दीजिए।" गुरु ने सिगरेट जलाकर कहा।

"मैं बात भाषा की नहीं हिंदी माध्यम के कल्चर और उनके ज्ञान के लेवल की ही कर रहा हूँ, मुझे कुछ नहीं दिखता।" अब तक भरत ने भी एक सिगरेट दिलका ली थी।

"वाह वाह! ये जो हिंदी माध्यम वालों के सलेक्शन के पोस्टर और होर्डिंग्स से पूरा बाजार और दीवार भरा पड़ा है वो नहीं दिखा आपको, खैर इसको छोड़िए, आप कल्चर की बात करिए, ये बताइए कि आप हिंदी और इंग्लिश को कब से दो कल्चर का प्रतिनिधि बना दिए! आप तो अँग्रेजी माध्यम वाले हैं न, आप में ऐसा क्या खास है जो आरा या

बिहार के कल्चर से एकदम अलग है! क्या सतुआ नहीं पीते हैं आप, ठेकुआ नहीं खाते हैं आप, बोरसी नहीं तापते हैं आप, आपके दादा धोती नहीं पहनते हैं क्या, पिताजी सरसों तेल नहीं मलते हैं क्या देह में, आपकी माँ आपके लिए ज्युतिया का व्रत नहीं रखती क्या, आपकी नानी या दादी छठ नहीं करती क्या, भोजपुरी नहीं बोलते या समझते क्या आप, तो फिर किस कल्चर की बात करते हैं आप, अरे अपने ही कल्चर पर अँग्रेजी में चार किताब पढ़ के उसी कल्चर को भूल गए आप! इस देश का एक ही कल्चर है जो पाँच हजार साल की सभ्यता के निचोड़ के बाद पाया है हमने, समझे आप। गंगा-जमुनी संस्कृति, राम-रहीम संस्कृति, ईश्वर-अल्लाह संस्कृति, खीर-सेवईं संस्कृति, यही सब है हमारी संस्कृति। ये इस देश के हिंदी और अँग्रेजी दोनों बोलने वालों की यही एक संस्कृति है।" गुरु के कहते-कहते आधी सिगरेट जल चुकी थी।

"अब लेवल तो देख ही लिए न हिंदी माध्यम का भरत जी?" मनोहर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

"पर आप लोग दब्बू हैं। आप लोग छुपकर पीते हैं। बाहरी आदर्श बनाए रखते हैं। खुद को सामने लाने का साहस तो दिखाइए। जो करते हैं वो स्वीकार करिए।" भरत ने हार न मानने वाली जिद के साथ कहा।

गुरु अबकी तमतमा गया था। उसके दाँत एक-दूसरे को रगड़ रहे थे। चेहरा लाल हो गया था। उसकी दो उँगलियों में अटकी सिगरेट पूरी तरह जल चुकी थी। उसने झट दूसरी सिगरेट निकाली और फिर शुरू हो गया।

"हट साला छुपकर पीते हैं। पीते हैं। पीते हैं। ले दे के एक ही बात कि ये खुल कर पीते हैं, खुल कर पीते हैं। अरे आप क्या रोज फोन पर बाबूजी को हिसाब देते हैं क्या कि आज कितनी बोतलें गटकी और कितना डिब्बा धुआँ किया। ये दारू पीना और सिगरेट उड़ाना कब से प्रगतिशीलता का पैमाना बन गया मेरे भाई और इसका खुलकर पीना साहस हो गया? अरे ई बताइए, यहाँ कौन नहीं जानता कि गुरु रोज चार बोतल बीयर गटकता है। अब ये बात किस कल्चर के बाप को बताना जरूरी है कि उसका एक बेरोजगार बेटा जो छः साल से दिल्ली में तैयारी कर रहा है वो उन्हीं के पैसे से बीयर पीता है और प्रगतिशील बन गया। ये छुपाना अगर डर है और दब्बुपना है तो हाँ हम दब्बू हैं। और ये जो आपका दारू और सिगरेट का खुलेआम पीना है न ये कोई साहस नहीं बल्कि इसे उन्माद कहते हैं। आपको बताऊँ हम में क्या साहस है? हम में साहस है बालश्रम के विरुद्ध बोलने का। हम में साहस है दहेज प्रथा का विरोध करने का। हम में साहस है नारी मुक्ति के आंदोलन करने का। हम में साहस है धर्म पर सवाल पूछने का। हम में साहस है बाल विवाह रोक देने का। हम में साहस है सरकार की गलत नीतियों के विरुद्ध सड़क पर उतर जाने का। हम में साहस है दबे-कुचलों की हक की लड़ाई में उनके साथ खड़े हो जाने का। हाँ, हममें ये साहस है। साहस इसे कहते हैं। जाओ हम में साहस नहीं है किसी के चाचा के सामने सिगरेट पी के खुद के कल्चर को दिखाने का, अपना बोल्डनेस दिखाने का भरत कुमार जी।" गुरु एकदम आग के गोले की तरह तप रहा था अपनी बात पूरी करने के बाद।

"हो गया थोड़ा कनफ्यूजन गुरु भाई, अब रहने दीजिए। बात तो आपका सब सही है, भरत जी को मनोहर जी एकदम डाइरेक्ट बोल दिए इसलिए थोड़ा बुरा लग गया नहीं

तो मीडियम का बात थोड़े है कुछ।" रायसाहब ने थोड़ा बीच-बचाव वाले भाव में कहा।

रायसाहब की स्थिति एकदम दर्जी वाली हो गई थी। भरत जहाँ भी फाड़ता, रायसाहब को ही सिलाई करनी पड़ती थी। लेकिन इस बार गुरु ने भरत के प्रगतिशील विचारों को फाड़कर दो-फाड़ा बना दिया था।

"रायसाहब आप भी आजकल खूब मीडियम-संवेदी हो गए हैं। देख रहा हूँ आप में आ रहे परिवर्तन को भी मैं। अब दो-तीन पैग भी पचा ले रहे हैं आप। इंग्लिश मीडियम वाला स्टेमिना आने लगा है धीरे-धीरे आप में।" गुरु ने रायसाहब पर तंज कसते हुए कहा।

रायसाहब हमेशा बचाव की मुद्रा में रहते थे। ऊपर से गुरु के सामने तो और भी सावधान थे। गुरु इससे पहले तीन बार बहस के दौरान रायसाहब का चश्मा फोड़ चुका था। रायसाहब अब और खर्च नहीं बढ़ाना चाह रहे थे। उन्होंने बस मुस्कुराकर गुरु भाई का हाथ पकड़ लिया।

"लेकिन एक बात बोल दूँ गुरु भाई। प्लीज बुरा मत मानिएगा तो बोलूँ?" भरत ने फिर उचककर कहा।

"मैं बात का नहीं, गलत बात का बुरा मानता हूँ। बात अगर सही है तो बेहिचक कहिए भरत कुमार जी।" गुरु ने नार्मल होते हुए कहा।

"मैंने तो यही सुना था कि आपका सलेक्शन इसी कारण नहीं हो सका क्योंकि इंटरव्यू में बोर्ड ने आपसे सारे प्रश्न अँग्रेजी में पूछे और जवाब भी अँग्रेजी में देने को कहा, आप अच्छा नहीं कर पाए।" भरत ने घनघोर थेथरई के साथ बात कहते हुए गुरु की दुखती नब्ज पर हाथ रख दिया।

"इसमें बुरी लगने वाली कौन-सी बात थी यार! हाँ बिलकुल सही सुना है आपने। मुझसे ये भी कहा गया कि आपको टाई बाँधना आता है कि नहीं। खुद से बाँधे हो या किसी से बँधवा कर आए हो? मुझे टाई खोलकर फिर बाँधने को कहा गया। मैंने टाई बाँधी तो वो शायद उतने ठीक से बँध नहीं पाई। उन्होंने हँस कर एक-दूसरे से कहा भी कि ये तो बिहारी बारात का दूल्हा निकला जो विवाह के दिन ही जीवन में बस एक बार टाई पहनता है और वो भी बहनोई या फूफा से बँधवाता है। हाँ, मैं नर्वस हो गया था। जो थोड़ा बहुत बोल सकता था वो भी अटक गया। मैंने कहा भी कि आखिर आपके द्वारा फॉर्म में माध्यम के पूछने का क्या मतलब है जब आप मुझे मेरे चुने गए माध्यम से बोलने और सुनने का अवसर नहीं दे रहे हैं। मैंने कहा कि ये दिन मेरे जीवन का सबसे निर्णायक दिन है। जितना पढ़ा और सीखा है उन सबको प्रस्तुत करने के लिए आपको मेरे लिए सबसे उपयुक्त और सहज माध्यम उपलब्ध कराना चाहिए न कि किसी विशेष माध्यम से ही खुद को पेश करने के लिए दबाव बनाना चाहिए। आज तो मुझे मेरी अभिव्यक्ति का सबसे अनुकूल माध्यम चाहिए न, क्योंकि आप तो मुझे मेरे ज्ञान और व्यक्तित्व से परखेंगे, न कि किसी खास भाषा को बोल लेने भर की क्षमता से परखेंगे। इतना सुनकर उन्होंने मुझसे कहा कि तुम नेता बनोगे, वही क्षेत्र ठीक रहेगा, वही बन जाओ। आईएएस वाली बात नहीं है तुममें। तुम बाहर जा सकते हो। और मैं बाहर आ गया।"

"अगर आपकी अँग्रेजी ठीक रहती तो आप आईएएस बन जाते, ये सोचा कभी

आपने गुरु भाई?” भरत ने कहा।

“हाँ सोचा, अँग्रेजी सीखना चाहिए ये सोचा, पर आईएएस बनने के लिए ही सीखना चाहिए ये कभी नहीं सोचूँगा। अपने ज्ञान और काम भर अँग्रेजी की जानकारी के साथ इंटरव्यू तक पहुँचे लड़के को केवल अँग्रेजी बोलने की क्षमता न होने के आधार पर बाहर कर देने की परिपाटी का मैं विरोध करता हूँ। मैं उस मानसिकता का विरोध करता हूँ जिसने मुझे बिहारी दूल्हे का टाई वाला जुमला सुनाया। ये परिपाटी बदलेगी और मैं इसके विरुद्ध लड़ने का साहस रखता हूँ। एक दिन ये लड़ाई जरूर होगी। हम जीतेंगे भी देख लेना भरत कुमार, हम जीतेंगे। ये मानसिकता हारेगी।” गुरु ने इतना कहकर आँख मूँद ली, दो बूँद नीचे गिरी टप से।

अब माहौल थोड़ा बदल गया था। खिंचे हुए माहौल में थोड़ी ढील आ गई थी। संतोष और मनोहर की आँखें भी पानी से भरी थीं। रायसाहब चुपचाप खड़े थे। भरत कुमार बिना किसी भाव के पत्थर की भाँति खड़ा था। उसने अनजाने में ही गुरु के दिल में आग लगा दी थी। अब देखना यह था कि गुरु कब उससे मशाल जलाकर अपने रास्ते निकलता। ये सब कुछ अभी भविष्य के गर्भ में था। कुछ तय नहीं था। तत्काल इतना हुआ कि शुक्ला जी को गुरु ने चाय के पैसे दिए और सब अपने-अपने कमरे की ओर चलने को हुए। तभी मनोहर ने कहा “एक बार ऊ वाला बतिया कह दीजिएगा जरा गुरु भाई जो आप भाषा के बारे में हरदम बोलते हैं?”

गुरु ने मुस्कुराते हुए कहा, “हाँ मनोहर भाषा तो सब जरूरी है, अँग्रेजी व्यापार की भाषा है, उर्दू प्यार की भाषा है और हिंदी व्यवहार की भाषा है”।

यह सुनते ही सबके चेहरे पर एक हल्की मुस्कुराहट तैर गई और आज की सभा वहीं भंग हो गई।

## 15.

तीन दिन क्लास करने के बाद संतोष ने एक रात अचानक मनोहर को फोन लगाया।

"हैलो मनोहर भाई, कैसे हैं?"

"अरे नमस्कार भाई आप बताइए कैसे हैं, दो दिन बाद याद किए, आप तो एकदम भूल ही गए हो संतोष बाबू!" मनोहर ने हँसते हुए हाल-चाल पूछा।

"अरे क्या बताएँ बॉस, इतना-इतना क्लास करना पड़ रहा है! जी.एस. के लिए भी 'नवरतन क्लासेज' ज्वाइन करना है। फुर्सते नहीं मिल रहा है। मनोहर भाई एक ठो बात कहना था आपसे, थोड़ा शर्म आ रहा है।" संतोष ने सच में लजाते हुए कहा।

"हाहाहा ऐसा क्या बात कहिएगा हो! शरम काहे आ रहा है? एकदम खुलकर कहिए, जान हाजिर है।" मनोहर ने उधर से कहा।

"हाँ, अरे आपको याद है ऊ जब हम आपके कमरे पर पहली बार गए थे तो आप कुछ उजला-उजला छाती में लगा के बाल हटा रहे थे, हमको भी थोड़ा चाहिए था। सोचे थोड़ा साफ सुथरा रहना चाहिए, अब सब रायसाहब नहीं हैं न!" संतोष ने दम साधकर कहा।

"ओ अच्छा! बक महराज! हेयर रिमूवर था वो, वीट नाम था उसका। इसमें क्या बात है, आप रुकिए कल आते हैं, ले आएँगे।" मनोहर ने कहा।

पर संतोष का मन तो अपने पुराने रूप को बदल देने के लिए बेचैन था। वह अपने बाल-बंध से तुरंत मुक्ति चाहता था। कोचिंग जाने के बाद उसे लगने लगा था कि दाढ़ी, बाल, मूँछ उसके ज्ञानछिद्रों को बंद भी कर सकते हैं, इसलिए वह जितना जल्दी हो सके ये सारा झाड़-पलाश हटाकर अपने व्यक्तित्व के बगीचे को एकदम साफ-सुथरा और सुदर्शन कर लेना चाहता था। गाल से लेकर छाती तक में दूब घास की तरह उगे काले बालों की छाया से उसे उसका व्यक्तित्व मलिन जान पड़ रहा था। वह इन बालों को जड़ से उखाड़ना चाहता था। एक रात और इंतजार करना मुश्किल था उसके लिए।

"मनोहर भाई प्लीज, आप अभी बत्रा पर आकर हमें दे दीजिए वो क्रीम। रात को हटा लेंगे। कल तो चलेंगे कमला नगर आपके साथ, थोड़ा दो-चार टी-शर्ट लेना था।" संतोष ने अधीरता से कहा।

मनोहर से अच्छा भला और कौन उसकी फीलिंग को समझता! उसने बत्रा आकर संतोष को बाल-उखाड़ना द्रव्य दे दिया। संतोष बिना समय गँवाए अपने कमरे पर लौटा और लग गया अपने प्राइवेट उपनयन संस्कार में, जिसमें उसे सर के बाल छोड़ बाकी सारे अंगों के बाल उतार देने थे। क्रीम निकाल उसने उसे छाती समेत यथासंभव स्थानों पर घसा और दस मिनट के बाद नारियल के छिलकों जैसा बाल छुड़ाने लगा। मात्र मिनट भर में छाती के सारे बाल नीचे रखे अखबार पर गिर पड़े। संतोष एक अजब-सा भाव लिए खड़ा उन बालों को देख रहा था। इन्हीं छाती के बालों का हवाला देकर गाँव में

साहस और हिम्मत की बात की जाती थी। एक बार खुद उसने अपने पिता को कहते सुना था कि हमरे छाती में बाल है अभी, किसकी हिम्मत है जो हमारे खेत में बकरी घुसा के चरा देगा! अभी वो सारी हिम्मत अखबार पर मुरझायी पड़ी थी। संतोष ने सोचा, यह तो सामंती सोच है। छाती पर बाल से भला कौन-सा हिम्मत आता है! उसने इस सोच को हेयर रिमूवर से साफ कर दिया था। अब मूँछ की बारी थी। हाथ में रेजर ले जैसे वह मूँछ साफ करने को हुआ, उसके हाथ काँपने लगे। उसे याद आ रहा था कि लोग उसके यहाँ पिता के जिंदा रहते मूँछ नहीं मुड़ाते थे। फिर उसने सोचा, जब बचपन में मुझे मूँछ नहीं थीं तब कौन से उसके पिता जिंदा नहीं थे! सब बेकार की बातें हैं और यही सब सोचते हुए उसने एक झटके में मूँछों को अपनी नाक के नीचे से काट अखबार पर गिरा दिया। मूँछों के झड़कर गिरते ही वह थोड़ा थर्रा सा गया। दिल जोर-जोर से धड़कने लगा, लेकिन उसने फिर तुरंत खुद को संभाल लिया। वह सोचने लगा, 'इसी मूँछ के कारण लोग आपस में लड़ते रहे हैं। इसी मूँछ की झूठी शान के चक्कर में न जाने कितने युद्ध हुए हैं। मूँछ ऐंठना तो एक सामंती सोच का प्रतीक है।' इस तरह संतोष ने सामंतवाद का एक और चिह्न मिटा दिया। अब उसने एक नजर खुद को आईने में देखा। पहली नजर में खुद को पहचानने में थोड़ी दिक्कत हुई, पर अगले ही क्षण जान गया कि वह खुद ही खड़ा है आईने के सामने।

सुबह का सवेरा उसका नया चेहरा लेकर आया था। तैयार होकर जब वह क्लास के लिए निकला तो सीढ़ी से उतरते उसे गुरु ने भी नहीं पहचाना, इस कारण टोका भी नहीं। संतोष को देखकर यह आसानी से समझा जा सकता था कि मुखर्जी नगर में कुछ लोग तैयारी करने आते थे, कुछ लोग 'तैयार होने'।

आज कोचिंग पहुँचते वह सीधा मनमोहिनी के ऑफिस पहुँचा और सीधे उसका मोबाइल नंबर माँग लिया। मनमोहिनी के लिए संतोष को पहचानना मुश्किल बिल्कुल नहीं था क्योंकि इसी ऑफिस में बैठे कितनों का चेहरा बदलते देखा था, संतोष का भी उसे बस इंतजार ही था। मनमोहिनी ने हँसते हुए 'स्मार्टी' कहा और अपना नंबर दे दिया।

नए निखरे व्यक्तित्व के आत्मविश्वास ने आज संतोष को पहली सफलता दिलवा दी थी। उसने सफलता को तुरंत अपने मोबाइल में सेव कर लिया और जिस नाम से सेव किया वो था 'मेरी मोहिनी'। उसकी यह सफलता पहले भी न जाने कितने मोबाइलों में इसी नाम से सेव हो चुकी थी। तुरंत वहाँ से निकल संतोष क्लास पहुँचा। आज उसने अपनी पुरानी सीट बदल ली। वह हर पुरानी चीज बदल देना चाहता था। संतोष अभी बैठा ही था कि एक तीखे नैन नक्श वाली गोरी-सी गुलाबी भरे होंठ लिए लड़की ठीक उसके बगल में आकर बैठ गई। लड़की ने बैठते ही अपने बाल खोलकर बिखेर दिए। बाल के खुलते ही एक शानदार खुशबू से संतोष भर उठा, लड़की के ठीक पीछे बैठे लड़के की भी कमोबेश यही स्थिति थी। खुशबू के नाक तक जाते ही संतोष उसे महसूस कर मन-ही-मन दो चार शैंपू के नाम सोचने लगा, पैंटीन, डव, वाटिका, हेड एंड सोल्डर जैसे कुछ नाम सोचकर उसने उस खुशबू से मैच किया पर कुछ पुख्ता निष्कर्ष नहीं निकाल पाया कि वास्तव में वह कौन-सा शैंपू लगाकर आई है। कोई भी बदलाव जीवन में कितना लाभ लेकर आता है यह आज उसने सीट बदल कर जाना था। उसके सीट बदलने भर से उसे इस वरदान के मिल जाने की उम्मीद नहीं थी। संतोष दाईं ओर आँख घुमाकर उसे भर नजर

देखना चाह रहा था पर फिर बर्दाश्त कर सामने देखने लगता। तब तक पांडे जी भी आ चुके थे। आज संतोष पर नजर जाते ही उन्होंने मुस्कुरा कर कहा, "यू आर लुकिंग सो गुड संतोष, बेटर दैन लास्ट डे।"

संतोष ने हल्की आवाज में थैंक्स कहा और लजाते हुए दाएँ देख ही लिया एक नजर यह देखने के लिए कि लड़की ने देखा कि नहीं। उसने सोचा, 'चलो कुछ तो इम्प्रैशन जमा होगा।'

अभी आधे घंटे की क्लास हुई थी कि लड़की की कलम हाथ से फिसलकर नीचे गिर गई। उसने झुककर कलम उठाई, इसी दौरान उसके हाथ की केहुनी संतोष के पेट में जा सटी। संतोष को तो लगा एन्डरोस्कोपी वाली मशीन सट गई हो। अब वह गहरे सोच में पड़ गया कि लड़की ने केहुनी जानबूझकर सटाई या भाग्यवश सट गया। उसके बाकी की क्लास यही सोचते-सोचते निकल गई। क्लास खत्म होते ही वह रोज की तरह पहले मनमोहिनी के ऑफिस गया, वहाँ काफी भीड़ देखी तो बाहर निकल आया। कुछ दूर चला ही था कि पीछे से आवाज आई, "क्या स्मार्टी! नाम क्या है तुम्हारा?"

पलटा तो देखा वही लड़की थी।

"जी संतोष, संतोष नाम है मेरा।"

"वाह भाई! तुम्हारे घर वालों को एक बार में संतोष नहीं हुआ क्या। दो बार संतोष संतोष नाम रख दिया तुम्हारा?" कहकर खिलखिला पड़ी वह लड़की।

"जी ऐसा नहीं है, संतोष कुमार सिन्हा नाम है मेरा।" संतोष ने अबकी संभलते हुए कहा।

"ओहो, ओहो सिंह के फूफा हो 'सिन्हा'। अच्छा ये बताओ ये मूँछ खुद से बनाई है क्या?" यह एक अप्रत्याशित प्रश्न था संतोष के लिए।

"जी हाँ, क्यों क्या हुआ?" संतोष ने पूछा।

"तो जा के पूरी तरह बना लो, कहीं-कहीं छूट गया है। सर ने जो कहा था तुमने सुना नहीं क्या 'बेटर दैन लास्ट डे' यानी आज कल से कम मूँछें थी, बकलोल कहीं के! बाय-बाय! चलती हूँ।" वह ठहाका मार हँसी और कुछ मिनट बाद आँखों से ओझल हो गई।

संतोष वहीं खड़े तय नहीं कर पा रहा था कि वह क्या महसूस करे, गुदगुदी या कंपन। वह इन दोनों का भेद नहीं समझ पा रहा था। अगले दिन वह क्लास थोड़ी जल्दी पहुँचा। मनमोहिनी के ऑफिस में वह जैसे ही घुसा मनमोहिनी आज शायद महिषासुर-मर्दिनी बन बैठी थी, "आइए संतोष जी, क्या बात है रात को दो बजे आप मुझे कॉल क्यों कर रहे थे? और ये क्या मैसेज किया है, 'जाओ कट्टी'। मैं तुम्हारी कब से दोस्त हो गई जो फोन नहीं उठाया तो कट्टी-कट्टी खेलने लगे! आपको मैं कई दिनों से देख रही हूँ। आप पांडे जी से पढ़िए न, रोज मेरे पास क्या घुसे चले आते हो?" मनमोहिनी का रौद्र रूप देख संतोष सकते में आ गया।

"वो मैंने गलती से कॉल लगा दिया था मोहिनी जी।"

"अच्छा तो वो मैसेज?"

"जी हाँ, सॉरी गलती हो गई।"

"आप लोग जैसे लड़के समझते क्या हैं किसी भी लड़की को ये बताइए पहले। रोज-रोज मुँह उठाकर चले आते हैं। लड़की की हँसी देखी कि बस समझ गए काम हो गया। अरे भाई मेरे, ये हमारा काम है काम। हमें यहाँ बैठ के हर सूरत में हँसना पड़ता है और सबके साथ हँस के बात करनी पड़ती है। हमें इसी के पैसे मिलते हैं समझे मिस्टर! हमें रोज आपके जैसे लड़के को लोक प्रशासन और समाजशास्त्र दिलवाने के अलग से भी पैसे मिलते हैं। आप सबको क्या लगता है यहाँ इश्कन-इश्कन करने बैठी हूँ मैं?" मनमोहिनी ने बिना रुके सब कह डाला। संतोष को मानो काटो तो खून नहीं। वह चुपचाप खड़ा था। यह हल्ला सुनकर ऑफिस के बाहर कुछ लड़के जमा हो गए।

"अच्छा मनमोहिनी मैडम रहने दीजिए अब हो गई गलती, आपने इतनी पर्सनली बात करके सलेक्शन की विश दी थी। सो, थोड़ा कनफ्यूजन हो गया था।" संतोष ने नरम स्वर में कहा।

"अरे भाँड़ में जाए विश! देखिए हमारा काम होता है हर स्टूडेंट का बेवजह उत्साह बढ़ाना समझे आप? वर्ना हम भी जानते हैं कि सौ में दस ही सलेक्ट होते हैं बाकी गधे ही होते हैं पर हमें सबको घोड़ा कहना पड़ता है। अब दिमाग मत खाइए, जाइए और आगे से बिना मतलब न ऑफिस आना न फोन करना आप, समझ गए न?" मनमोहिनी रजिस्टर निकाल कुछ लिखने लगी।

संतोष को अब लग रहा था कि मनमोहिनी ने विश नहीं, जहर दिया था। हँस-हँसकर इतिहास छुड़वाकर लोक प्रशासन और समाजशास्त्र पकड़वा देने वाली मनमोहिनी इतनी निष्ठुर निकलेगी वह विश्वास नहीं कर पा रहा था। वह मन-ही-मन उसे बेवफा मान चुका था। अचानक उसके मन में भागलपुर आकाशवाणी से प्रसारित रेडियो पर सुना विदेशिया का वह गीत गूँजने लगा

हँसी हँसी पनवा, खिलऊले गोपीचनवा

तऽ अपने तऽ गईले बिदेश

कोरी रे चुनरिया में दगिया लगाई गईले

लगाई के करेजवा में ठेस

आज संतोष का मन जल रहा था। आज उसका क्लास करने का मूड नहीं हुआ। वह सीधा कोचिंग से बाहर निकला और समोसे की दुकान पर पहुँच, पहले समोसा खाया फिर मोबाइल से मनमोहिनी का नंबर बड़े भारी मन से डिलीट किया। अभी वह वहाँ से निकला ही था कि सामने गब्बर की जूस की दुकान पर उसे वही लड़की दिखाई दी, क्लास वाली, जिसने उसको बकलोल कहा था।

"हाय सैंटी कैसे हो? आज क्लास नहीं गए क्या?" लड़की ने संतोष को देखते ही पूछा। उसके मुँह से सैंटी नाम सुनते ही संतोष का बुझा चेहरा पुन: खिल उठा। उसके नए रूप को नया नाम दे दिया था उस लड़की ने।

"जी हाय हाय। हाँ आज नहीं गया क्लास। आप भी नहीं गईं आज क्या?" संतोष ने पूछा।

“अरे क्या हाय हाय, हमने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा यार जो हाय हाय का नारा लगा दिए?” कहकर वह हँसने लगी। उस लड़की के साथ उसकी एक सहेली भी थी। दोनों ने एक-दूसरे से हाथ मिलाते हुए ठहाका लगाया।

“अच्छा यही है क्या, कल वाला बकलोल?” दूसरी लड़की ने पहली से पूछा।

“हाँ यही है बेचारा, पर आज देखो मूँछ पर दुबारा रेजर मार के आया है।” पहली लड़की ने कहा।

संतोष तो समझ नहीं पा रहा था कि उनकी बातों पर क्या प्रतिक्रिया दे। एक तो अभी-अभी मनमोहिनी ने दिल तोड़ा था। ऐसे में उन लड़कियों की हँसी-ठिठोली मरहम का ही काम कर रही थीं।

“और मेरे प्यारे हनुमान, नाम तो पूछ लो हमारा! मनमोहिनी का तो नंबर तक माँग लिए थे!” पहली लड़की ने फिर हँसते हुए कहा।

“जी आपको कैसे पता?” संतोष को बड़ा आश्चर्य हुआ जानकर। यह बात उसने रात ही को सिर्फ मनोहर को बताई थी।

“अरे प्यार-मुहब्बत कहाँ छुपता है सैंटी जी!” दूसरी लड़की ने मजे लेते हुए कहा।

“लो आओ जूस पी लो, अभी-अभी तुम्हारा ब्रेकअप भी हो गया है। हमें ये भी पता है।” पहली वाली लड़की ने मुस्कुराते हुए कहा।

संतोष का चेहरा अबकी शर्म से लाल-लाल टाइप हो गया।

“नहीं-नहीं। वो सब बस ऐसे ही था। ऐसा कुछ नहीं था।” कह संतोष पूरी तरह लजा गया। तब तक जूस वाले ने एक बड़ी मिक्स जूस की ग्लास संतोष के हाथ में पकड़ा दी। ये पहला मौका था जब संतोष एक नहीं बल्कि दो-दो सुंदर लड़कियों के साथ खड़ा हो जूस पी रहा था।

“जी क्या नाम है आप लोगों का?” संतोष ने जूस के गले में उतरते ही नयी ताजगी के साथ पूछा।

“लो जी, पहले तो एक का भी नहीं पूछ रहे थे, अब दोनों का चाहिए। खैर जी, हमारा नाम विदिशा है और ये हैं मेरी सहेली पायल।”

“नंबर चाहिए क्या हमारा भी?” पायल ने हँसते हुए कहा।

“अब छोड़ भी दे बेचारे को यार, आज के लिए काफी है। ओके बाय सैंटी सिन्हा जी, कल मिलते हैं। जूस के पैसे हमने दे दिए हैं। कितने लकी हो यार पहली मुलाकात में लड़की के ही पैसे से जूस पी गए!” कहते हुए फिर दोनों ने ठहाका लगाया और चल दीं।

संतोष के लिए आज का दिन मिला-जुला रहा था। मनमोहिनी के जहर के बाद विदिशा के पिलाए गए जूस ने संतोष में थोड़ी-सी जान वापस ला ही दी। संतोष ने वहीं से मनोहर को फोन मिलाया और आज का किस्सा सुनाया। मनोहर ने हँसते हुए यह राज खोला कि पायल मनोहर की दोस्त है और कल रात विदिशा, पायल और मनोहर ने साथ खाना खाया था। उसके बाद यह भी बताया कि कल रात पायल मनोहर के कमरे पर ही रुक गई थी। वहीं मनोहर ने संतोष के बारे में पायल को बताया और पायल ने विदिशा को। फिर आज का किस्सा तो सारी कोचिंग को पता था। इतना हल्ला किया था

मनमोहिनी ने। संतोष ने इन सारी बातों को सुनने के बाद बस एक ही सवाल किया,

"हे भगवान! अरे रात को क्या कर रहे थे आप लोग महराज?"

"अरे लीजिए और कोई क्या करता है, पढ़ रहे थे! खूब पढ़े और क्या!" कहकर मनोहर हँसने लगा। फोन कब कट गया, संतोष को पता भी नहीं चला।

## 16.

विदिशा और पायल दोनों एक स्वतंत्र जिंदगी जीने वाली खुले विचारों की लड़कियाँ थीं। दोनों दो साल पहले ही दिल्ली सिविल की तैयारी के लिए आई थीं। पायल पश्चिम बंगाल के आसनसोल से थी और विदिशा मध्य प्रदेश के भोपाल से। दोनों यहीं एक-दूसरे से मिली थीं और अब वे दोनों रूम पार्टनर थीं। दोनों ही खुले विचारों वाली थीं। इसके बावजूद विदिशा और पायल के लिए स्वतंत्रता के अलग-अलग अर्थ थे। विदिशा के लिए स्वतंत्रता का अर्थ मर्यादा के साथ खुलकर जीने में था। पायल के लिए स्वतंत्रता का अर्थ किसी भी तरह से जीने में था जिसमें मर्यादाओं की बंदिश के लिए कोई जगह नहीं थी। विदिशा लड़कों से बोलती, साथ घूमती और पढ़ती, उसे लड़के और लड़की का फर्क करना कभी नहीं आया। वह दोस्ती के साथ जी रही थी चाहे वह लड़का हो या लड़की। उसकी दुनिया लड़का-लड़की के चयन से मुक्त थी। उसे जो अच्छा लगा उसी के साथ बात करना, खाना, घूमना उसे खूब भाता था। दूसरी तरफ पायल के लिए आजादी इससे आगे की चीज थी। वह दुनिया की कोई ऐसी बात जिसमें मस्ती हो, मौज हो, उसे छोड़ना नहीं चाहती थी। इसके लिए उसने कई लड़कों को जो उससे प्यार करते थे या करने का नाटक करते थे, को छोड़ा था। वह शायद इस बदरंग दुनिया का सच विदिशा से ज्यादा समझती थी इसीलिए उसने पहले तय कर लिया था कि अगर दुनिया उसे नहीं छोड़ेगी तो वह भी दुनिया को नहीं छोड़ने वाली। पायल रोज लड़कों पर किए नए-नए प्रयोग का किस्सा विदिशा को सुनाती। दोनों खूब मजे लेकर एक-दूसरे को सुनते। विदिशा ने न कभी उसके प्रयोगों को अपने जीवन में उतारा, न ही पायल को किसी अच्छे-बुरे काम के लिए रोका।

आज रात भी विदिशा अपने कमरे पर अकेली थी। सुबह के चार बजे होंगे तभी दरवाजे की घंटी बजी। विदिशा ने दरवाजा खोला। पायल अंदर आई, हाथ में मिठाई का डिब्बा और लगभग दस पन्नों का एक नोट्स था। मेज पर रखा और सीधे बैड पर जा गिरी।

“अरे क्या बताऊँ मेरी जान, आज अजीब भोंदू के चक्कर में पड़ गई!” पायल ने करवट लेते हुए कहा।

“क्यों क्या हुआ, बहना-बहना कह कर रोने लगा था क्या?” विदिशा ने पानी का ग्लास उठाकर कहा।

“नहीं यार, क्या बताऊँ वो एक मेरे फ्रेंड का फ्रेंड है, कौशिक नाम है। इसे मैंने तीन दिन पहले इकोनॉमी के कुछ नोट्स बनाने दिए थे, पूरा कर ही नहीं पा रहा था। आज मैंने सोचा थोड़ा-सा चार्ज कर दूँ तो शायद पूरा कर दे। यार कमरे पर गई उसके। लिखने बिठाया, हाथों को रोककर हल्का टच दिया और बोली, ‘कितना अच्छा लिखते हो’ तब तो रफ्तार पकड़ी भोंदू ने। साला इतना धीरे लिखता है कि रात भर लिखवाया तो छः पन्ना

लिख पाया, पहले के चार लिखे थे। मैं रात भर लैपटॉप पर फिल्म देखती रही यार, फिल्म भी ऐसी रखी थी खड़ूस ने- एक भी देखने लायक नहीं। मुझे भूख भी लगी थी, मिठाई का डब्बा खोला, दो-तीन मिठाइयाँ खाईं फिर सोचा क्यों न तेरे लिए ले चलूँ! मैंने आते वक्त डब्बा उठा लिया, इतना खुश हुआ मुझे डब्बा ले के जाते देख वो भकलोल कि तुझे क्या बताऊँ मैं!" पायल ने आज का ताजा एपिसोड सुनाते हुए कहा। दोनों बातें करते-करते सो गईं। सुबह नौ बजे विदिशा की आँख खुली। उसे तैयार होकर क्लास जाना था।

इधर संतोष भी कोचिंग पहुँच चुका था। आज से लोक प्रशासन की कक्षाएँ प्रारंभ होनी थीं। चूँकि अभी तक लोक प्रशासन के लिए किसी शिक्षक जुगाड़ नहीं हो पाया था, इसलिए इसकी कक्षाएँ थोड़ी विलंब से शुरू हो रही थीं। बड़ी मुश्किल से 'लोकसेवक मेकर' के डायरेक्टर 'खगेंदर तूफानी' ने खुद सात साल यहीं मुखर्जी नगर में आईएएस, पीसीएस सबकी तैयारी की थी पर न वहाँ सफल हुए न ही किसी विषय में कोई विशेषज्ञता ही हासिल कर पाए। हारकर 'लोकसेवक मेकर' नाम की कोचिंग खोली और उसके निदेशक बने।

कक्षा में पहुँच संतोष ने अपनी सीट पकड़ ली। मन-ही-मन सोच रहा था कि शायद विदिशा ने भी उसका ही कॉम्बिनेशन पकड़ा हो। उसने सही सोचा था। विदिशा ने भी लोक प्रशासन को दूसरा विषय चुना था। वह कक्षा में आई और चुपचाप पिछली बेंच पर जा बैठी। संतोष ने उसे पीछे जाते हुए देखा। वह सबसे आगे की बेंच पर था। वह सोचने लगा कि मैंने यह सबसे आगे बैठने की कैसी गंदी आदत पाल ली है! अब उसके और विदिशा के बीच उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव जितनी दूरी थी। वह पृथ्वी लाँघ वहाँ पहुँच भी जाता पर अभी हाल ही में मनमोहिनी कांड के बाद इस तरह किसी लड़की के बगल में जा बैठना उसे ठीक नहीं लगा।

इतने में लोक प्रशासन के शिक्षक 'प्रफुल्ल बटोहिया' पहुँच गए। आते ही बच्चों ने तालियों से स्वागत किया। यह दृश्य देखकर बटोहिया सर अकबका गए।

"ताली क्यों बजाया आप सबने?" हल्की फीकी मुस्कान के साथ बटोहिया सर ने पूछा।

"सर जी, इतने दिनों में तो हमारे तूफानी सर पब्लिक एड का कोई टीचर धर-पकड़ कर लाए हैं, अब इस पर भी ताली न पीटें तो क्या छाती पीटें!" एक लड़के ने खड़े होकर बेबाकी से कह दिया।

बटोहिया सर कक्षा का मिजाज समझ गए थे। तभी एक और लड़के ने उठकर कहा, "पैरफुल सर, ये लोक प्रशासन।" लड़के ने अभी आधा वाक्य बोला था कि बटोहिया सर ने उसे चुप कराते हुए कहा,

"पैरफुल नहीं, प्रफुल्ल नाम है मेरा समझे! चलो बैठ जाओ। अब आप सब ही बोलेंगे या मुझे भी मौका मिलेगा! वैसे भी मुझे जल्दी कोर्स खत्म करना है।"

बटोहिया सर ने कक्षा की औपचारिक शुरुआत करते हुए सबसे पहले लोक प्रशासन विषय का महत्व बताते हुए कहना शुरू किया, "देखिए, एक लोकसेवा की तैयारी करने वाले विद्यार्थी के लिए लोक प्रशासन विषय से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। यह विषय आपमें पढ़ाई और परीक्षा की तैयारी के दौरान ही एक प्रशासक गढ़ देता है। आप

एक अधिकारी की तरह सोचने लगेंगे। आपमें एक प्रशासक के गुण विकसित होने लगेंगे। मतलब आपको इंटरव्यू के लिए तो अलग से कुछ नहीं करना होगा। वो वाला पार्ट आपका खुद-ब-खुद तैयार हो जाता है। आपको खुद में एक आईएएस बैठा हुआ नजर आएगा, बस उसे बाहर निकालने की जरूरत होगी और समझिए आप सलेक्ट। ये विषय पढ़ने वालों का आत्मविश्वास इतना बढ़ जाता है कि हमारी कक्षाओं में कई छात्र कोट पैंट पहनकर बिल्कुल एक प्रशासनिक अधिकारी की भाँति बनकर पढ़ने आते हैं। जब तक आप खुद में दिन-रात वो फीलिंग नहीं लाओगे तब तक कहाँ से उसे पाओगे! और मान लीजिए आप सलेक्ट न भी हुए तब भी किसी प्रशासनिक अधिकारी से बात करने में ये विषय उतना ही काम आएगा।"

क्लास में बैठा ऐसा कोई छात्र नहीं होगा जिसकी आँखों में एक क्षण के लिए बटोहिया सर ने लाल बत्ती न जला दी हो। हर विद्यार्थी एक-दूसरे को एक जिम्मेदार अधिकारी की तरह देखने लगा। संतोष तुरंत मौका देख पीछे मुड़ा और विदिशा को देखने लगा। वह अपनी कल्पनाओं में खुद को आईएएस की जगह आईपीएस देख रहा था क्योंकि एक ही जिले में दो जिलाधिकारी संभव नहीं थे।

बटोहिया सर ने पूरी क्लास को एक रुमानी ख्याल के धुँध में लपेट दिया था। खुद में एक आईएएस देख सब झूम रहे थे। इसी झुम-झुमव्वल के साथ पहली कक्षा का समापन हुआ। क्लास खत्म होते ही बटोहिया सर ऑफिस में बैठे। संतोष झट से ऑफिस के अंदर आया और सर के पाँव छुए।

"नो, नो भाई। ये अधिकारी का एटीटयूड नहीं है। पाँव मत छुओ, हाथ मिलाओ यार। बोलो कैसी लगी क्लास?" बटोहिया सर ने मुँह में पान डालते हुए पूछा।

"सर वही तो सर! बस पहली बार थोड़ा-सा लगा कि हाँ हममें भी कुछ क्वालिटी है अधिकारी बनने का। थैंक्स सर! आप हम लोग के अंदर के आईएएस को बस बाहर निकलवा दीजिए सर, यही विनती है आपसे।"

"एकदम बाहर आएगा, चिंता न करो। जब तक हम हैं लोक प्रशासन में दिक्कत नहीं होने देंगे और तुम जैसे लड़के का तो तुरंत होगा भाई, बस मेरे साथ-साथ मिलकर मेहनत करो। एकदम हो जाएगा सलेक्शन।" बटोहिया सर ने पूरी उम्मीद से कहा। अंदर से बाहर निकालने की बात तो वे ऐसे कह रहे थे जैसे बोतल में बंद जिन्न को बाहर निकालना हो।

असल में मुखर्जी नगर में ऐसे कई मार्गदर्शक और अभिप्रेरक गुरु मिल जाते थे जो किसी को भरोसा दिलाने और उसका उत्साह बढ़ाने में गाय और बैल का कोई फर्क नहीं करते थे। वे बैल को भी यह आशा बँधवा देते थे कि 'तुम एक दिन दूध दोगे, बस अच्छे से चारा-बेसन खाओ' और फिर इनके दिए नोट्स का चारा खा-खाकर कई इस उम्मीद में कई विषय के साँड़ तो हो गए लेकिन सफलता का दूध नहीं निकला उनसे, भला निकलता भी कैसे!

"सर हम हिंदी माध्यम हैं, लोक प्रशासन ठीक रहेगा न?" संतोष ने अपनी शंका का सवाल पूछा था।

"जब तक मैं हूँ, सब ठीक रहेगा। अब देखिए मैं कितने दिन यहाँ हूँ! मैं तो बटोही

आदमी हूँ, इस महीने तीन कोचिंग छोड़ चुका हूँ। मुझे पैसा नहीं सम्मान चाहिए, सम्मान का भूखा हूँ। अब देखिए, यहाँ क्या होता है! यहाँ पैसा भी मिल जाए समय पर तो रह जाऊँगा। हाँ बस आप सबके लिए चलो इतना कर दूँगा।” बटोहिया सर इतना कह ऑफिस से बाहर आ गए। बाहर और भी कई विद्यार्थी बटोहिया सर को खुद में आईएएस वाली फीलिंग घुसाने के बदले थैंक्स कहना चाहते थे। कुछ ने तो कल से कोट-पैंट ही पहनकर आने का संकल्प ले लिया था।

दुखमोचन सर इधर कुछ दिनों से परेशान थे। आज भी वे कक्षा में आधे घंटे लेट पहुँचे। आते ही उन्होंने विद्यार्थियों के स्वास्थ्य और उनके खान-पान पर परिचर्चा प्रारंभ कर दी। उनका मानना था कि अच्छा भोजन ही आपको अच्छा और स्वस्थ मस्तिष्क देता है जिससे आप मन लगाकर पढ़ाई कर अच्छी तैयारी कर सकते हैं।

“आपने दुर्खीम टिफिन वाले का नाम सुना है?” दुखमोचन सर ने पूछा।

“हाँ सर, हम तो लेते हैं उसी से।” एक लड़के ने कहा।

“कैसा खिलाता है?” दुखमोचन सर ने दूसरा सवाल पूछा। अब विद्यार्थियों को समझते देर न लगी कि सर इसी टिफिन वाले से खाना खाते हैं और खराब खाने की वजह से या तो झगड़ा हुआ है या कोई और विवाद।

“सर पहले तो अच्छा ही खाना देता था, इधर कुछ दिनों से स्तर गिरा दिया है। जैसे-तैसे बना के भेज देता है। एक ही सब्जी लगातार पाँच दिन देता है। हम तो बंद कर दिए।” एक और लड़के ने उठकर कहा।

“हाँ वही तो, भाई बहुत लड़कों ने बंद करवा दिया है इधर दो तीन दिन के अंदर। देखिए, असल में जो मुख्य रसोइया था वो अभी कुछ दिन के लिए अपने घर चला गया है। बिहार अपने भाई की शादी के लिए। एक-दो और एक्सपर्ट स्टाफ भी छुट्टी पर हैं। सो, एक दो दिनों के अंदर फिर से क्वालिटी मेंटेन हो जाएगी। आप लोग दुर्खीम टिफिन पर विश्वास बनाए रखें।” दुखमोचन सर ने दुर्खीम टिफिन पर अपनी विस्तृत रिपोर्ट पेश करते हुए कहा।

ये सब सुनते ही सारे विद्यार्थी भौंचक थे। वे एक-दूसरे का मुँह ताक रहे थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर दुर्खीम टिफिन से दुखमोचन सर को क्या लेना-देना। पीछे की ओर बैठी विदिशा मुँह दाबे सिर नीचे करके हँस रही थी। उसे शायद सब पता था या वह अभी-अभी सब समझ चुकी थी।

“सर, आपको इतना सब कुछ कैसे पता?” एक लड़के ने पूछ ही दिया।

“इसलिए क्योंकि ‘दुर्खीम टिफिन’ मैं ही चला रहा हूँ पिछले दो सालों से। वो मेरी ही टिफिन कंपनी है।” दुखमोचन सर ने कह ही दिया।

“सर क्या सच?” भौंचक लड़के ने पूछा।

“अरे सच क्यों नहीं, कोई रिलायंस कंपनी के बारे में बोल दिया हूँ क्या कि वो मेरी कंपनी है जो इतना आश्चर्य कर रहे हो! एक तो खुद परेशान हूँ ऊपर से आप लोग टिफिन बंद कर रहे हैं। आप लोगों को न हमारे नोट्स पर भरोसा रहता है, न अब हमारे टिफिन पर रहा है। ऐसे कैसे चलेगा! अगर हम पर भरोसा किया है तो थोड़ा धैर्य रखिए। अभी थोड़ा टिफिन का खाना बनवाने में उलझ जा रहा हूँ। सो, नोट्स पर काम छूट जा रहा है।

दो-तीन दिन में दोनों ठीक हो जाएगा। देखते नहीं रोज आने में लेट हो जा रहा हूँ। सब्जी ला के देता हूँ, बनवाता हूँ और पैक करवाता हूँ, तब क्लास आता हूँ।" दुखमोचन सर ने स्पष्ट कहा।

अब दुखमोचन सर अपने विद्यार्थी जीवन का संघर्ष सुनाने लगे जब वे खुद आईएएस की तैयारी करते थे। उन्होंने बताया कि जब वे मुख्य परीक्षा लिख रहे थे, तब खराब खाने की वजह से उन्हें हैजा हो गया था और उनकी परीक्षा छूट गई। उन्होंने तब तय कर लिया था कि खराब खाने की वजह से किसी विद्यार्थी का कैरियर खराब नहीं होने देंगे। उन्होंने तभी सोच लिया था कि उन्हें जब भी अवसर मिलेगा वे बच्चों को अच्छा खाना जरूर उपलब्ध कराएँगे, यही सोचकर उन्होंने दुर्खीम टिफिन शुरू किया। पैसा कमाना उनका लक्षय नहीं। दुखमोचन सर ने साफ किया कि वे नहीं चाहते कि खराब खाने की वजह से जो दुर्घटना उनके साथ घटी वो किसी अन्य मासूम अभ्यर्थी के साथ घटे।

अब सारे विद्यार्थियों का मन दुखमोचन सर के प्रति अगाध श्रद्धा से भर गया। एक लड़के ने फुसफुसाहट वाले स्वर में अपने बगल वाले लड़के से कहा, "भाई, आज के जमाने में इतना बड़ा दिल और विद्यार्थियों के लिए सोचने वाला कहाँ मिलता है! सोचो हमारे लिए ये आदमी कितना नीचे गिरकर हमारा भला कर रहा है। टिफिन तक बेच रहे हैं बेचारे।" कक्षा में बैठे लगभग सभी विद्यार्थियों ने दुर्खीम टिफिन खाना तय कर लिया था। सबका सोचना था कि सर हमारे लिए टिफिन बेच रहे हैं तो हमें भी इनके लिए टिफिन जरूर खरीदना चाहिए।

इस तरह से खाने पर एक सार्थक क्लास के बाद आज की कक्षा खत्म हुई। अभी सभी उठकर जाने ही वाले थे कि कोचिंग के निदेशक खगेंदर तूफानी जी अंदर आए। उन्हें देख सभी पुन: अपनी सीट पर बैठ गए। दुखमोचन सर भी रुक गए। खगेंदर तूफानी ने कहा, "एक जरूरी जानकारी देनी थी आप सबको। देखिए, आपके लोकप्रिय टीचर प्रफुल्ल बटोहिया जी ने आईएएस की तैयारी पर 'आईएएस बनने के 31 नुस्खे' नाम की एक किताब लिखी है। एक किताब आपके सामने बैठे विख्यात समाजशास्त्री दुखमोचन मंडल जी की है 'अच्छा भोजन पक्का सलेक्शन' नाम की। अगर आप में से कोई भी सच में सफलता के प्रति गंभीरता से तैयारी कर रहा है तो ये दोनों किताबें बेहद जरूरी हैं। आप जरूर खरीद लें, फायदे में रहेंगे। अगर गंभीर नहीं हैं और टाइम पास कर रहे हैं तो मत खरीदना। उस पैसे का चाउमीन खा लीजिए। आगे जो आपकी मर्जी, धन्यवाद!" इतना कहकर वे वापस अपने केबिन में चले गए। दुखमोचन सर मुस्कुराते हुए पीछे-पीछे निकले। कई लड़के-लड़कियाँ उनके पीछे उनकी किताब का मूल्य पूछने के लिए साथ-साथ चलने लगे। करीब पाँच मिनट बाद खगेंदर तूफानी और दुखमोचन सर साथ बैठे थे।

खगेंदर जी ने दुखमोचन सर से पूछा, "आखिर सर आप दो काम एक साथ कैसे संभालिएगा? या तो टिफिन चलाइए या फिर फुल टाइम टीचिंग ही देखिए।"

"अब देखता हूँ करना तो एक ही काम है। दोनों में जो ठीक-ठाक चल जाएगा उसी को आगे कंटिन्यू कर दूँगा।" कहकर दुखमोचन सर कोचिंग से निकल गए।

संतोष ये सब देख रहा था। उसने अपनी जगह पर ही बैठे पीछे मुड़कर देखा तो विदिशा अब तक पेट पकड़कर हँस रही थी। संतोष उसे देखकर थोड़ा हँसा पर फिर आगे की तरफ मुँह कर दोनों पैर बेंच की तरफ ऊपर खींच, दोनों हाथ कपार पर धर सफेद बोर्ड

को देखता हुआ यही सोचने लगा कि अब आगे क्या होना है पता नहीं। उसे पहली बार लगा कि फीस भी पूरी जमा कर चुका है। अब कुछ नहीं किया जा सकता था। तब तक विदिशा पीछे से उठ संतोष के पास आ गई। क्लास लगभग खाली हो चुकी थी। उसने संतोष की पीठ पर एक जोरदार धौल देते हुए कहा, "क्या सैंटी जी, पूरी फीस जमा कर दिए हैं ना, यही टेंशन हो रही है क्या?"

"अरे विदिशा जी आपको कैसे पता?"

"आपकी हालत देखकर पता चल रहा है, वर्ना मेरी तरह फ्री होकर हँसते और कान पकड़ते आगे से ऐसे मायाजाल से। मैंने अभी तक एक रुपया भी नहीं दिया समझे हीरो।" बोलकर विदिशा बाहर निकलने लगी। संतोष ने भी हाथ कपार से हटाया और उसी के साथ कोचिंग से बाहर निकल गया।

अगले दिन संतोष एक बार फिर बटोहिया सर की क्लास में था। कक्षा में घुसते ही प्रफुल्ल बटोहिया ने अपना संस्मरण सुनाते हुए कहा, "आप लोगों को बताऊँ कि मैं कभी टीचर नहीं बनना चाहता था। पर जब मैं आईएएस नहीं बन पाया तो मेरी माँ ने अंतिम समय में मुझसे वचन लिया था कि वादा कर तू पाँच सौ लोगों को आईएएस बनाएगा। तब जाकर तेरी माँ की आत्मा को शांति मिलेगी। उसी वचन को पूरा करने के मिशन में मैं जी-जान से जुट गया। आज तक 234 आईएएस बना चुका हूँ। मैं प्रॉपर की बात कर रहा हूँ नहीं तो एलायड और पीसीएस मिलाकर तो संख्या हजार से ऊपर हो जाएगी। मेरा लक्ष्य पाँच सौ प्रॉपर आईएएस बनाना है उसके बाद ये फील्ड छोड़ दूँगा। अब देखिए आप में से कौन इस मिशन 500 में आता है!" बटोहिया सर के टीचर बनने की इस मर्मस्पर्शी कथा और माँ की भावुक प्रेरणा से जुड़े मिशन 500 की संकल्प संख्या सुनकर कक्षा में बैठे विद्यार्थियों की आँखे भर आईं। संतोष की आँखें भी डबडबा गई थीं लेकिन बटोहिया सर की माँ को याद करके नहीं, वह आज अपने माँ-बाप के सपनों को याद कर छलक पड़ा था। यह महत्वपूर्ण पल था उसके जीवन का। निश्चय ही।

## 17.

दिन-महीने गुजरते गए। जिंदगी अपनी चाल में चली जा रही थी। उस दिन सुबह संतोष ने जगते ही देखा कि मनोहर के सात मिस्ड कॉल थे।

"हैलो गुड मॉर्निंग मनोहर भाई, क्या बात एतना कॉल देख रहे हैं?"

"अरे कहाँ थे आप संतोष जी, महराज हम इसलिए काल कर रहे थे कि आज रायसाहब का बर्थडे है पहले बधाई दे दीजिए और शाम को पार्टी है।" मनोहर ने सदा की तरह चहकते हुए कहा।

"अरे कितना पार्टी खाइएगा हो मनोहर जी, हमें रहने दीजिए। हम फोन पर बधाई दे देते हैं।" संतोष ने कहा।

"दिमाग खराब है आपका क्या? अरे आपके और हमारे बिना रायसाहब का पार्टी कैसे हो सकता है! उस बुढ़वा का और कौन है हमारे आपके अलावा यहाँ! आप चुपचाप तैयार होकर सीधे बत्रा आइए। हमें पहले चलकर तैयारी करना है।" मनोहर ने पूरे अधिकार के साथ कहा।

संतोष के मन पर मनोहर के भावपूर्ण उद्गार का असर होना स्वाभाविक था। उसने हाँ कर दी। फोन रख तैयार होने के लिए बाथरूम की तरफ गया। नहाने के बाद उसने सोचा कि रोज की तरह साधारण कपड़े पहनकर चलूँ या फिर पार्टी वियर शर्ट निकाल लूँ। फिर सोचा, शाम को वापस आकर बदल लूँगा अभी तो दौड़े-धूप करना होगा व्यवस्था में।

मुखर्जी नगर के इलाके में विद्यार्थियों के बीच 'जन्मदिन मनाना' सबसे लोकप्रिय इवेंट था। वैसे-वैसे छात्र जिन्होंने मैट्रिक का फॉर्म भरने के बाद कभी अपने जन्म की तिथि पर ध्यान तक नहीं दिया, वे भी यहाँ बड़े ताम-झाम के साथ अपना जन्मदिन मनाते थे। कई कोचिंग में तो विद्यार्थी आपस में चंदा उठा अपने-अपने टीचर की जयंती भी मनाते थे। यहाँ इतने-इतने उम्र के आदमी जो विद्यार्थी के रूप में सालों-साल से तैयारी में लगे हुए थे, जिनका जन्मदिन उनके घर वाले कब का भूल चुके थे, वे भी याद कर अपने मित्रों को उकसाकर अपना जन्मदिन मनवाते थे। आज रायसाहब ने लगभग वही किया था।

सुबह होते ही मनोहर को फोन कर कहा, "आज मन बहुत उदास और तनहा लग रहा है।" पूछने पर बताया कि आज उनका जन्मदिन है। आज बड़ा अकेलापन लग रहा है। घर पर होता तो कितना लाड़-दुलार मिलता। इतना सुनना था कि मनोहर ने कहा, "हम लोग हैं न आपके साथ, शाम को पार्टी होगी।" और मनोहर इवेंट मैनेजमेंट में जुट गया था।

यहाँ पर जन्मदिन मनाने में उसके पूरे रूल-रेगुलेशन का अनुशासन के साथ पालन किया जाता था। मसलन, कमरे को बैलून से सजाना, बर्थडे बॉय को टोपी पहनाकर तैयार करना, केक काटना, एक-दूसरे को हाथ से केक खिलाना, गाल पर केक लगाना, उपहार

लाना, गुलदस्ते लाना इत्यादि। कुछ तो जन्मदिन के पूर्व वाली रात 12 बजते इतना हल्ला करते और नाचते थे कि जैसे भादो कृष्ण पक्ष की अष्टमी को श्रीकृष्ण का जन्म हो गया हो फिर से।

मनोहर रायसाहब के बर्थडे को लेकर बहुत उत्साहित था क्योंकि आज अपने जन्मदिवस जैसे महान अवसर पर रायसाहब ने उसे अपना समझकर उससे अपना एकाकीपन साझा किया था। शायद रायसाहब उसकी प्रबंधन क्षमता को जानते थे। मनोहर को याद आ रहा था कि एक बार जब वह मोतिहारी में था तब उसके जन्मदिन के अवसर पर माँ ने सत्यनारायण प्रभु की कथा करवाई थी। उसी दिन उसके मैट्रिक का रिजल्ट आया था और मनोहर पास भी कर गया था। यद्यपि वह इस बात को लेकर अभी तक स्पष्ट नहीं था कि वो कथा क्या उसके जन्मदिन के कारण करवाई गई थी या फिर मैट्रिक पास होने के कारण। फिर दिल्ली आकर ही मनोहर ने अपना प्रॉपर तरीके से जन्मदिन मनाया था।

मनोहर बत्रा पहुँच संतोष का इंतजार कर रहा था। मनोहर, रायसाहब के लिए अपने कमरे से एक बैग में गमकऊआ साबुन, डियो, परफ्यूम, हेयर जेल, बॉडी लोशन इत्यादि इस तरह लेकर निकला था जैसे एक ब्यूटी पार्लर वाली शादी के लिए नई दुल्हन सजाने जा रही हो। असल में रायसाहब इस तरह के सौंदर्य प्रसाधनों से हमेशा दूर ही रहे थे। अब एक दिन के लिए इतने प्रोडक्ट को खरीदना न उचित था, न संभव सो, मनोहर ने खुद अपनी पहल करते हुए ये सारा सामान अपने बैग में रख लिया था। रायसाहब को तो बस आज भर ही प्रयोग में लाना था, वो भी खुद मनोहर ने जिद की थी।

संतोष के पहुँचते ही दोनों नेहरु विहार की ओर निकले। रायसाहब कमरे को धोने-पोंछने में व्यस्त थे। मनोहर ने कमरे में घुसते ही रायसाहब को साबुन दिया और नहाकर आने को कहा। संतोष ने पहले गले मिल बड़ी आत्मीयता से जन्मदिन की बधाई दी। रायसाहब ने चाय चढ़ा दी। आज बहुत दिन बाद चूल्हा जला था रायसाहब के आशियाने में। चाय पीने के बाद नहाने जाने से पहले, रायसाहब ने मेहमानों की लिस्ट पर मनोहर और संतोष से विमर्श किया। रायसाहब की इच्छा थी कि कोई महिला मित्र भी अगर आमंत्रित हो जाए तो एक सार्थक जन्मदिन हो जाए यह जीवन का। मनोहर ने दिलासा देते हुए कहा कि वह कोशिश करेगा। चूँकि अब महिला मित्र को भी बुलाना था इस कारण अन्य मेहमानों के नाम पर बड़ी सावधानी से विचार किया जा रहा था कि कोई बदतमीज मिजाज का लड़का आमंत्रित न हो जाए भले वह कितना भी करीबी मित्र हो। अंत में तय हुआ कि कुछ चुनिंदा मित्रों को ही बुलाया जाय। रायसाहब ने एक बार गुरु के नाम पर न बुलाने की चर्चा करनी चाही पर संतोष और मनोहर का रुख देखते हुए चुप हो गए। असल में गुरु के आने से महिला मित्र की नहीं बल्कि खुद रायसाहब को अपनी फजीहत का डर लगा था। नए मेहमानों में केवल एक क्रिश्चन कॉलोनी में रह रहे जावेद खान को आमंत्रित किया गया था बाकी सब पुराने ही चेहरे थे जो सदा पार्टीखोरी करते थे। महिला मित्र लाने की जिम्मेदारी मनोहर को सौंप दी गई। इसके बाद अब खाने-पीने के मेन्यू पर बात हुई।

ये सब होते काफी वक्त निकल गया था। रायसाहब नहाना छोड़ पहले उन सब के

साथ खरीदारी कर आए। अब शाम होने को थी। रायसाहब झट तौलिया लपेट बाथरूम की तरफ गए। कमरे की अपनी स्वाभाविक गंध साबुन की खुशबू से लड़ रही थी। रायसाहब के कमरे की नैसर्गिक महक के साथ साबुन की गमक मिलने से एक अजबे टाइप की तीसरी खुशबू का ईजाद हो गया था। रायसाहब साबुन इस तरह मल-मल नहा रहे थे जैसे कोई दुल्हन उबटन लगाकर नहाती है। इधर मनोहर ने फोन पर बात कर महिला मित्र का आना तय कर लिया था। केवल एक की ही हाँ हो पाई थी। रायसाहब के बाथरूम से निकलते ही मनोहर बाथरूम को देखने गया, "रायसाहब ये इतना गंदा बाथरूम कैसा महक रहा है! ऐसे में आप महिला मित्र का निमंत्रण दिलवा दिए। अगर बाथरूम चली गई तो, दुर्गंध से मर जाएगी।" मनोहर ने नाक बंद कर कहा।

रायसाहब ने तुरंत 50 का नोट निकाल संतोष को फिनाइल और हार्पिक क्लीन की शीशी लाने को कहा। रायसाहब बाथरूम साफ करने घुसे। अब बाहर आने के बाद साबुन की गमक खतम हो गई थी और रायसाहब फिनाइल जैसा महक रहे थे। मनोहर ने उन्हें फिर से नहाकर आने को कहा और जो साबुन उसने पोंछ कर बैग में डाल लिया था उसे फिर से निकालकर दिया। छः महीने में यह केवल पाँचवाँ मौका था जब रायसाहब साबुन लगाकर नहा रहे थे, उसमें भी दो बार तो आज ही लगा लिया था। वैसे वे हमेशा मुल्तानी मिट्टी और बेसन ही बॉडी में लगाकर नहाने के आदी थे। मनोहर कमरे के कोने-कोने की सफाई और अन्य अव्यवस्थाओं पर बिलकुल इस तरह ध्यान दे रहा था जैसे अमेरिकी सुरक्षा एजेंसी वाले अपने राष्ट्रपति की यात्रा के पहले मुआयना करते हैं। बस एक डॉग स्क्वायड की कमी थी। आखिर महिला मित्र आने वाली थी, कमरा ठीक करना ही था। थोड़ी देर में भरत और विमलेंदू पहुँच गए। रुस्तम को भी फोन किया गया था। गुरु ने थोड़ा विलंब से ही आने को कहा था, क्योंकि उसे शाम किसी से मिलने जाना था।

उपस्थित सभी मित्र रंग-बिरंगे बैलून से कमरा सजाने लगे। मनोहर ने बिना अंडा वाला केक लाकर पहले ही रख दिया था। उसमें केवल रायसाहब का नाम लिखवाया था, उम्र नहीं। तभी जावेद खान आ पहुँचा। वह पहले से सभी मित्रों से परिचित ही था बस कभी संतोष और भरत से नहीं मिला था। सबसे पहले संतोष ने नमस्ते किया फिर रायसाहब ने उसका परिचय भरत से कराया। भरत ने आगे बढ़कर जावेद से हाथ मिलाया, जावेद हाथ में हुए दर्द से कराह उठा। उसे लगा जैसे उसका पंजा मगरमच्छ के मुँह में चला गया हो। भरत ने गर्मजोशी से हाथ मिलाया था। असल में यहाँ अक्सर पर्सनालिटी डेवलपमेंट की क्लासेज भी चला करती थीं, जहाँ अपने व्यक्तित्व को निखारने के तरीके सिखाए जाते थे। उन्हीं तरीकों में से एक जो सबसे लोकप्रिय तरीका था, वह था किसी से हाथ मिलाते वक्त उसके पंजों को जी-जान से दबा देना। भले जावेद यह दर्द सहन न कर पाया पर भरत ने बस उसी तरीके से हाथ भर मिलाया था जो उसने सीखा था।

कुछ पल ही बीते थे कि रुस्तम भी पधार चुके थे। रुस्तम अपने साथ एक बड़ा-सा गुलदस्ता लाए थे जो उसके पीछे खड़े उसके साथ आए एक पतले-दुबले लड़के के हाथ में था। रुस्तम ने घुसते ही रायसाहब को गले लगाया और लड़के के हाथ से गुलदस्ता ले रायसाहब के हाथ में रख दिया। रायसाहब पहली बार इतने रंग-बिरंगे फूलों के बीच थे। रायसाहब को मनोहर और संतोष ने पूरे आधे घंटे की मेहनत से तैयार किया था। पहले उनके बदन पर एक लेयर डिओडरेंट की चढ़ाई फिर शर्ट पहना उस पर परफ्यूम की लेयर

चढ़ाई, शर्ट की ऊपरी जेब में गुलाब खोंसा, जावेद खान अपने साथ बर्थडे वाली टोपी ले आया था उसे भी पहनाया गया। रायसाहब को जब टोपी पहनाई गई तो लगा कि राजतिलक के बाद मगध के सम्राट को मुकुट पहनाया जा रहा हो। क्रीम-पाउडर से सनी हुई शर्ट-पैंट पहने और बेल्ट लगाए रायसाहब की मासूमियत और चेहरे पर एक निश्छल बालक वाला भाव देख सच ही कोई भी कह सकता था कि बुढ़ापा आदमी का अंतिम बचपन है। एकदम बुतरू लग रहे थे रायसाहब।

"चलिए, कितने बजे कटेगा केक? और किसी का आना बाकी है क्या?" रुस्तम ने सेनापति की भाँति पूछा।

"हाँ गुरु भाई को आ जाने दीजिए। एतना हड़बड़ी क्या है?" मनोहर ने कहा।

"हाँ हाँ वेट कर लेते हैं।" रायसाहब ने तुरंत कहा। असल में रायसाहब को गुरु नहीं बल्कि उस महिला मित्र का इंतजार था जिसका आना मनोहर ने तय कर रखा था।

"यार मुझे थोड़ा जल्दी निकलना होगा। एक-दो और बर्थडे अटेंड करना है।" रुस्तम ने अपना खास महत्व स्थापित करते हुए कहा।

"अरे गुरु कहीं पी के भूल गया होगा।" रुस्तम ने गुरु के बारे में बड़ी बेअदबी से कहा।

"हाँ, तो बिना केक कटे होगी पार्टी! केक तो तभी कटेगा जब गुरु भाई आ जाएँगे।" संतोष ने बिना एक पल गँवाए कहा।

संतोष को रुस्तम का गुरु के बारे में इस तरह कहना बहुत बुरा लगा था। एक तो रुस्तम के साथ उसका पहला अनुभव भी खराब रहा था। रुस्तम, संतोष को देखते ही पहचान गया था, साथ ही अभी कही गई बात के असर का तेवर भी। रुस्तम ने डिफेंसिव होकर खेलना ठीक समझा। यहाँ अक्सर पुराने सीनियर नए जूनियर के जोश से परहेज करते थे कि कब कौन चेला चोला उतार फेंक क्रांति की घोषणा कर दे, कुछ नहीं पता।

"अरे रायसाहब ये तो वही लड़का है न? क्या भाई रूम मिला था कि नहीं?" रुस्तम ने चेहरे पर जबरदस्त मुस्कान लाते हुए कहा। संतोष ने मन-ही-मन सोचा 'साले! तो क्या अभी तक सड़क पर रह रहा हूँ!'

"हाँ, ये वही संतोष जी हैं। अब तो तैयारी भी मस्त चल रहा है" रायसाहब ने कहा।

रायसाहब की नजर लगातार मनोहर के फोन और दरवाजे पर लगी हुई थी कि बस कब उस अज्ञात बाला का फोन आए और दरवाजे से वह प्रवेश करे। तभी सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आहट हुई। रायसाहब का दिल धड़का। दिल सही ही धड़का था। वह गुरु था। गुरु ने आते ही एक बड़ी-सी मैजिक मोमेंट की बोतल रायसाहब के हाथ में देते हुए उन्हें जन्मदिवस की बधाई दी। फिर एक नजर सबकी तरफ देखा, रुस्तम पर नजर जाते ही कहा, "लो! का रे भोंसड़ी के रुस्तम!, तुम भी आए हो! आज तो रायसाहब भी.आई.पी. हो गए बे! नेता आया है इनके जन्मदिन पर।" कहकर गुरु हँसा। सबने साथ ठहाका लगाया।

"अरे अब आप जो कहिए गुरु भाई, आपके भाई हैं, जैसा समझिए।" रुस्तम ने कहा। लगा ही नहीं कि यह वही रुस्तम है जो अभी कुछ देर पहले बोल रहा था। रुस्तम ने गुरु का तेवर देख निकलना ही बेहतर समझा।

“अच्छा बंधुओ, मैं माफी चाहता हूँ। मुझे निकलना होगा। आप लोग इन्जॉय करें। सबको शुभरात्रि।” कहकर वह अपने पतले-दुबले चेले के साथ निकल गया।

अभी रुस्तम के पाँव दरवाजे के बाहर ही पड़े थे कि मनोहर के फोन पर रिंग टोन बजा “जिसका मुझे था इंतजार, जिसके लिए दिल था बेकरार...वो घड़ी आ गई, आ गई... मैं नेहरु विहार के नाले के पास हूँ, कहाँ आना है?” उधर से आवाज आई।

“हाँ बस रुको, मैं तुम्हें वहीं लेने आता हूँ।” बोलकर मनोहर सीढ़ियों से उतरने लगा, साथ संतोष भी हो लिया। रास्ते में संतोष को ध्यान आया कि वह कपड़े भी नहीं बदल पाया। नाले के पास खड़ी उस सजी-सँवरी लड़की ने संतोष को देखते ही कहा, “हैलो सैंटी जी, कैसे हो?”

“अरे पायल जी, पायल जी आप, लीजिए मुझे मनोहर ने बताया भी नहीं!” संतोष ने खुशी और आश्चर्य के मिले-जुले भाव से कहा।

“बताइए मुझे भी इसने कहाँ बताया कि कहाँ जाना है, कौन-कौन है?” पायल ने मनोहर की तरफ इशारा करते हुए कहा।

“विदिशा जी नहीं आईं?” संतोष ने अपने मतलब का सवाल किया।

“नहीं उसने मना कर दिया। कह दिया अनजान लड़कों की पार्टी में नहीं जाऊँगी। अरे जब आएगी तभी तो पहचान बनेगी न!” पायल ने कहा।

बात करते-करते तीनों अब मकान की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। इधर रायसाहब ने दारू और बीयर की बोतल झट से छुपा दी। गुरु ने अपनी सिगरेट फेंक, डिब्बे को जेब में डाल लिया था। जावेद ने झट से बैड की चादर को सीधा किया और विमलेंदू केक को लेकर कमरे के बीच एक टेबल पर रख उसमें मोमबत्ती लगाने लगा। हालाँकि, केक में बस एक ही मोटी-सी मोमबत्ती रखी गई थी क्योंकि उम्र के हिसाब से मोमबत्ती सजाते तो केक छोटा भी पड़ सकता था।

सीढ़ियाँ चढ़कर पायल का दम फूल चुका था। कमरे के अंदर घुसते ही पायल ने सबको हाय कहा। मनोहर ने झट से सबसे पहला परिचय दिन भर के बेचैन बर्थडे बॉय रायसाहब से करवाया।

“यही हैं हमारे रायसाहब। इन्हीं का आज बर्थडे है।” मनोहर ने कहा।

“जी कृपाशंकर नाम है मेरा।” रायसाहब तपाक से बोले। रायसाहब ने सालों बाद अपना पूरा नाम इस तरह किसी को बताया था। इसके पहले एक बार संतोष के साथ मनमोहिनी को भी पूरा नाम बताया था उन्होंने।

“हैप्पी बर्थडे कृपा, मस्ती में रहो यार!” पायल ने हाथ मिलाते हुए कहा और बैग से एक चॉकलेट और पीले गुलाब का फूल निकालकर दिया।

हाथ मिलाते ही जैसे रायसाहब मतवाला हो गए थे। शरीर में कंपन और आँखों में झिलमिल-सा दिखने लगा। पायल ने जैसे उन्हें एक झटके में बूढ़े से जवान कर दिया था। रायसाहब बोल-बोलकर उनके साथियों ने उन्हें वक्त से पहले प्रौढ़ कर दिया था। पायल के मुँह से कृपा सुन रायसाहब इतने गुदगुदा गए थे कि दिल तो सुबह से ही बच्चा था और अभी बस वे यही सोच रहे थे कि दिमाग भी बच्चा हो जाए और बिना सोचे-समझे जाकर उछलकर पायल की गोदी में लटक जाएँ। वे चार वर्षीय बालक की भाँति उसके गले से

लिपट खेलना चाहते थे। खैर, अगले क्षण केक काटने की पहल करते हुए गुरु ने रायसाहब का ध्यान तोड़ा।

रायसाहब हाथ में चाकू लेकर ऐसे खड़े थे जैसे कोई धार्मिक आदमी मंदिर में श्रद्धा से अगरबत्ती लेकर खड़ा रहता है। दाएँ हाथ में चाकू और बाएँ हाथ को दाएँ हाथ के बाँह को छुए, पैर से चप्पल उतार उन्होंने जैसे ही केक काटा, मनोहर ने मोबाइल पर गाना लगा दिया

'तोरी बतिया दुनाली, तोरी अँखियाँ दुनाली

हैप्पी बर्थडे टू यू..हैप्पी बर्थडे टू यू...

केक काटते ही सबसे पहला टुकड़ा रायसाहब ने पायल को अपने हाथों से खिलाया। पायल ने भी केक उठाकर रायसाहब के गाल पर घस दिया। रायसाहब को इतना आराम फील हुआ जैसे चार वर्षीय बच्चे को तेल मालिश के बाद होता है। मनोहर को पायल का यहाँ इतना खुलना अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि वह जान रहा था कि वह अगर खुल गई तो फिर कोई लाल सिग्नल उसे रोक नहीं सकता था।

सबने केक खाया और नाश्ते के प्लेट सर्व किए गए। सब गोल घेरा बनाकर बैठ गए। इतने में गुरु ने जावेद से कुछ सुनाने की फरमाइश की। जावेद बहुत अच्छा गाता था और बिहार की कला, लोक संस्कृति पर उसकी पकड़ बड़ी गहरी थी। बिदेशिया, छठ के गीत, विवाह संस्कार के गीत, धोबिया, डोमकच, जंतसार, कजरी, चैती, चैता, फगुआ, होली सब सुनाता था और सब पर अच्छी जानकारी भी रखता था।

जावेद खान मूलत: बिहार के छपरा जिले के एक गाँव महादेवपुर का रहने वाला था। पढ़ाई में बचपन से अव्वल था। जब वह इंटर में था तब पिता चल बसे। कुछ खेती लायक जमीन थी, उसी के भरोसे पहले छपरा से स्नातक किया और फिर सिविल की तैयारी के लिए जिंदगी का एक जुआ खेलने दिल्ली आ गया। यहाँ उसने पढ़ाई के साथ बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाना शुरू किया। गाँव में एक बीमार माँ थी। खेत भी लगभग बिक चुके थे, यही कुछ दो बीघा बचा हुआ था। यहाँ पर ट्यूशन से जो पैसा आ रहा था उसी से संघर्ष जारी था। कभी-कभार मौके पर उसके कुछ मित्र भी संभाल देते थे। जावेद सही मायने में रोज जिंदगी से उठा-पटक कर रहा था। वो अपने माँ के बचे हुए दिनों को जिंदगी का हर सुख देना चाहता था। वह पढ़ाई में दिन-रात जी-तोड़ मेहनत भी कर रहा था। अभी-अभी बिहार लोक सेवा आयोग की मुख्य परीक्षा भी दी थी।

"चलिए आप लोगों को भिखारी ठाकुर के प्रसिद्ध नाटक 'बेटीबेयवा' का एक प्रसिद्ध गीत सुनाते हैं -

'रुपिया गिनाय लिहल, पगहा धराय दिहल

चेरिया के छेरिया बनवऊल हो बाबू जी...

"वाह! जावेद भाई, वाह यार!" सबने तारीफ की। "एक वो बटोही वाला बिदेशिया का सुनाइए न जावेद भाई, और पूरा सुनाइए जरा।" मनोहर ने कहा।

"अच्छा हाँ, ये बिदेशिया का गीत है। जब प्यारी बटोही से अपना दु:ख सुनाते हुए गाती है-

'करिके गवनवा भवनवा में छोड़ी कर

अपने परईलन पुरबवा बलमुआ
साँवली सुरतिया सालत बाटे छतिया में
एको नाही पतिया भेजवल बलमुआ
कहत भिखारी नाई आस नइखे एको
पाई हमरा से धोखे के दीदार हो बलमुआ...

जावेद ने फिर विमलेंद्र की फरमाइश पर छठ का भी गीत सुनाया।

काँचही रे बाँस के बहंगिया
बहंगी लचकत जाय
मारब रे सुगवा धनुष से
सूगा गिरे मुरझाय...

जावेद इतना बढ़िया गा रहा था कि संतोष ने भी एक माता के गीत पचरा सुनाने का अनुरोध किया-

असुरन के डरे देवता करे हाहाकार, हे जगतारण मैया
तब लिहलू दुर्गा के अवतार, हे जगतारण मैया
राजा हिमालय देलें बब्बर शेरवा, हे पगरातण मैया
ओहिये पर भईलु असवार, हे जगतारण मैया

पूरा वातावरण जैसे एक तेजमयी उर्जा से भर उठा था। रायसाहब के कमरे की मनहूसियत पहली बार परास्त होकर कमरे से बाहर चली गई थी। तभी इस दिव्य माहौल का आवरण तोड़ते हुए पायल उठी, “ओ बोरिंग गाईज, आमी कि जानी रे बाबा तोमार भोजोपुरी।” पायल ने झुंझलाहट में बांग्ला में कहा।

“अजी प्लीज आप कुछ सुनाइए ना, प्लीज पायल जी प्लीज!” रायसाहब एकदम पूरे बालहठ वाले भाव से बोले।

“वो छोड़ो ना कृपा, यार मुझे यहाँ स्मोकिंग की स्मेल आ रही है। कोई पीता है क्या सिगरेट?” पायल ने सबकी तरफ देखते हुए पूछा। सब समझ गए कि पायल को धुएँ से प्रॉब्लम है इसलिए वह सिगरेट से बचना चाह रही है। मनोहर ने ऐसा कुछ नहीं सोचा। सबने मना कर दिया, “यहाँ तो कोई नहीं पीता पायल जी।” संतोष ने सबकी तरफ से कहा।

“ओ शिट, चलो मुझे अकेले पीना होगा। मनोहर तुम तो लो।” पायल ने अपने बैग से दो अल्ट्रा माइल्ड सिगरेट निकालते हुए कहा।

वहाँ मौजूद सारे लोगों की आँखें खुली ही रह गईं। सब इतने हैरान थे जैसे बीच समुंदर में चूल्हा जला देख लिया हो।

“मैं लाइटर भूल गई, प्लीज कृपा थोड़ा माचिस ला दो यार।” पायल ने कहा।

रायसाहब पहले तो धडफ़ड़ा गए। छाती पर हाथ रखा और फिर दौड़कर किचन से माचिस लेकर आए। उसे जला सीधे पायल के होंठों के बीच घुसे सिगरेट में आग लगाई। उन्हें ऐसा फील हुआ जैसे फुलझड़ी में माचिस मारा हो। संतोष तो जैसे काठ हो गया था।

वह इतने अधिक हैरत में था जैसे उसने मुर्गे को शुतुरमुर्ग को अंडा देते हुए देख लिया हो। एक लड़की को सिगरेट पीते वो भी अपने साथ, इतने नजदीक से देखने का यह पहला मौका था।

"अब आप लोग से क्या छुपना-छुपाना! मैडम बीयर, दारू भी पीती हैं। निकालिए कहाँ लुकाकर रखे हैं। चलिए जल्दी से पीया-खाया जाय। इनको जल्दी इनके कमरे पर भी छोड़ना होगा।" मनोहर ने दर्द भरे नगमे की तरह कहा।

वहाँ बैठा एक भी आदमी समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे, क्या न करे। गुरु की सारी बोल्डनेस और प्रगतिशीलता भी लजाकर बैड के एक कोने में दुबकी थी। भरत का इंग्लिश मीडियम भी कोना ही पकड़े था। विमलेंदू कुर्सी पर चुपचाप जा बैठा था। सबने आँखों-आँखों में इशारा करके तय किया कि पहले पायल को ही खिला-पिलाकर भेज दिया जाय तब बाकी लोग नार्मल होकर खाएँगे-पिएँगे।

रायसाहब ने बैड के नीचे से बीयर का कार्टन निकाला। अभी निकला ही था कि पायल ने एक खोलकर तुरंत गटक लिया। फिर वोदका माँगा और खुद पेग बना तीन-चार पेग पी लिया। सब-के-सब चुपचाप उसे देख रहे थे। बस रायसाहब चुकमुक बैठ उसके अनुसार बर्फ पानी का अनुपात मिला रहे थे। आधा घंटा पीने के बाद पायल ने जाने की इच्छा जताई। सबने बिना एक पल गँवाए सहमति दे दी, सिवाय रायसाहब के। रायसाहब तो कल्पना कर रहे थे कि सब चले जाएँ बस पायल रह जाए। पायल ने जाते-जाते रायसाहब को स्पेशल थैंक्स बोला। रायसाहब झट से एक डायरी उठा लाए और कहा, "पायल जी इस पर अपना ऑटोग्राफ और अपना नंबर लिख दीजिए।"

इस बार चौंकने की बारी पायल की थी। उसने अपनी जिंदगी में नंबर माँगने का इतना अदबदार मध्यकालीन तरीका नहीं देखा था। उसने डायरी में अपना नंबर लिख दिया। नंबर लिखते ही भरत उचक कर डायरी में लिखे नंबरर अपने मोबाइल में सेव करने लगा।

"मैडम मैं भरत हूँ, इंग्लिश मीडियम है मेरा। मैं कॉल करूँगा मैडम।" भरत पीछे से चिल्लाया। पायल तब तक सीढ़ियों से उतर चुकी थी और शायद ही उसने भरत की आवाज सुनी थी। मनोहर और संतोष पायल को छोड़ने गए थे। संतोष रास्ते भर बस पीछे हट पायल को देखता रहा। उसने लड़की का ऐसा प्रकार पहली बार देखा था।

'ये लड़की बोल्ड नहीं, क्लीन बोल्ड है।' संतोष ने सोचा।

## 18.

संघ लोक सेवा की प्रारंभिक परीक्षा के फॉर्म आ चुके थे। पीटी का फॉर्म आना मुखर्जी नगर के विद्यार्थियों के लिए एक घोषणा की तरह होता था जिसके बाद लोग पढ़ाई को लेकर गंभीर हो जाया करते थे। अपनी तैयारी को लेकर सावधान होने का यह सबसे महत्वपूर्ण समय हो जाया करता था। बार-बार पीटी फेल से लेकर इंटरव्यू देकर बैठे, सब समान रूप से जी-जान से पढ़ाई में जुट जाते थे। फॉर्म भरते ही लड़के अप्रवासी पंछी की तरह अपने वतन लौट जाते थे, यानी वे बत्रा प्रवास से वापस अपने कमरे और किताबों की ओर लौट जाते थे। बत्रा चौक पर चहल-पहल केवल उन्हीं लोगों की रहती थी जो उस साल परीक्षा में नहीं बैठने वाले होते थे। इधर कोचिंग की दुनिया का भी फ्लेवर चेंज हो जाता था। जैसे मकरसंक्रांति में दुकान पर स्पेशली तिलकुट और होली पर गुझिया का स्टाल लग जाता है, वैसे पीटी आते ही अधिकतर कोचिंग की टेस्ट सीरीज नाम की स्पेशल मिठाई लॉन्च हो जाया करती थी। कुछ लड़कों में पहले ही दिन फॉर्म भरने का जबरदस्त क्रेज होता था जैसे शुक्रवार को लगी फिल्म का पहला शो देखने का होता है।

मनोहर वैसे ही क्रेजी लोगों में से एक था। उसने संतोष को फोन लगाया और सीधे संघ लोक सेवा आयोग के मुख्य कार्यालय धौलपुर हाउस, शाहजहाँ रोड पहुँच गया। यहाँ आकर फॉर्म भरने में एक अलग तरह की फीलिंग आती थी। लड़के-लड़कियों का यहाँ फॉर्म भरना और साथ में यूपीएससी की मुख्य इमारत दिखाते हुए यह कहना, 'यहीं इंटरव्यू होगा हम लोग का, यहीं मंजिल तक आना है।' एक प्रेरणादायी प्रक्रिया थी। फॉर्म भरने के बाद वहीं बगल में फ्रूट चाट और पावभाजी खाकर वापस कमरे पर आ अपनी तैयारी में जुट जाना। यह एक सेट फॉर्मेट था जो चलन में था। यहाँ आकर फॉर्म भरने से कई लड़कों को आने वाले तनाव के दिनों से पहले दिन भर के लिए अपने चहेते मित्रों-मित्रांगनाओं के साथ एक खूबसूरत दिन गुजारने को मिल जाता था। जिन जोड़ों ने कभी किंग्सवे कैम्प की सीमा नहीं लाँघी थी, वे भी इस दिन फॉर्म भरकर इंडिया गेट की सैर कर आते थे।

मनोहर और संतोष फॉर्म डालकर लौटने लगे। तभी पायल किसी लड़के के साथ फॉर्म भरती हुई दिखी। मनोहर ने उसे नहीं टोका। महीनों से दोनों के बीच बोलचाल बंद थी। वैसे मनोहर अब यह जान गया था कि पायल हर साल एक नए लड़के के साथ ही फॉर्म भरती है। पिछले साल वह मनोहर के ही साथ आई थी। संतोष ने भी पायल को देखा। संतोष मनोहर का दर्द समझ रहा था। मन को बहलाने के लिए वह इधर-उधर की बातें करने लगा और दोनों वापस मुखर्जी नगर आ गए।

मुखर्जी नगर का तापमान बढ़ चुका था। हर कमरे से ज्ञान का धुआँ निकल रहा था। सब अपने-अपने तरीके से अलख जगाए बैठे थे। गुरु-विमलेंदु एक साथ तैयारी कर रहे थे। रायसाहब ने भरत कुमार के साथ जोड़ी बनाई थी। मुखर्जी नगर, नेहरु विहार, गाँधी

विहार, इंदिरा विहार, गोपालपुर, इंदिरा विकास, निरंकारी कॉलोनी, वजीराबाद, परमानंद कॉलोनी, रेडियो कॉलोनी, विजयनगर, क्रिश्चन कॉलोनी ये ऐसे इलाके थे जहाँ वातावरण में ऑक्सीजन से ज्यादा फैक्ट तैर रहे थे। वायुमंडल में नाइट्रोजन, कार्बन डाई ऑक्साइड, हाइड्रोजन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन इत्यादि से ज्यादा मात्रा भूगोल, इतिहास, दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र जैसे विषयों के प्रश्न और उत्तरों की थी। ऐसा जहाँ-तहाँ हो रहे अधिकाधिक टेस्ट सीरीज के उत्सर्जन के कारण था।

कुछ ऐसे ही माहौल के बीच गुरु अपने कमरे पर अखबारों से बने हुए नोट्स पढ़ रहा था कि उसके मोबाइल की घंटी बजी, 'मुसाफिर हूँ यारो... ना घर है...' उसने देखा तो सहसा चकित न हुआ। यह तो वही नंबर था। उसे मयूराक्षी ने कॉल किया था। कॉल रिसीव नहीं कर पाया। आज पूरे डेढ़ साल बाद कॉल आया था मयूराक्षी का। मयूराक्षी को वह तब से जानता था जब वे दोनों साथ-साथ कोचिंग ले रहे थे। मयूराक्षी पढ़ने-लिखने को लेकर समर्पित लड़की थी। शर्मीली, भोली, कम बोलने वाली। घर से यहाँ आने के बाद गुरु ही था जिससे उसने सबसे ज्यादा बातें की थीं। गुरु के अलावा वह किसी को नहीं जानती थी यहाँ, और शायद उसने चाहा ही नहीं था अब किसी और को जानना। दोनों घंटों बैठकर कई मुद्दों पर बहस करते, लड़ते और इस मंथन के बाद निकले विचारों से महाग्रंथ रचते। ऐसे कितने नोट्स आज भी गुरु की मेज पर रखे हुए थे। सब कुछ ठीक चल रहा था। एक दिन गुरु ने मयूराक्षी को फोन लगाया। घंटी लगातार जा रही थी, फोन रिसीव नहीं हो रहा था। वह उसी पार्क में खड़ा हो बार-बार फोन लगाए जा रहा था। तभी उसने जो देखा उस पर उसकी आँखों को विश्वास नहीं हो रहा था। मयूराक्षी ठीक बगल वाली सड़क से गुजर रही थी। वह गुरु का फोन काट रही थी और उसके साथ एक लड़का था। गुरु ने खुद को संभाला और उन दोनों के पीछे जाने लगा। मयूराक्षी अपने फ्लैट पहुँच सीढ़ी चढ़ अपने कमरे की तरफ जाने लगी और लड़का नीचे रह गया। दो मिनट बाद वह लड़का दूध का पैकेट खरीद मयूराक्षी के कमरे की ओर चला गया। गुरु पर जैसे बिजली गिर गई थी। गुरु घंटों उसी पार्क में आकर बैठा। उसी समय मयूराक्षी का फोन आया और उसने बताया कि वह व्यस्त थी इस कारण कॉल नहीं उठा पाई। गुरु ने मुस्कुराते हुए उसका कहा मान लिया और शायद वही उसकी आखिरी बात थी मयूराक्षी से। गुरु ने वापस अपने कमरे पर आ विमलेंदू को यह बात बताई तो उसने भी कहा, "हाँ, वो एक लड़के के साथ रहती है शायद, पर कभी मौका नहीं आया बताने का।"

गुरु अब जान चुका था कि मयूराक्षी कभी उसकी नहीं थी और न कभी होगी। पर उसने इसकी शिकायत कभी मयूराक्षी से नहीं की क्योंकि उसने कभी यह बात मयूराक्षी को बताई ही नहीं थी कि वह उसके लिए क्या महसूस करता है। मयूराक्षी की तरफ से भी गुरु को कभी ऐसा कुछ भी नहीं लगा था। गुरु को आज इसका कारण भी पता चल गया। पर गुरु फिर भी इस सत्य को मानने के लिए तैयार नहीं था, उसका मन नहीं माना। वह सुबह उठा और मयूराक्षी के कमरे पर पहुँच गया। अभी सीढ़ी चढ़ बालकनी में पहुँचा ही था कि वह लड़का दरवाजे से सटे नल के पास ब्रश करता हुआ दिखा। गुरु उल्टे पाँव वापस आ गया। इस बार वह दुखी नहीं था बल्कि निश्चिंत था इस बात को लेकर कि मयूराक्षी ने अपनी जिंदगी चुन ली है। अब बेवजह उसकी जिंदगी में घुसना ठीक नहीं था गुरु के लिए। गुरु नीचे आया, मोबाइल की सिम निकाली और उसे तोड़ वहीं फेंक दिया।

तब से कोई संपर्क नहीं हुआ था दोनों का। इतने सालों की पूरी कहानी नजर के सामने से गुजर गई गुरु के।

अब उसे ध्यान आया कि कॉल आए आधे घंटे हो गया है, उसने अपनी ओर से कॉल लगाया मयूराक्षी को, “हैलो, कैसी हो मयूरी, सॉरी मैंने फोन साइलेंट रखा था सो उठा नहीं पाया। तुम्हें मेरा नंबर कहाँ से मिला?” गुरु ने एक साँस में कहा।

“क्यों? अमेरिका में बस गए हो जो तुम्हारा नंबर भी नहीं मिलेगा, विमलेंदू से लिया था नंबर तुम्हारा। एक साल से है नंबर मेरे पास। मैं तो तुम्हारी कॉल का इंतजार करती रही। पता नहीं किस बात का गुस्सा था तुम्हें। तुमने कभी कॉल नहीं किया तो जाओ मैंने भी नहीं किया।” बात करने का लहजा तनिक भी नहीं बदला था मयूराक्षी का।

“अच्छा चलो झगड़ा मत करो, ये बताओ फिर आज क्यों किया?” गुरु ने हँसकर कहा।

“हाँ आज लगा अब मेरी जरूरत है, मैं ही कर लूँ। तुम्हें तो कभी मेरी जरूरत पड़ती नहीं जो करोगे।” मयूराक्षी ने उलाहने के भाव में कहा।

“अब बात भी बताओ मयूरी या लड़ोगी खाली?” गुरु ने मुस्कुराहट लिए कहा। लग ही नहीं रहा था दोनों सालों बाद बात कर रहे थे।

“देखो मुझे कुछ नोट्स चाहिए और जो भी महत्वपूर्ण इश्यूज हैं उस पर बात कर मैटर तैयार करना है, करवा दोगे न?” मयूराक्षी ने कहा। गुरु ने सोचा, जो उसके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण इशू था उसपे कभी मयूराक्षी से बात नहीं कर पाया बस दुनिया भर के इश्यूज पर बात करता रहा। एक बार फिर उसे वही करना था।

“ठीक है कल से डिस्कशन कर लेंगे, मैं शाम चार बजे उसी पार्क में आ जाऊँगा।” गुरु ने कहकर फोन काट दिया। गुरु की आँखों में कुछ नहीं था, पानी भी नहीं।

## 19.

पीटी के प्रेशर से पूरा मुखर्जी नगर उबल रहा था। हर कान से भाप निकल रही थी और हर दिमाग की सीटी बजी हुई थी। आखिर वह दिन आ ही गया, जिसके लिए लाखों विद्यार्थी देश के कोने-कोने से यहाँ आते थे। आज पीटी का एग्जाम था। किसी के लिए कयामत का दिन तो किसी के लिए जिंदगी को बदलने की शुरुआत का दिन। छः बजे सुबह ही बत्रा पर अपने-अपने सेंटर पर जाने वालों की इतनी भीड़ थी, मानो मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने रामलीला मैदान में मजदूरों की रैली रखी हो।

रायसाहब नहा-धोकर तैयार होकर निकल गए। लगातार फोन पर फोन आ रहे थे। फूफा, मौसी, नाना, दादी, बड़का चाचा, छोटका मामा, सबका फोन आ रहा था और परीक्षा के आशीर्वाद मिल रहे थे। जितना भी अधिक से अधिक संभावित हुआ और आशीर्वाद जमा किया जा सकता था, रायसाहब फोन पर किए जा रहे थे।

इधर संतोष पूजा-पाठ कर तिलक लगा निकला था। 15 दिन पहले ही पिताजी ने कुरियर कर पन्ना और पुखराज की अँगूठियाँ भेजी थीं। उसने उन्हें ऐसे पहना जैसे कोई युद्ध में जाने से पहले कवच पहनता है। माँ ने कुलदेवता और याद्दाश्त में जितने भी देवी-देवता थे सबको याद कर लेने को कहा था। गाँव के जखबाबा पर चढ़ा भभूत पॉकेट में रख लिया था संतोष ने। दादी ने गाँव के भैरव बाबा के मंदिर में चढ़ा अक्षत भी भिजवाया था और कहा था परीक्षा हॉल में घुसते पहले उसे अपने आस-पास छींट दे। बत्रा पहुँच उसे याद आया कि उसने दही-चीनी नहीं खाया था। उसकी नजर मदर डेयरी की दुकान पर गई। एक मीठी दही लेकर झटपट खाया, हालाँकि उसके मन में यह बात आई कि दही तो ठीक था पर पता नहीं चीनी डालकर मीठा किया होगा या किसी और रासायनिक पदार्थ से। रात पिताजी ने एक ज्योतिषी से बात करवाई थी उन्होंने एक मंत्र दिया था और कहा था कि परीक्षा हॉल में लगातार मन-ही-मन इसका जाप करता रहे। संतोष ने अभी रास्ते से ही जाप प्रारंभ कर दिया था। वह समय पर ही सेंटर पहुँच गया। बाहर गेट पर अपना रोल नंबर देख अंदर अपनी सीट पर जा बैठा। बैठने के साथ जेब से अक्षत निकाली और छींटने लगा। तभी पास का एक लड़का अचानक चिल्लाया। एक दाना उसकी आँख में चला गया था। संतोष ने झट से अपनी रुमाल निकाली और लड़के के आँख से चावल का दाना निकाला।

“सॉरी भाई साहब, वो पता नहीं मेरी जेब में कहाँ से चावल पड़ा था थोड़ा, पेंसिल निकालने में देख के झाड़े तो उड़कर पड़ गया, माफ कर दीजिए।” संतोष ने माफी माँगते हुए कहा। सोचा, ‘सब भगवान की कृपा है कि एक लफड़ा होने से बचा वर्ना अभी झगड़ा करता कि एग्जाम देता?’

उधर मनोहर, गुरु, विमलेंदू, मयूराक्षी भी अपने-अपने सेंटर पहुँच चुके थे।

दोनों सत्रों की परीक्षा खत्म होने के बाद संतोष पसीने से नहाया हुआ चेहरे पर

थकान और संतुष्टि का सम्मिश्रित भाव लिए इस तरह निकला जैसे सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष यात्रा के बाद यान से बाहर निकली हों।

दूसरे दिन शाम को सब बत्रा पर मिले। अभी संतोष, मनोहर, गुरु और विमलेंदु पहुँचे थे। सबने एक-दूसरे से स्कोर पूछा। वहाँ पर संतोष का संभावित स्कोर सबसे ज्यादा निकलकर आ रहा था। लोगों को विश्वास भी करना पड़ा था क्योंकि एक तो फ्रेशर का जोश है और ऊपर से इतना आत्मविश्वास है यानी तगड़ा परफॉर्म कर आया था संतोष।

वास्तव में यूपीएससी के प्रश्नपत्रों की यह खासियत होती थी कि परीक्षा देने के चौबीस घंटे तक हर कोई उसका सही जवाब देने के आत्मविश्वास में रहता था। यह आत्मविश्वास और शानदार परफॉर्मेंस का भरोसा धीरे-धीरे सात दिनों में टूटता था, क्योंकि सात दिन से पहले प्रश्नों के सही उत्तर तो सारे कोचिंग और विद्यार्थी भी मिलकर ढूँढ़ नहीं पाते थे। इंटरनेट भी बस सहायता ही करता था, सीधा उत्तर तो गूगल के बाप के पास भी नहीं होता था।

सब चाय पी रहे थे कि तब तक परफ्यूम छिड़के, काला चश्मा लगाए, जींस, टी-शर्ट पहने एक लड़का आया और उन सबसे हाथ मिलाने लगा।

"अरे, अरे ई का हो! जादू! रायसाहब आप? महराज आप तो एकदम लौंडा लग रहे हैं।" मनोहर ने उछलते हुए कहा।

"अरे आप लोग तो जान ले लीजिएगा महराज, आप सब एतना फैशन करते हैं, तनी हम कर लिए तो बवाल काट दिए। ई त अन्याय है।" रायसाहब ने हँसते हुए कहा।

आज पहली बार सबको रायसाहब के साथ खड़े रहकर बात करने में अपने नाक की तरफ से बेफिक्र रहना हुआ था। आज तो पूरा परफ्यूम में नहाकर आए थे रायसाहब। नहीं तो हमेशा पसीने में सनी मध्यकालीन शर्ट दूर से ही जनता को सावधान कर देती थी।

"चलिए ये पेन ड्राइव लीजिए और कोई दस-बीस ठो हॉलीवुड का फिल्म डालिए इसमें।" रायसाहब ने मनोहर के हाथ में पैन ड्राइव देते हुए कहा।

"का? अरे वाह रे मेरे रोटी कपड़ा और मकान के हीरो रायसाहब! आप हॉलीवुड देखिएगा?" गुरु ने उछलते हुए कहा।

"लीजिए, अरे तो इसमें क्या है गुरु भाई, कौन अँग्रेजी में देखना है। सब हिंदिये में तो होता है।" रायसाहब ने कहा।

मुखर्जी नगर में हॉलीवुड की फिल्मों का हिंदी में डब किया संस्करण छात्रों में खूब चलता था। ऐसी फिल्मों को देखना और इन फिल्मों की कारीगरी पर सार्थक चर्चा कर फिल्म के निर्देशक और अभिनेता-अभिनेत्रियों की तारीफ करना लड़कों को एक प्राउड वाली फीलिंग देता था। ऐसी फिल्मों में संवाद के वक्त कलाकारों के शरीर अँग्रेजी में हिलते थे पर आवाज हिंदी में आती थी। हिंदी भी मामूली वाली नहीं, इतनी परिष्कृत और तत्सम शब्दों से सजी भारी-भरकम हिंदी के संवाद होते थे। देखने वाले देखते अँग्रेजी में थे पर सुनते हिंदी में थे। एंजेलिना जॉली, टॉम क्रूज, सलमा हायेक, अल पचीनो, जॉनी डेप के नाम यहाँ इतने फैमिलियर थे मानो वे सब भोजपुरी फिल्मों के

कलाकार हों।

पैन ड्राइव लेकर मनोहर ने रख लिया और कल लेने को कहा। रायसाहब के खुशबूदार रोमियो वाली एंट्री के बाद परीक्षा पर चर्चा बंद ही हो गई थी। रंग-बिरंगी बातों के बाद सब लोग वहाँ से कमरे की ओर निकले। चलते-चलते रायसाहब ने बताया कि उनका रूम पार्टनर तो गाँव से वापस नहीं आया और रूम छोड़ दिया। साथ ही बताया कि अभी बगल वाले कमरे में एक बड़ा अच्छा लड़का गोरेलाल यादव आया है। यह गोरेलाल ही था जिसने रायसाहब के रहन-सहन का पैटर्न ही चेंज कर दिया था।

गोरेलाल यादव आजमगढ़ का रहने वाला था। कभी न छूटने वाला गहरा पक्का रंग, पाँच फीट पाँच इंच की लंबाई, आँखों में रेगिस्तान वाली प्यास, होंठों से लगातार टपकती चाहत, सिर पर काम भर बाल, सामने की दो दाँतों के बीच जोजिला दर्रे जितना फासला, कुल-मिलाकर उसका व्यक्तित्व लोगों को एक नजर में आकर्षित जरूर करता था कि, आखिर यह आदमी कौन है। घरवालों ने सुन रखा था कि आदमी पर नाम का प्रभाव पड़ता है। ऐसा ही सोचकर उसका नाम गोरेलाल रखा गया था पर उसे देखकर साफ दिख रहा था कि उसने इस मान्यता को खारिज करवा दिया था। उसके नाम का सत्ताईस साल के बाद भी उसके व्यक्तित्व पर रत्ती भर भी प्रभाव नहीं पड़ा था। कितनों की तरह गोरेलाल भी यहाँ आईएएस बन अपनी किस्मत चमकाने आया था। किस्मत के साथ खुद को चमकाने का प्रयत्न भी उसका सदा बना रहता था। वह सौंदर्य प्रसाधनों का न केवल विषद ज्ञाता था बल्कि उनका उपयोग भी वर्षों से किए आ रहा था। बाजार की ऐसी कोई सस्ती या महँगी गोरेपन की क्रीम नहीं थी जिसके दावों को उसने अपने गाल पर फेल न किया हो। टीवी विज्ञापनों और अखबारों में गोरेपन का दावा करने वाले सभी क्रीमों ने उसके गाल पर जाकर हार मान ली थी। वह इन क्रीमों के लिए चलता-फिरता आतंक था। उसके गाल कई कंपनियों के लिए प्रयोगशाला भी थे। उसी ने रायसाहब को समझाया था कि केवल ज्ञान से ही व्यक्तित्व का निर्माण नहीं होता है, संवेदना के साथ व्यक्तित्व के शिल्प पर भी ध्यान देना चाहिए। अच्छा कपड़ा-लत्ता पहने तो सियार भी शेर लग सकता है।

गोरेलाल को लड़कियों में उतनी ही रुचि थी जितनी तेंदुलकर को क्रिकेट में। यह अलग बात थी कि यह रुचि उसके मन तक ही सीमित थी। वास्तविक जीवन में वह अभी एक खोजी यात्री ही था। ऐसे कुविचारों से प्रेरित उल्टी-सीधी कल्पनाओं का उसने दिमाग में इतना कूड़ा ढेर कर रखा था कि उसपर चढ़ वह कुंठा के एवरेस्ट पर पहुँच गया था, जहाँ से गिरकर आदमी केवल पाउडर हो सकता था। पर चाहे कुछ भी हो, रायसाहब अभी उसकी संगत की रंगत में रंग गए थे। रायसाहब के जीवन में वह पुनर्जागरण की तरह आया था।

गोरेलाल ने कमरे पर खाना बनाने के लिए एक महिला कुक रखा हुआ था। कुक का नाम आयशा था और उसके दो छोटे-छोटे बच्चे भी थे।

मुखर्जी नगर में खाना बनाने के लिए कुक रखने का चलन खास था। असल में कुक के द्वारा खाना बनवाने से खुद के अंदर एक अधिकारी वाली फीलिंग आती थी। लगता ही नहीं था कि वे विद्यार्थी हैं और उन्हें पढ़ने के साथ झाड़ू-पोछा, कपड़ा धोना, खाना बनाने तक का सारा काम खुद करना है। इन कामों के लिए भी कई विद्यार्थी अलग से एक

कामवाली रखते थे। एक अधिकारी की तरह जीवन जीते हुए तैयारी करने का कॉन्फिडेंस ही अलग होता था।

गोरेलाल के कमरे पर जैसे ही उसकी कुक आती, एक गाना तभी हमेशा मोबाइल पर बजता रहता था, 'हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन।' गोरेलाल के इस प्रेरक गीत का रहस्य किसी को समझ नहीं आता था कि यह गाना आईएएस के लिए बजता था या आयशा के लिए। गोरेलाल बैड से उठ दौड़कर किचन में जाता और जब तक वह बर्तन धोती तब तक गोरेलाल सब्जी काटकर तैयार कर लेता। उसके बाद वह चूल्हा जलाकर उसमें कड़ाही चढ़ाती और अंदर कमरे में जा लैपटॉप खोल बैठ जाती। फिर गोरेलाल उसकी पसंद से खाना बनाता। दोनों साथ खाते और फिर कुक चली जाती। एक बार तो रायसाहब कमरे पर आ गए उस वक्त गोरेलाल कमरे पर नहीं था, पूछने पर कुक ने बताया वह किंग्सवे कैम्प गया है। असल में उस दिन गोरेलाल ने कुक से कहा था कि आज वह बहुत थका हुआ है। इस पर कुक ने उसे बाहर से ही कुछ ले आने को कहा। उसने लगे हाथ उस दिन लच्छा परांठा और चिकनकरी खाने की इच्छा जता दी थी। गोरेलाल वहीं लाने किंग्सवे कैम्प गया हुआ था। एक कुक के लिए इस तरह के समर्पण का अर्थ यह कतई नहीं था कि उन दोनों के बीच कुछ भी गलत था बल्कि यह तो कुछ भी गलत नहीं हो सकने के कारण था। गोरेलाल अपने मिशन में पूरी ईमानदारी के साथ लगा हुआ था। कुक आयशा एक सधे हुए खिलाड़ी की तरह सब सही किए जा रही थी। गोरेलाल कुछ भी गलत नहीं कर पा रहा था। इधर रायसाहब ने भी टिफिन खाना बंद कर दिया था। खुद खाना बनाने लगे थे।

एक दिन नेहरु विहार में सब्जी खरीदते हुए अचानक रायसाहब को पायल दिख गई। पायल बड़ी तेजी से निकली जा रही थी। रायसाहब तब तक पाँच किलो आलू और पाँच किलो प्याज खरीद चुके थे। इतना भारी झोला लेकर एक बार तो दौड़े पर लडखड़ा गए, फिर आधे रास्ते झोला रखकर दौड़े। पीछे से जाकर 'पायल जी, पायल जी' का संबोधन किया। पायल ने पीछे मुड़कर देखा तो मुँह से निकला, "अरे रायसाहब, आप!"

"नहीं, मैं आपका कृपा।" रायसाहब ने अपने सीने पर हाथ धरते हुए कहा। असल में दौड़ने में गले की माला बटन से उलझ जाने के कारण शर्ट के ऊपर की एक बटन टूट गई थी। पायल सुनकर हँस पड़ी।

"और इधर कहाँ आई थीं?" रायसाहब ने इलाके के रायबहादुर की तरह पूछा।

"मुझे न इस बार यूपी पीसीएस देना है उसी के लिए एक फ्रेंड के कमरे पर गई थी कुछ नोट्स लेने। मुझसे इतने फैक्ट इकट्ठा नहीं होते, ऊपर से मेरा सब्जेक्ट हिस्ट्री है"।

"लो जी, अजी मेरा नाम पूछ लेना आप यहाँ से लेकर इलाहाबाद तक। यूपीपीसीएस का मास्टर हूँ, लोग वहाँ से आते हैं हमारे पास नोट्स बनवाने, मेरा भी हिस्ट्री है।" रायसाहब ने आँख चमकाते हुए कहा।

पायल ने रायसाहब को बड़े ध्यान से सुना। फिर वहीं बगल में जूस की दुकान थी, रायसाहब जूस पिलाने की जिद करने लगे। पायल ने मना कर दिया और कहा कि अभी जस्ट बीयर पिया है। रायसाहब को तुरंत सब याद आ गया। उसके बाद पायल ने विदा

माँग बत्रा के लिए वहीं पास खड़ा रिक्शा ले लिया। रिक्शा ज्यों ही चला, रायसाहब ने दौड़कर रिक्शेवाले को दस का नोट थमा दिया और मुस्कुराते हुए वापस आ गए। पायल भी मुस्कुराने लगी।

उसी रात अभी ठीक 11.30 बजे थे। तकिया के नीचे रखा रायसाहब का मोबाइल बज उठा 'बस एक सनम चाहिए आशिकी के लिए...' रायसाहब ने अनमने ढंग से फोन उठाया तो उछल पड़े। फोन हाथ में लिए दौड़े और पहले डियोडरेंट छिड़का। ऐसा इसलिए कि बात करते हुए मन खुशबू से भरा रहे। फोन रिसीव करते ही उधर से आवाज आई, "हैलो, कृपा बोल रहे हो?"

"हाँ, हाँ पायल जी। मैं ही बोल रहा हूँ, अब लगा न थोड़ा अपनापन, तभी आप एकदम से अजनबी की तरह बोल दिए थे।" रायसाहब ने कहा।

"नहीं यार, तब जस्ट पी थी न। सो, थोड़ी तमीज आ गई थी। अच्छा मुझ पर एक कृपा करोगे मेरे कृपा, रॉक स्टार मेरे?" पायल ने मारक अदा से कहा।

"अरे जान ले लीजिए न आप, दे दूँगा। आप आदेश तो करिए, अच्छा वो रिक्शावाला ठीक से पहुँचा दिया था न?" रायसाहब ने फिक्रमंद भाव से कहा।

"हाँ, अरे वो एक फ्रेंड मिल गया था तो उतरकर उसी की बाइक से चली गई।" पायल ने एक हल्का-सा झटका देते हुए कहा।

रायसाहब का कलेजा हल्का-सा स्क्रेच हुआ वह भी यह सोचकर कि साला तब तो फालतू में दस रुपया दे दिए रिक्शवा वाला को।

"अच्छा, आप वो दस रुपया के बारे में मत सोचिएगा कि बर्बाद हो गया, गया तो मेरा गया। कोई बात नहीं, दोस्ती में दस-बीस रुपया देखा नहीं जाता।" रायसाहब ने आखिर अपना दर्द बयाँ कर ही दिया।

पायल को तो पहले कुछ समझ में ही नहीं आया फिर ध्यान आने पर भी उसने अनसुना करते हुए अपनी असली बात कही, "कृपा मैं कल सुबह 10 बजे तुम्हारे कमरे पर आऊँगी। मुझे अच्छे से सारे नोट्स दे देना, ठीक ना?" पायल ने कहकर फोन काट दिया।

रायसाहब तो जैसे बिस्तर पर ही उड़नखटोला जैसा फील करने लगे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि सो जाएँ या जगकर ही सुबह के 10 बजे का इंतजार कर लें। पायल ने जिस तरह खुद उनके कमरे पर आने का फोन किया, वे समझ गए कि आखिर उनका व्यक्तित्व निखर ही गया और पायल की खनखन से उनका जीवन खनखनाने वाला है। आखिर पायल ने दिल दे ही दिया। इस सुरफुर-सुरफुर के बीच रायसाहब को नींद आ गई।

सुबह 9 बजे नींद खुली। जन्मदिन के बाद कमरे में बस एक दिन झाड़ू लगी थी। रायसाहब समझ नहीं पा रहे थे कि खुद को साफ करें या कमरा या बैड की चादर और तकिया का कवर बदलें। समय बहुत कम था। खुद तो खैर पहले से ज्यादा साफ-सुथरे थे पर कमरे का हाल एकदम बुरा था। जल्दी-जल्दी में उन्होंने झाड़ू मारी। अपने पुरातन गंजी और जाँघिया को बैड के नीचे डाला। अपना सफेद तौलिया जो अब काला हो चुका था उसे बाथरूम से हटा बैड के नीचे दबा दिया। कमरे की दुर्गंध से मुकाबला का जिम्मा फिनाइल की गोली को देते हुए लगभग दौड़ते हुए फिनाइल की गोली लाए और तकिया

के नीचे लाकर रख दिया। स्नान करने के बाद वही वाली शर्ट पहन ली जो उन्होंने अपने बड़े भाई की शादी में पहनी थी।

दस बजने में 5 मिनट कम ही थे कि किसी ने दरवाजा खटखटाया, रायसाहब दरवाजे की तरफ दौड़ पड़े। सामने अखबार वाला था। वह पैसे लेने आया था। रायसाहब ने झुंझलाकर उसे बाद में आने को कहा। दरवाजा सटाकर वापस मुड़े कि बाहर किसी की साँस फूलने की आवाज आई। रायसाहब निकले तो देखा पायल हाँफ रही थी।

“अरे आप थक गईं। ठहरिए कोल्डड्रिंक्स लेकर आते हैं।” कहकर रायसाहब नीचे जाने लगे।

“यार पागल हो क्या, हाँफ रही हूँ, पानी दो कोल्डड्रिंक्स नहीं।” पायल ने थोड़ा नॉर्मल होते हुए कहा।

“जी हाँ हाँ, अंदर आइए न! बैठिए न आप!” रायसाहब ने आगे आकर कहा। पानी देकर रायसाहब झट से नीचे जा कोल्डड्रिंक ले आए, साथ ही चिप्स भी। ऊपर आकर तुरंत चूल्हे पर तहरी चढ़ा दिया।

“ये सब क्या कर रहे हो कृपा?” पायल ने मुँह बिचकाकर कहा।

“जी कुछ नहीं आप आराम से बैठिए। आज मुझे मेहमाननवाजी तो करने दीजिए। जन्मदिन वाले दिन इतनी भीड़ थी कि हम बात भी नहीं कर पाए। आज हम आराम से दिल की बात करेंगे। ठहरिए न, हम बैग लेकर जाएँगे और बीयर भी ले आएँगे।” एक बार में रायसाहब ने इतना कह डाला।

“कृपा और मेरे नोट्स?” पायल ने सवालिया अदा से पूछा।

“वो खाना खाने और पीने के बाद मिलेगा।” रायसाहब के कहते ही दोनों हँस पड़े।

पायल के लिए उस कमरे में बैठना नरक के रिसेप्शन में बैठना जैसा लग रहा था। कमरे की दुर्गंध का कोई मुकाबला नहीं था। ऊपर से तकिया के नीचे रखा फिनाइल भी फॉर्म में था। पर क्या करती जब तक रायसाहब नोट्स हवाले नहीं करते, निकलना बेकार था क्योंकि तब वहाँ जाना ही बेकार हो जाता।

“कृपा वाशरूम किधर है तुम्हारा?” पायल ने बैड से उठते हुए कहा।

“जी हाँ, बाथरूम है हमारा। बस यहीं तो है सामने।” रायसाहब ने भी खड़े होकर इशारा किया।

पायल जैसे ही बाथरूम गई इधर बैड पर रखे उसके मोबाइल पर कॉल आया। फोन साइलेंट मोड पर था फिर भी रायसाहब की नजर उस पर चली गयी। स्क्रीन पर लिखा आ रहा था- calling..jan3

रायसाहब ने एक बार फिर गौर से देखा, स्क्रीन पर वही आ रहा था- calling...jan3 रायसाहब तो जैसे बसने से पहले उजड़ गए, खिलने से पहले झड़ गए। रीजनिंग का अभ्यास करते-करते वे इतना जरूर समझ गए थे कि कॉलिंग जान 3 का मतलब है कि इसके कम-से-कम तीन जान तो हैं ही आगे भगवान जाने। अभी बीस सेकंड पहले विचलित हो गए रायसाहब ने तुरंत खुद को संभाला। अपनी उम्र देखी, अपनी शक्ल देखी और उस छोटी-सी, नन्ही-सी, प्यारी-सी लड़की की उम्र और उसके तेवर देखे। इस

तुलनात्मक अध्ययन में उन्होंने पाया कि भला इस फूल-सी जान में मुझ जैसा महाप्राण कहाँ से समाएगा! उन्होंने तय कर लिया कि सब जान बनकर ही थोड़े घूमेंगे इस जान के पीछे। और भी तो रास्ते हैं। उन्होंने तुरंत अपने दिमाग की फॉरमेटिंग चेंज की। तब तक उनको ध्यान आया कि पायल अभी तक बाथरूम से निकली क्यों नहीं है, कहीं दुर्गंध की मार से बेहोश तो नहीं हो गई! अभी वे कुछ सोच ही रहे थे कि पायल नथुने पर रुमाल बाँधे बाहर निकली। रायसाहब ने रुमाल बँधा देखते समझ लिया, लड़की होशियार है। इसने अंदर अपनी जान बचाने का हर संभव उपाय कर लिया था।

"ओह आइए पायल बहन, बहन मैं तो डर गया कि अंदर इतनी देर क्यों लगा दी!" बहन शब्द सुनते ही पायल जितना हो सकता था उतना चौंकी। उसने मन ही में सोचा, 'ई रयवा को क्या हो गया अचानक। अभी तो परमाणु रिएक्टर जैसा गर्म था। अचानक साइबेरिया का बर्फ कैसे हो गया?'

"क्या हो गया यार कृपा?" पायल ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं मेरी प्यारी बहना, प्लीज मुझे भइया बोलकर गले लगा लो। मैं तुम्हारे जैसी बहन खोना नहीं चाहता। मेरी यहाँ कोई बहन नहीं।" रायसाहब एकदम करीब आकर बोले।

यहाँ अक्सर कोचिंग में अपने बगल में बैठी लड़की में लड़का पहले अपनी प्रेमिका देखता है, फिर दुल्हन देखता है, फिर एक अच्छा दोस्त देखता है और अंत में बहन पर आकर समझौता कर लेता है। यह बड़ी सामान्य मनोवृत्ति देखी गई थी कि यहाँ लड़के लड़कियों से उल्टे-सीधे संबंध के लिए ज्यादा परेशान या अधीर नहीं रहते थे। बल्कि किसी भी तरह से संपर्क के लिए ज्यादा लालायित रहते थे। भले वो संपर्क बत्रा पर चाय पीने का हो, पार्क में किताबें लेने-देने का हो, कूपन रिचार्ज करा देने का हो, खाना पहुँचा देने या लेने का हो, घर से आई मिठाई खाने-खिलाने का हो, बीमारी के वक्त दवा पहुँचाने का हो, कमरे पर जाते सब्जी देते जाने का हो या रक्षाबंधन पर कमरे पर राखी बँधवाकर भावुक हो जाने का हो। इन्हें बस संपर्क चाहिए। कोई लालसा नहीं, कोई इच्छा नहीं। इन लड़कों का मन वैसे ही साफ होता था जैसे नवंबर की दोपहर में आसमान होता है।

"वो तो ठीक कृपा भाई पर चलो नोट्स दे दो, फिर आती हूँ रक्षाबंधन के दिन।" पायल ने भी पिंड छुड़ाने वाले मूड में कहा।

"हाँ लीजिए, निकालकर रखा था रात को ही। और सुनिए न जब भी नेहरु विहार आइए, हमारे कमरे पर बेहिचक आ जाया करिए, अपना घर समझिए। अरे भाई का कमरा है, आपका हक है बहन।" रायसाहब ने कलेजे पर पत्थर रखते हुए संपर्क बनाए रखने का आखिरी दाँव खेल दिया था।

जितना बना उतना किया बेचारे ने।

## 20.

पीटी के तनाव से मुक्त होने के बाद सभी हल्का महसूस कर रहे थे। यही वो सबसे अनुकूल समय होता था जब वर्ष भर घर नहीं जाने वाले विद्यार्थी भी एक बार अपने घर-गाँव घूम आते थे। रायसाहब तो पिछले डेढ़ साल से घर नहीं गए थे। माँ ने कई बार पर्व-त्यौहार पर चार दिन के लिए आने को कहा भी था पर पढ़ाई का दबाव था सो, गए नहीं। इसलिए इस बार जाने की सोच रहे थे। इधर जावेद की माँ बहुत बीमार थी। उसने सोचा एक बार मिलकर आ जाऊँ। गुरु के लिए तो घर छूट ही गया था और संतोष ने सोचा रिजल्ट देख लूँ तब जाऊँगा। रायसाहब की जावेद से बात हुई तो दोनों ने साथ ही टिकट ले लिया। रायसाहब को यूँ तो गाजीपुर जाना था पर इलाहाबाद में विश्वविद्यालय संबंधी कुछ काम था, सो, इलाहाबाद तक वे जावेद साथ ही चलते। फिर आगे, जावेद ने पटना का टिकट लिया था, जहाँ से वह आगे बस से छपरा जाता, अपने गाँव महादेवपुर।

तय दिन दोनों नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचे। सिविल का विद्यार्थी जब यात्रा करता हो तो उसकी यात्रा में नियम-कानून का पालन अन्य किसी भी वर्ग के यात्री से ज्यादा होता है। स्टेशन पर गाड़ी किस प्लेटफॉर्म पर आएगी यह पूछने के लिए रायसाहब पूछताछ काउंटर वाली लंबी कतार में खड़े हो गए। सामने बड़े बोर्डों में ट्रेनों के नाम के साथ उनकी जानकारी प्रदर्शित हो रही थी पर रायसाहब ने पिछले महीने ही रेलवे कुव्यवस्था पर एक लंबा आलेख जनसत्ता अखबार में पढ़ा था, जिसमें यह भी लिखा गया था कि रेलवे के द्वारा बोर्डों पर अक्सर सही जानकारियाँ प्रदर्शित नहीं होती हैं। यही सोचकर रायसाहब सीधे पूछने की खातिर लाइन में लग गए थे। जबकि दूसरे लोग कुली से पूछकर रेल के समय और प्लेटफॉर्म का अपडेट लेकर वहाँ पहुँच जा रहे थे। आधे घंटे में जब पूछने का नंबर आया तो बताने वाले ने कहा, “सामने बोर्ड में देख लो, अपडेट कर दिया है।” तब तक भीड़ ने पीछे से धकेलकर साइड कर दिया। रायसाहब तो बैग लिए बोर्ड देखने लगे पर साथ खड़े जावेद ने उनकी इस बुद्धिमत्ता पर सिर पकड़ दिया।

“चलिए कभी-कभार ऐसा होता है रायसाहब। चलिए लाइन का मजा तो लिए।” जावेद ने रायसाहब के झेंपने पर उनको संभालते हुए कहा।

“नहीं, बताइए सीधे बोर्ड देखने को कह दिया, फिर पूछताछ काउंटर का औचित्य ही क्या है? क्या जंगलराज है यहाँ, अरे जब हमलोग को ऐसा जवाब मिलता है तो बताइए आम आदमी का क्या होता होगा?” रायसाहब ने सवाल खड़ा करते हुए कहा।

रायसाहब की बातों से ही स्पष्ट था कि सिविल की तैयारी करने वाले लोगों में अपने को लेकर एक खास वर्ग-चेतना थी। हर लिहाज से मैच करने के बावजूद वे खुद को आम आदमी से अलग वर्ग समझते थे और इस वर्ग को सीधे तौर पर आम वर्ग कहा भी तो नहीं जा सकता था क्योंकि इस देश में दो तरह के वर्ग थे। एक खास वर्ग वह, जो ब्रेड खाता है, एक सामान्य वर्ग वह, जो रोटी खाता है। लेकिन इन दोनों से इतर सिविल के छात्रों

का एक ऐसा वर्ग था जो घर के भेजे पैसे से अभी खा तो ब्रेड रहा था पर आगे की चिंता रोटी की थी। सो, यह वर्ग खुद को खास और आम के बीच रखता था। एक ऐसा वर्ग जो अभी आम है पर तीन स्टेज की परीक्षा के बाद उसमें खास हो सकने की संभावना थी।

रायसाहब और जावेद अपने डिब्बे में अपनी सीट पर जा बैठे थे। ट्रेन समय पर चल पड़ी। जैसा कि अक्सर ट्रेन में होता है, संग बैठे यात्रियों से एक-दूसरे का परिचय शुरू हुआ। जैसे ही इन दोनों ने बताया कि वे आईएएस की तैयारी करते हैं सामने आराम से पैर फैलाकर बैठा एक यात्री झट से पैर समेट अदब से बैठ गया। सामने ही बैठे एक बुजुर्ग ने तुरंत अपना चश्मा निकाला और दोनों को खूब गौर से देखने लगे। बगल में एक औरत जिसका बच्चा चिप्स के लिए रो रहा था, उसने उसका मुँह दाब के उसे चुप करा दिया और इन दोनों को देखने लगी।

यही तो वो बात थी जो हर फील्ड और हर उम्र के पढ़े-लिखे युवाओं को एक बार आईएएस की तैयारी के लिए आकर्षित करती थी। आईएएस की तैयारी करना भर इस समाज के लिए एक भारी-भरकम स्टेटस था। मतलब कि देश के किसी भी पढ़े-लिखे युवा के लिए बेरोजगार रहते हुए भी एक रुतबे, सम्मान और संभावनाओं के साथ जीने का यह भारत में एकमात्र और अधिकतम फलदायी क्षेत्र था। यहाँ तैयारी के नाम पर कोई भी सम्मानपूर्वक अपने सात-आठ साल निकाल सकता था। ट्रेन हो या बस, ऑफिस हो या सड़क, दुकान हो या चौराहा, हर जगह आईएएस की तैयारी करने वाले के प्रति मन में एक श्रद्धा और सम्मान का भाव आपको आसानी से देखने को मिल सकता था। फ्री-फोकट में बिना कुछ किए इतनी बेमतलब की इज्जत और कुछ करके नहीं मिल सकती थी।

रायसाहब और जावेद का वहाँ का माहौल एकदम टाइट हो गया था। अपनी देश-विदेश की भारी-भरकम जानकारी वाली बातों से उन्होंने स्लीपर क्लास के स्टैंडर्ड को फर्स्ट क्लास एसी के लेवल तक पहुँचा दिया था। हर कोई आईएएस की तैयारी, लगने वाले समय, मेहनत और नौकरी मिलने के बाद मिलने वाली सुविधा के बारे में पूछ रहा था। सामने वाले बुजुर्ग ने अपने पोते के लिए तैयारी कैसे कराएँ की सलाह माँगी। बगल का एक आदमी तो कुछ पूछने का साहस ही जुटा रहा था अभी। एक ने आईएएस के वेतन के बारे में पूछा। रायसाहब ने तो सौ कदम आगे जाकर यह भी बताया कि एक जिले के जिलाधिकारी के रूप में उनकी क्या-क्या कार्य-योजना है। यही सब चलते-चलते इलाहाबाद आने वाला था। रायसाहब बैग उठाकर जाने को हुए कि रास्ते भर चुप रहे एक व्यक्ति ने पूरी हिम्मत जुटाकर कहा, "भाईसाहब अपना नंबर तो देते जाइए, कल अगर कहीं डीएम बन गए तो हमें याद रखना।"

"इसमें कौन-सी बात है भाई, आप बेहिचक फोन कर लेना या सीधे ऑफिस आ जाना, मैं पहचान लूँगा। वैसे आप नंबर ले लीजिए।" रायसाहब ने जन-कल्याण को समर्पित एक जमीन से जुड़े अधिकारी की तरह कहा। फिर जावेद उठकर रायसाहब से गले मिला। बाकी के लोग इस तरह स्लीपर क्लास में दो भविष्य के आईएएस को गले मिलता देख रोमांचित हो रहे थे। एक आदमी ने झट मोबाइल निकालकर तस्वीर खींच ली और वहीं-के-वहीं उसको अपना वॉलपपेर बना लिया। अब ट्रेन स्टेशन पर लग चुकी थी। रायसाहब दौड़कर बाहर कूदे और ट्रेन पटना के लिए आगे बढ़ गई।

इलाहाबाद में काम निपटा दूसरे दिन रायसाहब जिला गाजीपुर, गाँव 'धरपटिया' अपने घर पहुँच चुके थे। पूरे डेढ़ साल बाद। इतने दिनों में उनके व्यक्तित्व में काफी परिवर्तन आ गया था। मूँछ खुद साफ करा दी थी और सिर के बाल खुद साफ होने की हालत में थे। पेट निकल गया था, आँखें पाताल में घुसी जा रही थीं। गाँव के बस स्टॉप पर उतर जब घर की ओर बढ़े तो रास्ते में कई लोगों ने उन्हें पहचाना नहीं।

अब बस घर के लिए पगडंडी पकड़ने वाले थे कि सामने श्यामसुंदर मिश्रा मिल गए।

"अहो, अरे कृपाशंकर हो का बेटा?" मिश्रा जी ने कहा।

"हाँ चचा, प्रणाम! कैसे हैं, का चल रहा है?" रायसाहब ने पाँव छूने के बाद कहा।

"अरे बेटा हमरा तो वही जो ट्रेक्टर चल रहा है, खेती पानी सब ठीक है, आपन बताओ। अच्छा कब पूरा होगा ऊ तुम्हारा कोर्सवा आईएएस वाला, अऊर केतना दिन बेटा?" गाँव उतरते ही पहले यक्ष प्रश्न से सामना हो गया था रायसाहब का।

"हाँ चचा, बस अबकी होना ही है, लगे हैं, बस इहे साल और।" रायसाहब कहते हुए निकल गए। घर पहुँच, दरवाजे पर ही पिताजी खड़े थे, प्रणाम किया।

"खुश रहो, आ गए! ई मोंछ-ओंछ काहे मुड़ा दिए जी, का दशा बनाए हो जबरदस्ती जवान बनने के फेर में!" पिताजी ने अपने अंदाज में कहा। तभी आवाज सुन माँ दौड़ती हुई बाहर आई।

"ओह, आप भी गजब आदमी हैं, डेढ़ बरिस पर लड़का घर आया है और दुआरे पर प्रवचन शुरू कर दिए! तनी भी नहीं बुझाता है आपको एकदम!" माँ ने एकदम चुप करा दिया था पिताजी को।

"अरे तो हम कौन खराब बोले, देखो न एकदम चेहरा सूख गया है! ऊपर से मोंछ हटा दिया है तऽ खराब लग रहा था सो बोले, जाओ कुछ बढ़िया से बनाओ, खिलाओ इसको।" आखिर पिता का मन अपनी गलती समझ गया था। बेटे के प्रति पिता के कठोर व्यवहार के आवरण को एक माँ खीरे के छिलके की तरह उतार देती है और शायद पिता इसके लिए तैयार भी रहता है। रायसाहब के पिता जगदानंद राय जी भी कुछ ही मिनट में धराशायी हो ही गए और पिता का कोमल हृदय खुलकर आ ही गया।

"सुनो अभी दस दिन बढ़िया से खाओ-पियो, छोड़ो एकदम पढ़ाई का चिंता, देख नहीं रहे हो बाप के उम्र का दिखने लगे हो अभिए, इसी उमर में!" बोलकर जगदानंद जी बाहर किसी काम से निकल गए।

शाम को रायसाहब गाँव घूमने निकले। बगल मंदिर के पास चबूतरे पर लोग बैठे थे। शाम को यहाँ बड़े-बुजुर्ग उठते-बैठते, देश-दुनिया की चर्चा करते थे। रायसाहब भी वहीं सबसे-मिलने पहुँच गए।

"आओ कृपाशंकर, आओ। सुबे-सुबहे आए हो। बड़े दिन पर आए अबकी?" गाँव के एक मुँहबोले चाचा ने कहा।

"हाँ चाचा, फिर निकलना है, बस एक ही हफ्ता में। बड़ा लंबा-चौड़ा पढ़ाई है आईएएस का।" रायसाहब ने कहा।

रायसाहब के उस बैठक में शामिल हो जाने से अचानक गपशप का लेवल बढ़ना तय था। सब रायसाहब को सुनना चाह रहे थे, साथ ही कुछ जिज्ञासु लोग कई प्रश्न भी पूछना चाह रहे थे क्योंकि उन्हें पक्का यकीन था कि आईएएस की तैयारी करने वाला लड़का तो हर चीज का जवाब जानता ही होगा। बातचीत चल ही रही थी कि दीनानाथ शुक्ल जी ने राजनीति पर हो रही चर्चा के दौरान एक मुद्दा उठाया, "बताइए ये नेता लोग जानते कुछ नहीं लेकिन भाषण पेलने में जाबिर हैं, कोय गाँधी को गरियाता है तो कोय नेहरु को तो कोय मनु-संहिता फाड़ रहा है। ई माया बहन को ही देख लीजिए कि अंबेडकर का मूर्ति बनवाती हैं पर अंबेडकर का जन्म कौन इस्वी में हुआ ये पूछ दीजिए तो माथा घूम जाएगा!"

"हाँ बात तो सही है। बात बहुत मार्केबुल उठाए हैं आप दीनानाथ जी, अच्छा सही में हो कब हुआ था इनका जन्म? अच्छा है एगो जानकारी रखना चाहिए?" सतेंदर राय जी ने कहा।

"अब कृपाशंकर के रहते हमसे का पूछते हैं?" दीनानाथ जी ने अपनी इज्जत बचाते हुए कहा। सब रायसाहब की तरफ देखने लगे। रायसाहब तो जैसे अंदर से काँप गए। मन में उत्तर ही नहीं आ रहा था, बस आ रहा था कहीं डूब मरूँ। सोचा भी नहीं था कि सात साल का बनाया हुआ भौकाल एक मामूली प्रश्न से टूट जाएगा।

"हाँ चाचा बात बहुत गहरी बोले आप। आँ आँ अंबेडकर जी को पढ़ना पड़ता है तब जानिएगा कि क्या चीज थे वो। खाली संविधान नहीं, बहुत कुछ लिखे हैं वो। एक संविधानविद् और कानूनविद् से कहीं ज्यादा बढ़कर उनकी भूमिका एक समाजसुधारक की रही थी। पर आज भी हम अंबेडकर के किए कार्यों का मूल्यांकन करते वक्त बस एक ही पक्ष पर सोचते हैं। जरूरत है अंबेडकर के सर्वपक्षीय मूल्यांकन की। उनकी प्रगतिशीलता के विचारों को लोगों तक पहुँचाने की।" रायसाहब पूरे रफ्तार में बोले जा रहे थे। तभी सतेंदर राय जी ने टोकते हुए कहा, "हाँ बेटा उनका जनम का इस्विया तनी।"

"देखिए न, एकदम से स्लिप कर गया है।" सब रायसाहब की इस बात पर कनविंस होने को थे पर जिज्ञासा तो जिज्ञासा है, सतेंदर ने आखिर पूछ लिया, "अच्छा कृपा बेटा ई नेहरु के पहले मरे थे कि बाद में, मृत्यु कब हुआ था इनका?"

"आपको बताएँ सतेंदर चाचा कि एक-एक आदमी के काम और योगदान पर एतना-एतना पढ़ना पड़ता है न आईएएस में कि उनके जन्म-मरण का ध्यान ही नहीं रहता है हम लोगों को। वैसे भी ई सब आदमी कभी मरता थोड़े है, युगों-युगों तक जिंदा रहता है, हमारे विचारों में जिंदा हैं अंबेडकर, हमारे संस्कारों में जिंदा हैं अंबेडकर, हमारे संविधान के रूप में हमारे मार्गदर्शक की तरह आज भी जिंदा है अंबेडकर। अंबेडकर कभी मर नहीं सकते चाचा, कभी नहीं।" एक जोरदार भाषण के साथ रायसाहब वहाँ से उठे और सबको प्रणाम बोल निकल गए।

वहाँ से चलने के बाद रायसाहब मन-ही-मन सोच रहे थे कि आज तो जरूर यहाँ बैठे हर आदमी के घर उनकी ही चर्चा होनी है। सब न जाने हमारे ज्ञान की शंका पर क्या बोलेंगे! कुछ यही सब सोचते वे वापस घर आ गए। उनको नहीं पता था कि अब उनके घर पर यही चर्चा होने वाली है। तीन घंटे बीत गए। रात में पिताजी घर आए। आते ही सबसे पहले बेटे से खाना के बारे में पूछा। असल में वे नहीं चाहते थे कि सब कुछ होने के बाद

बेटा रात को भूखे सोए। माँ ने बताया, हाँ खा लिया है।

"तब आज मंदिर वाले चबूतरे पर मजलिस में गए थे कृपा?" जगदानंद बाबू ने पूछा। "हाँ थोड़ा मिल आए सबसे।" रायसाहब ने सब समझते हुए धीरे से कहा।

"मिलने गए थे कि सब कुछ माटी में मिलाने गए थे? अरे सात साल से तो नाक कटवा ही रहे हो। अब आज क्या जरूरी था हमरा गर्दन कटवाने का? का कह रहे हैं लोग, सुनो जा के, आईएएस का तैयारी करता है दिल्ली में और अंबेडकर का जन्म और मृत्यु तिथि नहीं जानता है।" जगदानंद बाबू ने चिल्लाकर कहा।

"अरे क्या हुआ, आप तो एकदम सुबहे से पगलाए हैं। काहे कर रहे हैं ऐसा इसके साथ, चुप रहिए आप।" माँ ने फिर ढाल बनते हुए कहा।

"चुप रहिए आप, बोलने दीजिए हमको। अरे ई का पढ़ रहा है, का हो रहा है? बाप बनने का उमर हो गया और अभी तक बाप का सहारा नय छूटा है इनका, ई आईएएस का पढ़ाई करता है। ठीक है नौकरी भाग्य का भी चीज है लेकिन जानकारी तो होना चाहिए कि नहीं ऊ लेवल का। इसको अंबेडकर के जनम का तिथि नहीं पता है, बोलिए?" जगदानंद बाबू बोले जा रहे थे।

"अच्छा भगवान नय था अंबेडकर कि उनका तिथि नय पता है तऽ बड़का भारी जुलुम हो गया, एतना चीज पढ़ता है, एगो बात नहीं याद रहा तऽ का हो गया?' माँ बोलीं।

"जा के देखिए न का हो गया, सिपाही भर्ती वाला को भी ई सब पता होता है और ई एसपी बनेंगे साले। दीनानाथ कह रहा था कि सब लोग हँस रहे थे कि जगदानंद का रुपिया लुटा रहा है इनका बेटा।" जगदानंद बाबू ने पहले से थोड़े धीमे स्वर में कहा।

"बाप रे आप भी ऊ घर उजाड़न दीनानथवा के बात में लगे है, उसका अपना बेटा का किया! थाना में सिपाही है, दारू पीता है, दस तरह के कुकरम करता है। हमरा बेटा कुछ करे न करे कम-से-कम कोनो गलत आदत तऽ नहीं न है। कोनो पीता-खाता तऽ नहीं है न, संस्कार रहेगा त कहियो कुछ कर ही लेगा। आपके हड़बड़ाने से थोड़े जान दे दे कोई।" माँ ने पिता को कम, खुद को ज्यादा दिलासा दिलाते हुए कहा।

रायसाहब बस खटिया पर सिर गोते बैठे हुए थे। वे बस इस सुनामी के गुजर जाने का इंतजार कर रहे थे कि तभी जगदानंद बाबू ने एक बिजली माथे पर गिराते हुए कहा, "देखो अब बहुत हो गया बेटा, चुपचाप कहीं देखो दूसरा नौकरी का जुगाड़। तुम अंबेडकर का जन्मतिथि बता भी देते तो भी हम अब नहीं सकेंगे दिल्ली का खर्चा उठाने। हमारा हालत अब नहीं है वहाँ रख के पढ़ाने का। उसमें भी तुम पढ़े क्या, ये तो पूरा गाँव जान ही गया है, ई आखिरी साल है, अपना देख लो तुम।" कहकर जगदानंद बाबू सोने चले गए।

इधर महादेवपुर में जावेद खान के चाचा ने तांडव छेड़े रखा था। "तुम्हारे अब्बा कुछ अलग से तो छोड़ गए नहीं थे, जो था बस खेती ही थी। अब हम जितना कर सकते थे, किया। तुम्हारे खेत भी संभाले, उपज भी देखी और जितना बन पाया तुम्हारी अम्मी के हाथ दे दिया। अब जो भी खेत बचा है या तो बेच दो या खुद आकर संभालो, हमसे अब नहीं हो पाएगा।" जावेद के चाचा इलियास मियाँ ने कहा।

"पर चचाजान हम 15 बीघा से 3 बीघा पर तो आ गए। सब तो आप ही को बेच

दिया। अब कुछ दिन की बात है, आप संभाल दो, इसमें कौन-सी आफत आ गई है। अम्मी बीमार है इसलिए थोड़ा ज्यादा पैसे माँग रहा हूँ। अगली उपज में हिसाब कर लेना आप।" जावेद ने भरे गले से कहा।

"अरे कैसा हिसाब? वाह! चार लकीरें पढ़ लीं, थोड़ी तालीम ले ली तो इस तरह बदजुबानी पर उतर आए हो। हमने तुम्हारी अम्मी के ईलाज और दवा में न जाने कितने खर्च किए पर आज तक उसका हिसाब नहीं किया। अब बताओ कहाँ से होता ये सब अगर हम हर बात का हिसाब करते तो? अल्लाह जानता है हमने कितना किया, कोई खैरात तो बँटी नहीं थी न यहाँ।" इलियास मियाँ ने हाथ-मुँह चमकाते हुए कहा।

"चचाजान थोड़ा सब्र कर लो, इस बार इम्तिहान दिया है। नतीजे आएँ तो सब वसूल कर दूँगा। कर्ज का कहर लेकर नहीं मरूँगा। चलो एक बीघे की कीमत लगा दो। कल पैसे दे देना।" जावेद कहकर जाने लगा। जावेद बीपीएससी की मुख्य परीक्षा पास कर अपने साक्षात्कार के परिणाम की प्रतीक्षा में था।

"देख लेता हूँ ये नतीजा भी, हूँह! दर्जी का बेटा हाकिम बनेगा। पूरा महादेवपुर देख ही रहा है तुम्हारा इम्तेहान।" कहकर इलियास मियाँ बरामदे से बाहर चले गए।

इलियास मियाँ से बहस के बाद जावेद माँ के पास वापस आ गया। जावेद की मजबूरी का फायदा उठाकर इलियास मियाँ ने उसकी सारी जमीनें औने-पौने दाम देकर खरीद ली थीं। आज भी माँ के इलाज के लिए 1 बीघे का सौदा कर आया था जावेद। अब उसके सपने और महादेवपुर के बीच केवल 2 बीघे का फासला था। यह बिकता कि उसे पढ़ाई छोड़ वापस आना होता। पर बचपन से संघर्ष की विपरीत धारा में अपने सपनों की नाव लेकर निकला जावेद इन लहरों से भी पार पाने को लड़ रहा था। उस दिन वह माँ से लिपटकर खूब रोया था जब माँ के मुँह से निकला था, "पता नहीं दफन होने को दो गज भी जमीन बचेगी कि नहीं, पर तू मत हारना जावेद, अब्बा का सपना पूरा करना। ये जमीन जाने दे। तुझे तो आसमान जीतना है।"

## 21.

जावेद माँ को पीएमसीएच पटना में दिखाकर वापस दिल्ली लौट आया था। रायसाहब भी तीखे-खट्टे अनुभव लेकर घर से वापस आ गए थे। दो-ढाई महीने कब गुजर गए पता ही नहीं चला। रोज बत्रा पर रिजल्ट आने की अफवाहें उड़तीं। एक दिन परिणाम आ ही गया।

मनोहर लगातार रायसाहब को फोन किए जा रहा था। उधर से कोई जवाब नहीं आ रहा था। संतोष को फोन लगाया, पता चला उसका पीटी नहीं हुआ। मनोहर अपना खुद का तो रिजल्ट देखना भी जरूरी नहीं समझा। खुद को लेकर आश्वस्त था कि कोई अनहोनी नहीं होनी है, फेल ही हुआ होगा इस बार भी। गुरु, विमलेंदु सबसे बात हो गई, इनका पीटी होना अपेक्षित ही था। इस बार मयूराक्षी ने भी बाजी मार दी थी पीटी में। मनोहर के कहने पर सभी रायसाहब का फोन ट्राई करने लगे। लगभग पचास से अधिक कॉल जा चुकी थीं लेकिन कोई खोज-खबर नहीं मिल रही थी। मनोहर का दिल घबराने लगा, संतोष भी वहीं आ पहुँचा। तुरंत गुरु को बुलाया और रायसाहब के कमरे पर जाने के लिए सब निकल गए।

मनोहर ने कहा “कुछ उल्टा-सीधा तो नहीं हो गया न गुरु भाई? घर पर भी बहुत बेइज्जत होकर आए थे, परेशान थे।”

“चुप करो, चलो पहले देखते हैं, डर तो मुझे भी लग रहा है” गुरु ने सहमकर कहा।

“पुलिस को 100 नंबर पर डायल कर बता दिया जाय क्या कि फोन नहीं उठ रहा है?” संतोष ने पसीने से नहाए कहा।

“अरे नहीं भाई, पहले चलकर हालात तो जानें, हो सकता है फोन गिर गया हो” गुरु ने कहा।

“फोन गिरता तो कोई उठाकर ऑफ कर देता, इतना रिंग हो रहा है, पर ऑफ भी तो नहीं हो रहा है!” मनोहर ने कहा।

“रायसाहब ऐसा तो नहीं करेंगे, उन्हें लड़ना चाहिए था परिस्थितियों से, आईएएस ही सब कुछ थोड़े था!” संतोष ने संदेह को लगभग सत्य पुष्ट करते हुए कहा।

होनी-अनहोनी की बातें करते तीनों दौड़ते हुए रायसाहब के फ्लैट पहुँच चुके थे। सीढ़ियों पर चढ़ते तीनों के पाँव काँप रहे थे। ऊपर पहुँचे तो दरवाजा सटा हुआ था। अब तीनों में किसी की हिम्मत ही नहीं बँध पा रही थी कि दरवाजा कौन खोले। बड़ी दिलेरी और डर के साथ ज्यों ही गुरु ने दरवाजा खोला देखा एफएम पर एक निर्गुण बज रहा था ‘ये दुनिया, ये दुनिया पित्तल दी...ये दुनिया पित्तल दी...’

रायसाहब नीचे चटाई पर आँख मूँदे नंग-धड़ंग केवल एक आसमानी रंग का जाँघिया पहने घोलटे हुए थे। जाँघिया के ऊपर उग आया सफेद-सफेद धब्बा ऐसा लग रहा था

जैसे भीमबेटका का भित्ति चित्र हो।

गुरु ने आगे बढ़ जाँघिया पर तौलिया रखा और मनोहर दौड़कर उनसे लिपट गया और रोने लगा। वह अभी तक कंफर्म नहीं था कि रायसाहब जिंदा ही हैं। रायसाहब एकदम से अचकचाकर उठे और डर से गए, फिर तीनों को देखा। उनके साथ ऐसा कभी नहीं हुआ था कि वे सोए हों और कोई उनसे लिपटकर रोने लगे। वे भी यह दृश्य देख मनोहर से लिपट रोने लगे। उन्हें पता नहीं चला था कि मनोहर क्यों रो रहा है, पर मनोहर समझ गया कि रायसाहब का पीटी नहीं हुआ है। रायसाहब पहली बार एक साथ तीन बीयर की बोतल गटककर सो गए थे, इसलिए उनको अभी भी कुछ बहुत ज्यादा समझ नहीं आ रहा था। संतोष किचन से नींबू लाया, उनको चटाया गया, थोड़ी देर बाद उनको पूरी तरह होश आया।

"गुरु भाई हम बर्बाद हो गए, ई हमारा लास्ट अटेम्प्ट था, हमारा नहीं हुआ पीटी। सब खतम। अब पीसीएस का सहारा है। पढ़ाई का तरीका बदलना होगा" रायसाहब ने आँसू बहाते हुए कहा।

गुरु ने मुँह पोंछने के लिए गमझा दिया। "आप पढ़ाई का तरीका बाद में बदलना, पहले ई जाँघिया बदलिए, साला यूपीएससी के सलेबस से ज्यादा पुराना हो गया है" गुरु ने कहा।

गुरु के यह कहते माहौल हँसने-हँसाने वाला हो गया। रायसाहब बताने लगे कि उन्होंने सोच रखा था कि पीटी होने के बाद जाँघिया, गंजी और एक तौलिया खरीदेंगे पर अब सारा प्लान खटाई में पड़ गया। रायसाहब का अभी घर फोन करना बाकी था।

"पिताजी को क्या कहें?"

"यही वाला निर्गुण सुना न दीजिएगा पिताजी को, ये दुनिया...ये दुनिया पित्तल दी... ये दुनिया पित्तल दी" सब ठहाका मारकर हँस पड़े।

उस दिन सब अपने कमरे लौट आए। दिन भर तो रायसाहब के चक्कर में निकल गया था। रात संतोष जब कमरे पर अकेला था तब उसे महसूस हुआ कि वह पीटी फेल हो चुका है। उसे रह-रहकर रायसाहब के कहे ये शब्द याद आ रहे थे 'ई हमारा लास्ट अटेम्प्ट था। सब खतम। हमारा नहीं हुआ पीटी', सोचकर थर्रा गया संतोष। घर में उम्मीदों का डैम बाँधकर आया था वह। टूट गया तो सब डूब जाएगा। यहाँ रायसाहब जैसे धुरंधर चूक गए। कैसे करेगा इतना सब वो! संतोष बालकनी में आया। कुछ देर टहला फिर अंदर चला गया। सोचने लगा, एक दिन हमारा भी अटेम्प्ट खतम न हो जाए। इतना सोचा था कि फूट-फूटकर रोने लगा। घंटों रोता रहा। याद आ रहे पिता के शब्द और माँ के दुलार भरे बोल उसके कान फाड़ रहे थे। उसने हाथ कान पर रख लिए। दीवार से टिका रात भर पड़ा रहा।

सुबह सबसे पहले पिता को फोन लगाया। विनायक बाबू अभी स्नान के लिए जा रहे थे, बेटे की कॉल आती देख बाल्टी रख फोन उठाया।

"हैलो बेटा, बोलो कैसे हो?, हैलो, हैलो संतोष" विनायक बाबू बोले जा रहे थे।

लगभग तीस सेकंड तक चुप रहने के बाद उधर से जवाब आया। "पापा वो रिजल्ट आ गया पीटी का, हमारा नहीं हुआ इस बार" बोलकर संतोष फूट कर रोने लगा।

“अरे त इसमें रोने का क्या है! अरे चुप पागल! देखिए, अरे वेबकूफ! अरे चुप! अरे कहाँ है इसकी माँ, देखो भाई, समझाओ इसको, अगली बार हो जाएगा, बेटा रोओ मत, फिर पढ़ो मेहनत से, जरूर होगा।” विनायक बाबू ने पहले तो बेटे के इस तरह रोने से असहज होने के बाद ढाँढस बँधाते हुए कहा।

विनायक बाबू को फोन पर बात करते देख पत्नी कमला देवी दौड़कर आईं और उनके हाथों से फोन लिया “बेटा, चिंता नहीं करना है, भगवान परीक्षा लेते हैं। अगला साल तऽ होबे करगा। तुम वहीं रहो, मेहनत से पढ़ो, एकदम तनिको मत सोचो कि ई बार क्या हुआ। अरे एके बार में कौन बना है कलेक्टर! थोड़ा समय लगबे करता है। पापा हैं तुम्हरे साथ। रोना मत बेटा नय तऽ हम दोनों मर जाएँगे।” कमला देवी की आँखों से भी पानी झर-झर गिरने लगा। फिर विनायक बाबू ने फोन लेकर संतोष को समझाकर फोन रखा और पत्नी की ओर देख वहीं कुर्सी पर खुद भी चुपचाप बैठ गए।

उस दिन दोपहर में संतोष एक बार फिर से गुरु के कमरे पर पहुँचा। “हमारे जैसा लड़का का क्या होगा गुरु भाई? एकदम चूतिया बन गए हैं” संतोष ने पहुँचते ही कहा।

“परेशान क्यों हो इतना, अभी पहला चांस था, पहले चांस में विमलेंदू का भी नहीं हुआ था, अबकी देखो अंतिम चांस में मयूराक्षी का हो गया पीटी। इतना अकबका काहे गए हो?” गुरु ने एक औपचारिक सांत्वना देते हुए कहा।

सिविल सेवा की तैयारी करने वालों से ज्यादा भयंकर आशावादी मानव संसार में और कहीं मिलना मुश्किल था। उसमें भी मुखर्जी नगर नंबर एक पर था। बार-बार फेल होने पर भी लोग एक-दूसरे को लगातार सांत्वना देकर यहाँ रहने लायक बना ही लेते थे। यहाँ किसी को उम्मीद बँधाने या मोटिवेट करने के लिए किसी महापुरुष की जीवनी या कोई अमृत वचन सुनाने की जरूरत नहीं पड़ती थी। बल्कि मुखर्जी नगर के खुद के इतिहास में ऐसे लोगों के किस्से पड़े रहते थे जिनको सुन अभ्यर्थी पुन: लड़ने के उत्साह से भर जाता था।

“बताइए गुरु भाई हम साला क्या किए यहाँ साल भर, अपना विषय छोड़ मनमोहिनी का विषय पकड़ लिए! कोचिंग साला चरवाहा विद्यालय में ले लिए!” संतोष बड़बड़ाए जा रहा था।

गुरु उसकी बातों को सुन बस मुस्कुरा रहा था। गुरु जानता था कि संतोष ने शुरू में ही रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा चुन लिया था। “अच्छा ये बताओ तुम पढ़ कर आए थे इतिहास और यहाँ आकर ले लिए लोक प्रशासन, परीक्षा उसी से दिए, ये गलती कौन भुगतेगा?” गुरु ने कड़ी आवाज में कहा।

“गुरु भाई पैर पकड़ते हैं, एक बार हेल्प कर दीजिए, हमारी पढ़ाई पटरी पर ला दीजिए, हमारे पापा अब बर्दाश्त नहीं कर पाएँगे अगर हम कुछ न कर पाए जल्दी तो।”

“चलो पहले विषय बदलो, अपने पढ़े विषय ही रखो और मैं तुम्हें इतिहास के लिए श्यामल सर के पास भेज रहा हूँ, हिंदी के लिए हर्षवर्धन सर। चुपचाप जा के यहाँ एडमिशन ले लो” गुरु ने कहा।

“गुरु भाई अब फिर से दो कोचिंग का पैसा कहाँ से लाएँगे हम!”

“मेरे बाप हम करेंगे न जुगाड़! सब पैसे के लिए ही भूखा नहीं है। ऐसे भी टीचर हैं

जो विद्यार्थी को विद्यार्थी समझ के पढ़ाते हैं, पैसा भजाने का चेक समझ कर नहीं" गुरु ने दिलासा देते हुए कहा।

संतोष गुरु से लिपट गया था। वह एकदम असहाय-सा फील कर रहा था। वह अचानक रिजल्ट के बाद पागल-सा हो गया था।

संतोष सुबह उठकर गुरु के जगने से पहले ही उसके कमरे पर डेरा डाल बैठा। तैयार हो गुरु उसे लेकर बत्रा पहुँचा। गुरु ने श्यामल सर को फोन लगाया। "प्रणाम सर! सर एक एडमिशन के लिए मिलना चाहता था, अपना मित्र है" गुरु ने फोन पर कहा।

"सीधे क्लास में भेज दो, इसके अलावा कोई बात हो तो आओ, भला एडमिशन के लिए भी क्या मिलना है गुरु? इतने दिन हो गए, कहाँ हो तुम?" श्यामल बाबू ने कहा।

वहाँ से सीधे दोनों श्यामल सर के कोचिंग गए।

श्यामल किशोर सिंह इतिहास के शिक्षक थे। वह मुखर्जी नगर के बाजार के लिए अनफिट पर विद्यार्थियों के लिए बिलकुल फिट आने वाले शिक्षक थे। उनसे मिलकर संतोष को गाँव के मास्टर साब याद आ गए जो महीनों पढ़ाते थे और शायद ही कभी किसी विद्यार्थी को पता चलने दिया कि ट्यूशन पढ़ने की फीस भी लगती है। श्यामल सर के लिए पैसा और जुनून दो अगल चीजें थी। उन्हें पढ़ाने का जुनून था।

गुरु ने श्यामल सर से संतोष की सारी बातें बताईं और सर ने सीधे क्लास करने की स्वीकृति दे दी। तय हुआ कि फीस पर कोई बात नहीं होगी, संतोष जितना जमा कर पाएगा उतना ही दे। संतोष श्यामल सर के पाँव पर गिरने को झुका कि श्यामल सर ने उसे उठाकर गले लगाया और कहा "अबकी बार नहीं चूकने दूँगा, मेरे साथ-साथ मेहनत करना बस, ठीक है न!"

फिर गुरु ने हिंदी साहित्य के लिए हर्षवर्धन चौहान सर से बात की। गुरु उनका शिष्य रहा था। संतोष की आप बीती सुनाकर उनसे अनुरोध कर वहाँ भी फीस की रकम आधी करवा दी। हर्षवर्धन सर अपने खुले विचारों और उदार दिल के लिए जाने जाते थे। उन्होंने संतोष से कहा "भई हमारे यहाँ और भी विषय पढ़ाए जाते हैं और रिसेप्शन पर एक स्मार्ट लड़की भी बैठती है, अब इस बार उसकी बातें सुन विषय मत बदल लेना, नहीं तो आगे मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा, फीस भी पूरी ले लूँगा तब" सुनते ही गुरु और संतोष ठहाका लगाकर हँसे।

दोनों जगह बात हो जाने के बाद संतोष काफी हद तक तनाव से निकल गया था। साल भर यहाँ रहते हुए भी उसने इन शिक्षकों के बारे में इतना कुछ नहीं जाना था। असल में वे शिक्षक प्रचार-प्रसार और पोस्टरों से दूर थे और इन चमकीले-भड़कीले पोस्टरों के बीच श्यामल किशोर या हर्षवर्धन चौहान जैसे शिक्षकों की वजह से ही मुखर्जी नगर अपनी गुणवत्ता के लिए जाना जाता था। ऐसे शिक्षकों की वजह से ही मुखर्जी नगर हर साल आईएएस के लिए परिणाम देने में अव्वल रहा था।

अब संतोष के सामने समस्या यह थी कि, जितनी भी रकम लगनी थी, उतनी भी वह कहाँ से लाए। साल भर में अपने लिए भी कुछ बचाकर उसने रखा नहीं था। सब पार्टी और मस्ती में जा चुका था। उसके पास बस एक ही रास्ता था 'माँ'। उसने साहस कर माँ को फोन लगाया और सारी कहानी और अपनी जरूरत सुनाई। 25 हजार माँगे थे संतोष

ने। एक साथ इतने पैसे की बात थी पर माँ ने उसे निश्चिंत रहने को कहा। शाम को विनायक बाबू के घर में घुसते ही कमला देवी ने बात छेड़ दी। 25 हजार की बात सुनते ही विनायक बाबू अटक गए। तभी उन्होंने बात वहीं काट दी और पैर हाथ-धोकर आँगन की तरफ चले गए। रात को खाना खाते वक्त भी विनायक बाबू इस मुद्दे पर कुछ नहीं बोले न ही कमला देवी ने टोका पर तनाव साफ दिख रहा था। एक खींचतान जारी थी। सुबह विनायक बाबू स्कूल के लिए निकल ही रहे थे कि कमला देवी से रहा न गया "आप कुछ बोल क्यों नहीं रहे हैं पैसा देने की बात पर, बच्चा को जरूरत है तो बीच मँझधार में छोड़ दे कैसे?"

"अब अचानक एतना पैसा कहाँ से आएगा, आप ही बताइए, हम सोच के का करें, हमरा दिमाग तो खुदे खराब हो गया है!" विनायक बाबू कसमसा कर बोले।

"ठीक है आप जाइए, हम कर देंगे व्यवस्था" कमला देवी चुहानी में चली गईं।

"आप कहाँ से कीजिएगा!" विनायक बाबू हैरत में थे।

"गहना है न घर में, पचास हजार का तो होगा ही, बेच के रखते हैं, जेतना जरूरत होगा उसको भेजेंगे" कमला देवी ने चूल्हे पर चढ़ी कड़ाही उतारते हुए कहा।

विनायक बाबू बिना कुछ जवाब दिए चल दिए। शाम को स्कूल से घर लौटने में थोड़ी देर हो गई थी। घर में घुसते ही चाय बनाने को कहा। कमला देवी चाय बनाकर तेजी से रख वापस चली गईं। "जरा फोन ले आइए, सुनिए आप ही कह दीजिए फोन करके संतोष को कि पैसा डाल दिए हैं तीस हजार रुपया" कहकर चाय पीने लगे।

सुनते ही कमला देवी खुशी से उछल फोन उठाने दौड़ीं। संतोष को फोन लगा बता दिया कि पैसा जरूरत से ज्यादा भेज दिया है पापा ने। फोन रख, दौड़कर विनायक बाबू के पास आईं और कहा "आज खीर बना देते हैं, आपको पसंद है बहुत" और कहते हुए चुहानी में चली गईं। बेटे की जरूरत पूरी हो गई थी। उन्हें यह पूछने का ध्यान ही नहीं रहा कि विनायक बाबू इतने पैसे अपने एक परिचित से ब्याज पर लेकर आए थे।

## 22.

गुरु, विमलेंदू और मयूराक्षी सब मुख्य परीक्षा की तैयारी में पूरे जी-जान से भिड़े हुए थे। इस दौरान कभी-कभार गुरु और मयूराक्षी के बीच फोन पर बात और किसी टॉपिक पर चर्चा को लेकर मुलाकात भी हो जा रही थी। जल्दी ही मुख्य परीक्षा का समापन भी हो गया। गुरु और विमलेंदू अपने प्रदर्शन को लेकर संतुष्ट थे। मयूराक्षी को लग रहा था कुछ कमी रह गई। पर अब परीक्षा हो चुकी थी। अब परिणाम का इंतजार था।

संतोष अपनी नई कोचिंग में पूरे मेहनत के साथ पढ़ाई में जुट गया था। इस बार वह कोई कमी नहीं रखना चाह रहा था। संतोष अक्सर गुरु के पास बैठ पढ़ाई पर परिचर्चा कर लेता था। साल भर के बाद उसे भी गुरु के साथ रहने का सही मतलब समझ में आया था। उस दिन संतोष, गुरु के साथ बैठा तैयारी पर ही बात कर रहा था "सलेबस बहुत बड़ा है न गुरु भाई इस पूरे परीक्षा का!" संतोष ने यूँ ही कहा।

"हाँ, पर तुम जितना सोच रहे हो, सलेबस उससे भी बड़ा है मेरे दोस्त" गुरु ने कहा।

"मतलब! समझा नहीं।" संतोष ने कहा।

"इस सूर्य की रौशनी में जितनी भी चीजें दिखाई दे रही हैं, वो सब यूपीएससी का सलेबस है। तुम्हें इसका अध्ययन करना है तो हर वक्त आँख और कान खुले रखो। बस समझो हो गई तैयारी।" गुरु ने दार्शनिक अंदाज में कहा।

"इस फील्ड में कोई कुछ बने-न-बने पर इतना जरूर पढ़-लिख लेता है कि आदमी बन जाता है" संतोष ने आह लेते हुए कहा।

"हाँ सही ही कह रहे हो। लोग 24-25 की उम्र में आते हैं तब लड़के होते हैं, पर जाते हैं 35-37 की उम्र में आदमी बन के" गुरु हँस पड़ा।

संतोष उससे भी ज्यादा हँसा। "अच्छा क्या ये जरूरी है कि सब आईएएस ही बनके अच्छी जिंदगी पा सकता है, दुनिया में तो और भी विकल्प है न गुरु भाई" संतोष ने पूछा।

"हाँ, हजारों विकल्प हैं। पर मानता कौन है! जब यहाँ आया व्यक्ति पूरी तरह फेल नहीं हो जाता तब तक वो मानता ही नहीं है कि और भी विकल्प हैं, जब तक उम्र है और अटेम्प्ट है तब तक लालच ऐसा कि हर लड़का ये कहता मिल जाएगा अरे आईएएस भी तो इंसान ही न बनता है, अब बताओ इतनी आशावादिता वाले क्षेत्र को छोड़ कोई कैसे जाए?" गुरु ने मुस्कुराते हुए एक मखमली-सा कटाक्ष किया था इस फील्ड में होने वाली भीड़ पर।

मुख्य परीक्षा का परिणाम भी आ गया था। गुरु, विमलेंदू और मयूराक्षी साक्षात्कार के लिए योग्य घोषित हो चुके थे। मयूराक्षी ने पहला फोन गुरु को लगाया। "अरे गुरुदेव मेरे मुझे विश्वास नहीं हो रहा है, सुनो मैं मिठाई लेकर पार्क आ रही हूँ, तुम जल्दी

पहुँचो” कहकर मयूराक्षी ने फोन काट दिया।

गुरु कुछ बोल भी नहीं पाया था। विमलेंदू को बधाई दे वह सीधे पार्क के लिए निकला। पार्क के रास्ते में पड़ने वाली मिठाई की दुकान पर ही उसकी नजर मयूराक्षी पर पड़ी। वह उसी लड़के के साथ मिठाई खरीद रही थी। उसने देखा लड़के ने एक मिठाई पहले उसे अपने हाथों से खिलाया और फिर दोनों गले लगे। वहीं से तुरंत मयूराक्षी ने गुरु को फोन लगाया। गुरु सब देख ही रहा था।

“हैलो कहाँ पहुँचे? मैं यहीं मिठाई की दुकान पर ही हूँ, दो मिनट में आ रही हूँ।” पार्क में पहुँच उसने सबसे पहले दौड़कर गुरु को गले लगा लिया।

गुरु क्षण भर तो स्थिर रहा पर फिर एक झटके में उसने मयूराक्षी को अपने से छुड़ा अलग कर दिया। मयूराक्षी अवाक् थी उसके इस व्यवहार पर।

“क्या हुआ तुम्हें?” मयूराक्षी ने सवाल नहीं हिसाब पूछा था।

“कुछ तो नहीं, बस तुम से यही कहना था कि सबके गले लगना ठीक नहीं मयूराक्षी। जिसकी हो, उसी के गले रहो, हम ऐसे ही ठीक हैं।”

“क्या बक रहे हो! पागल हो चुके हो तुम पी-पी के क्या?”

“हाँ, जो देख के सालों पहले अपना नंबर बदला था, जो देख के आज तुम्हें गले से छुड़ाया सब पागलपन ही तो था मेरा!”

मयूराक्षी अब एक ही पल में सारा माजरा समझ गई। सालों का रहस्य अब खुल गया था। गुरु के मन की गाँठ का पता चल गया था मयूराक्षी को। “छि:! तुम पराशर के बारे में बात कर रहे हो, हे भगवान, हे भगवान, ये क्या हो गया! क्या दुनिया है ये!”

“क्यों दुनिया ने क्या कर दिया तुम्हारा, साथ ही तो है तुम्हारे, तुम्हारा पराशर!” गुरु ने तमतमाते हुए कहा।

“शर्म करो गुरु! भाई है वो मेरा छोटा। एक ही माँ के संतान हैं दोनों। छि:!” मयूराक्षी के इस शब्द ने गुरु को दफन कर दिया था।

“क्या? क्या कह रही हो मयूरी” गुरु जैसे काठ-सा खड़ा हो गया।

“भाई है मेरा, साथ रहते हैं हम दोनों। उसका भी कल ही रिजल्ट आया बैंक पीओ का। अगले सप्ताह ट्रेनिंग में जाएगा। हम बचपन से साथ रहे। यहाँ भी एक-दूसरे के साथ थे। छि: क्या क्या बातें! हाय गुरु प्लीज!” मयूराक्षी अब रोने को थी।

गुरु हर अगले पल जैसे जमीन में धँसा जा रहा था। वह अचानक हाथ जोड़े घुटने के बल गिर पड़ा। पहली बार इतना मजबूर था गुरु।

“जाओ गुरु मैंने क्या-क्या सोचा था तुम्हें लेकर। हर बात में खास दिखने वाला गुरु आखिर इस मामले में जीरो ही निकला। एक लड़के-लड़की के रिश्ते को लेकर सोच में तुम भी औरों की तरह एक मामूली लड़के ही निकले गुरु” मयूराक्षी ने वहीं बैठते हुए कहा।

“माफ कर दो मयूरी, प्लीज मैं मरा जा रहा हूँ” गुरु के पास शब्द ही नहीं थे।

“मैं जा रही हूँ गुरु, मुझे बहुत आगे निकलना है। तुम्हें मालूम है तुम्हारे मामूली साबित होने का तुमसे ज्यादा दु:ख मुझे है क्योंकि मैं तुम्हारे साथ आगे निकलना चाहती थी पर अब नहीं। इतने मामूली आदमी के साथ कैसे गुरु?” कहकर वह फिर गुरु के गले से

लिपट गई। दोनों खूब रोए। दोनों समझ गए थे यह आखिरी मुलाकात है शायद।

गुरु को भी अपनी छोटी सोच का प्रायश्चित करना था और इसका सबसे अच्छा रास्ता था, मयूराक्षी को आगे बढ़ने का रास्ता देना। वह अपने मामूलीपन से मयूराक्षी को छोटा नहीं करना चाहता था। जीवन में बस एक बार मामूली होना बड़ा महँगा पड़ गया था गुरु को। उस दिन घंटों बैठे रहे दोनों। बड़ी मुश्किल से दोनों ने अपने-अपने रास्ते पकड़े और कमरे पर लौट आए।

रात को उसने ये बातें विमलेंदू को बताई। सुनकर विमलेंदू भी भौंचक था और शर्मिंदा भी, क्योंकि उसने भी पराशर को मयूराक्षी का प्रेमी ही बताया था। उसने गुरु से सॉरी कहा और खुद मयूराक्षी से बात करने की बात कही। गुरु ने मना कर दिया। गुरु एक बार हारी हुई बाजी फिर नहीं खेलना चाहता था क्योंकि अब वह जीतकर भी हार जाता। नजर कैसे मिलाता जिंदगी भर मयूराक्षी से!

महीना भर गुजरा था। आखिर अंतिम परिणाम का दिन आ ही गया। मुखर्जी नगर में दीवाली और मातम एक साथ आता था इस दिन। जिसकी लॉटरी लग गई तो समझिए जन्म-जन्मांतर के चक्र से मुक्ति जैसा महसूस होता था।

विमलेंदू ने तो इतिहास रच दिया था। पूरे भारत में 42वीं रैंक आई थी उसकी। गुरु को अपना परिणाम पता चल गया था। गुरु परिणाम सूची से बाहर था। पर यह जानकर भी पता नहीं उसका मन क्यों नहीं माना। वह साइबर कैफे में गया और परिणाम की सूची को ध्यान से देखता गया। गुरु खुशी से उछल पड़ा। रैंक 21 के आगे लिखा था मयूराक्षी। गुरु बहुत तेजी से बाहर निकला। फोन निकाला, फिर रख दिया। वह यही सोच रहा था 'मयूराक्षी ने ठीक ही कहा था उसे बहुत आगे निकलना है, मुझ जैसे मामूली आदमी को अब नहीं आना चाहिए उसके रास्ते।"

आज गुरु का मन हल्का हो गया था। पर एक बोझ बरसों से था सिर पर। रिजल्ट की खबर जान बाबू जी लगातार फोन कर रहे थे। गुरु ने पहले ही की तरह फोन निकालकर एक मैसेज टाइप किया "बाबूजी मेरा संघर्ष जारी है" बाबूजी को भेज दिया। दशरथ बाबू के लिए एक मैसेज काफी था। उनके हर सवालों का ऐसे ही किसी एक मैसेज से जवाब देता था गुरु। पूरी दुनिया के आगे शब्दों से परमाणु बम पटक देने वाला गुरु बरसों से अपने पिता के आगे चुप था। बोलकर भला क्या साबित कर सकता था! उसे कुछ करके साबित करना था।

रास्ते में कोचिंग लेकर वापिस आता संतोष मिल गया। "आपका रिजल्ट का क्या हुआ गुरु भाई?" संतोष ने देखते पूछा।

"वही जो देवदास का पारो के घर हुआ था, एकदम दरवाजे पर जा के दम तोड़ दिए हम भी, हाहाहा साला यूपीएससी" कहकर गुरु खूब हँसा।

"सॉरी गुरु भाई!" संतोष ने अफसोस के साथ कहा।

"अरे का हुआ यार। यहाँ जो जीता वही सिकंदर, जो हारा वो फिर रूम के अंदर, आओ अंदर चलें" कहकर दोनों कमरे पर आ गए।

## 23.

विमलेंदू के घर स्वर्ग उतर आया था। पिता भोलानाथ यादव अपनी टूटी कुर्सी पर इंद्र के समान बैठे थे। बेटा जगत जीतकर जो लौटा था। दिन-रात बधाई देने वालों का ताँता लगा हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे रिजल्ट नहीं, श्रीराम लंका से सीता लेकर अयोध्या लौटे हों। पाँच दिन रहने के बाद विमलेंदू वापस दिल्ली लौट आया था। कुछ महीने दिल्ली रह वह ट्रेनिंग के लिए मसूरी चला गया।

रोज की तरह आज भी भोलानाथ यादव खटिया बिछाए दुआर पर बैठे थे कि तभी सायरन की आवाज सुनाई दी। साँय-साँय करती वो आवाज भोलानाथ यादव के घर के और करीब आने लगी। ठीक उन्हीं के दरवाजे पर आकर छः गाड़ियों का वह काफिला रुका। झट से एक पुलिस का जवान उतरकर आया और गाड़ी का दरवाजा खोला। इस सूबे के सबसे प्रभावी कैबिनेट मंत्री तेज नारायण यादव थे।

भोलानाथ यादव तो समझ नहीं पा रहे थे कि कहाँ जाएँ। ऊपर उठें कि नीचे उतरें, वे मारे खुशी के बीच में लटके रहे क्षण भर। खटिया पर से छड़पड़ाकर उठे ही थे कि मंत्रीजी ने हाथ पकड़ वहीं बैठा दिया और खुद भी खटिया पर बैठ गए। “नमस्कार भोलानाथ जी, कैसा स्वास्थ्य है आपका?” मंत्रीजी ने हाथ पकड़े बोला।

“एकदम बढ़िया है हजूर, बस दुआ है, आप सबके आशीर्वाद से बेटा कलेक्टर बन गया, और का चाहिए हम किसान आदमी को!” भोलानाथ ने काँपते स्वर में बोला।

“अरे आशीर्वाद तो दीजिए आप हमारी लड़की को, समधी बनाने आए हैं हम आपको” कहकर गले पर हाथ रख दिया मंत्री जी ने।

भोलानाथ यादव को अपने कान पर विश्वास नहीं हो रहा था। भला भगवान एक साथ इतनी भी खुशियाँ देता हैं कहीं! सोचने लगे कि कितना पुण्य जमाकर आए थे हम पिछले जनम में। “हजुर ई तो आपका बड़प्पन है, बस सोचना क्या है, आपका आदेश है तो सब ठीक है” भोलानाथ यादव ने वही कहा जो दिल ने कहा।

दिमाग तो काम ही नहीं कर पाया था तभी। “चार करोड़ रुपया और बनारस में पेट्रोल पंप और लखनऊ में एक मकान सोचे हैं, कुछ और मन हो तो जरूर बताइएगा भोलानाथ जी। आप समय दे दीजिए एक बार आप सब हमारी बिटिया भी देख लेते मौका निकाल के” मंत्री जी के अंदर का पिता बोला अबकी।

“का सरकार, चार करोड़ देने वाले की बेटी नहीं देखी जाती। अरे ऊ हमारी भी बेटी है। बस एक बार विमल से पूछ लेते मतलब उसको हम बता देते फेर आ जाते हैं रसम करने” भोलानाथ अब समधी बनने के करीब पहुँचकर बोले।

“ठीक है जरूर, जरूर हमें जरा जल्द खबर दिलवाइएगा” मंत्रीजी ने उठते हुए कहा।

“अरे तनी चाय-सरबत तो करते जाते आप?”

“हाहा अरे कोनो वोट माँगने थोड़े आए हैं, बेटा माँगने आए हैं, चाय-सरबत तो अब जिंदगी भर चलेगा आपके यहाँ भोलानाथ जी” कहकर मंत्रीजी कार में बैठ गए। काफिला धूल उड़ाता चला गया।

इधर विमलेंदू ने तो अपना निर्णय ले रखा था। वह बस बाबूजी को खबर ही सुनाने वाला था। उसने ट्रेनिंग एकेडमी में ही अपने साथ ट्रेनिंग कर रही उड़ीसा की रितुपर्णा महापात्रा के साथ विवाह करना तय कर लिया था। दोनों के बीच प्रेम सावन में दूब की तरह बड़ी तेजी से उग आया था। विमलेंदू ने बाबूजी के फोन से पहले ही फोन करके अपना निर्णय सुना दिया था और शादी की तिथि भी तय कर ली थी। भोलानाथ यादव को लगा जैसे किसी ने उडा़कर पर काट लिए हों। मन मसोसकर रह गए। मंत्री जी को खबर भिजवा दी कि बेटे ने नाता तोड़ लिया है हमसे। अपनी मर्जी का मालिक हो गया है।

दो महीने बाद शादी थी। विमलेंदू घर आया। पिताजी, माँजी समेत घर भर की खरीदारी की और सबके लिए भुवनेश्वर का टिकट भी बुक कराया। सारे टिकट एसी फर्स्ट क्लास के थे।

रितुपर्णा महापात्रा उड़ीसा के मुख्य सचिव रहे गजपति महापात्रा की बेटी थी। उसके खानदान में तीन पीढ़ियों से आईएएस ही थे सब। विमलेंदू ने प्यार में सधा हुआ इकरार किया था। बहुत बड़े परिवार का दामाद बनने जा रहा था। पर भोलानाथ यादव की दुनिया अलग थी। उनको उस दुनिया में ही सिमटकर रह जाना था अब। अपने बेटे की शादी में भी एक मामूली बाराती की तरह ट्रेन में सवार हो अपने कुछ गिने-चुने संबंधियों के साथ भुवनेश्वर पहुँचे। अभी तक न लड़की देखी थी, न समधी का मुँह, न उनका घर और सीधे शादी के लिए आना पड़ा था उनको। सबको भुवनेश्वर के एक फाइव स्टार होटल में ठहराया गया।

होटल में ही व्यवस्था का जायजा लेने आए गजपति महापात्रा की पहली बार अपने समधी भोलानाथ यादव से मुलाकात हुई। हँसते हुए हाल-चाल पूछा और शाम को समय से ही शादी के मंडप पर पहुँचने की हिदायत देते हुए चले गए। शाम को वरमाला के समय फोटो खिंचवाते वक्त भोलानाथ यादव की अपने समधी से दूसरी बार मुलाकात हुई। वो भी फोटोग्राफर की कृपा से, क्योंकि उसे एलबम के लिए दोनों समधी का एक ग्रुप फोटो चाहिए था। बाकी संबंधी बस भोलानाथ यादव जी के पीछे चुपचाप घूमते रहे। बहुत हिम्मत जुटाकर खाना खाया और वापस होटल में आकर सो गए। दूसरे दिन भोलानाथ यादव जी की ही विदाई होनी थी। वे एक ऐसी बारात के मुखिया थे जो बिना अपने बेटे और बहू के वापस घर लौट रही थी। बारात वापस जाने के बाद विमलेंदू को लेकर उसके ससुराल वाले अपने घर पहुँचे। रितुपर्णा भी ट्रेनिंग के बाद पहली बार ही घर आई थी। शादी तो होटल से हुई थी सो सब सीधे होटल ही पहुँचे थे।

घर पहुँचते ही दरवाजे पर ही चेरी खड़ा मिल गया। रितुपर्णा ने उसे गोद में लेकर गले लगा लिया और विमलेंदू की तरफ बढ़ाकर उसका माथा चुमवाया। चेरी, रितुपर्णा का सबसे प्रिय कुत्ता था। विमलेंदू जैसे-तैसे अंदर गया और सबसे पहले उसने साबुन से पूरा मुँह और सिर धोया। उसके बाद वह खाने पर पहुँचा। सबने खाना खाया और अपने-अपने कमरे में चले गए। विमलेंदू को एक नए दामाद वाला एहसास जरा भी हुआ नहीं। एक

आईएएस होना जो वह पिछले कई महीने से जीता आ रहा था, यहाँ आकर खत्म हो गया था। अभी कुछ महीने पहले आईएएस बनने के बाद जब आसपास का पूरा गाँव उसे देखने आया था, उससे उसने जो देवत्व पाया था वो यहाँ इतने देवताओं के बीच गुम हो गया था। यहाँ तो नया दामाद के नाम पर भी दो आदमी मिलने नहीं आए थे उससे। अपनी दुनिया का हीरो यहाँ एक साधारण स्तर पर आ गया था। मन-ही-मन बेचैन था वह।

रात को विमलेंदू बिस्तर पर था। तभी रितुपर्णा गोद में चेरी को लेकर आई "डार्लिंग आज मेरी जिंदगी की इतनी खास रात है, मैं चाहती हूँ इस स्पेशल रात को चेरी हमारे ही साथ सोए। मैंने इसे बहुत मिस किया है कई महीने, मेरा बच्चू, मेरा चेरी!" रितुपर्णा का ममत्व अभी देखने लायक था और विमलेंदू का थोथना भी।

दृश्य कुछ ऐसा था कि अब चेरी उन दोनों के ऊपर चारों टाँगें फैलाकर लेटा हुआ था। विमलेंदू कुछ नहीं बोला। वह तो बस यही सोच रहा था कि जिंदगी भर जिस कुत्ते की चूतड़ पर ढेला मार उसे दुआर से भगाते इतना बड़ा हुआ, सोचा भी नहीं था कि अपनी शादी की पहली रात उसी के साथ सोएगा। उसे आज अपने इंसान तक होने का दु:ख हो रहा था। रितुपर्णा रात भर चेरी के पेट में उँगली से गुदगुदी कर उसके बचपन से लेकर अभी तक के नटखटपना के किस्से सुनाती रही और सवेरा हो गया। सुबह विमलेंदू को गुरु की कही एक बात याद आ गई 'जरूरी नहीं कि जो सलेक्ट हो वो करेक्ट भी हो'। 'सही ही कहा था गुरु ने' विमलेंदू ने सोचा। बड़ा बेचैन था विमलेंदू। उसे अपना घर और बाबूजी भी याद आए अचानक।

इधर भोलानाथ यादव अपने परम मित्र विरंची पांडे के साथ चाय पीते बतिया रहे थे। "का करिएगा विरंची जी, बहुत ऊँचा चला गया बेटा हमरा, हमसे छुआता ही नहीं है अब। हम भी उसके साथ-साथ तनी ऊँचा हो गए हैं, सो ऊँचाई का दु:ख का लौकेगा अब नीचे वाले को। सब कहता है भोलानाथ को अब का दु:ख?" भोलानाथ यादव शून्य में देखते बोले जा रहे थे।

"अरे आप भी फालतू टेंशनियाए हैं। एतना बड़ा घर में शादी किया। बहू भी आईएएस मिली और का चाहिए!" विरंची पांडे बोले।

"हाँ विरंची जी पर एक बात बोलें, बड़ा घर में तो किया पर नेताजी के यहाँ करता न, नेता जनता से भी निभा देता है, हम तऽ फिर भी कलेक्टर के बाप थे" बोल के भोलानाथ यादव खैनी रटाने लगे।

# 24.

मनोहर खाना खाकर कमरे पर अखबार पलट रहा था कि रायसाहब की कॉल आई, “अरे मनोहर जी, कहाँ हैं? जरा गुरु और सब लोग आइए न यहाँ तिमारपुर थाना। हमको पुलिस उठाकर ले आया है।” रायसाहब ने जोर से काँपते हुए आवाज में कहा।

“क्या तिमारपुर थाना! अरे आप वहाँ? रुकिए तुरंत आते हैं।” मनोहर बिना कुछ और पूछे कमरे से निकला। बस गुरु को ही फोन कर पाया और जल्द ऑटो लेकर थाने पहुँचा। दोनों को नहीं पता था कि आखिर रायसाहब को पुलिस क्यों उठाकर ले गई। दोनों थाने के अंदर पहुँचे, रायसाहब सामने ही बेंच पर बैठे हुए थे।

“क्या हुआ हो महराज, यहाँ काहे आ गए?” देखते ही मनोहर ने पूछा।

“ओय जरा धीरे बोलो, साइड में जा के बात कर ले।” एक सिपाही बोला। रायसाहब दोनों के साथ थोड़ा बगल हो गए।

“अरे का बताएँ जी। हम तो साला पता नहीं कौन-सा कर्म करके यहाँ दिल्ली आए। सब इज्जत-पानी भी खतमे हो जाएगा लगता है।”

“अरे भाषण कम पेलिए, का हुआ बताओ न यार।” गुरु ने चिल्लाकर कहा।

“हाँ अरे भाई, ऊ हमारा फ्लैट में जो था न गोरेललवा, ऊ साला अपने कुकवा को भगा ले गया है। अब कुकवा का हसबैंड पुलिस लेकर आया और हमसे पूछताछ करने पुलिस हमको यहाँ ले आई।” रायसाहब ने कहा।

“अच्छा, हाय रे साला चूतिया गोरेललवा। आप तो कह रहे थे बड़ा अच्छा आदमी है, आपका तो फैशन गुरु था न?” मनोहर ने चिढ़ते हुए कहा।

“चुप रहो जरा, अच्छा रायसाहब भागा ऊ है, आपको काहे उठाई पुलिस? बिल्डिंग के और लड़कों को क्यों नहीं उठाई? पूरा बात बताइए सच-सच, कुछ छिपाइए मत।” गुरु ने डाँटते हुए कहा।

“हाँ गुरु भाई, असल में बगल वाले हमारा नाम ले रहे थे। हम कभी-कभार उस कुकवा के साथ नेहरु विहार के पार्क में घूमते-उमते थे, एक बार उसका हसबैंडवा भी देख लिया था, उसी में नाम दे दिया होगा। पर हम माई कसम नहीं जानते साला हरामी कहाँ भागा है लेके।” रायसाहब ने अपनी अधूरी प्रेम कहानी सुनाते हुए कहा।

“तब ई है न अजब प्रेम की गजब कहानी, इहो मजा ले चुके हैं जिंदगी का!” गुरु ने गर्दन मनोहर की तरफ घुमाते हुए कहा।

“जा हो रायसाहब हट छि:! आप भी खाँटी भकलंड ही निकले महराज।” कहते हुए मनोहर ने इस तरह देखा जैसे गंगाजल में कीड़ा निकल आया हो।

तब तक थानेदार आ चुका था। रायसाहब से दो घंटे की पूछताछ के बाद पुलिस ने उन्हें छोड़ दिया। ऑटो में रायसाहब बीच में चुपचाप बैठे वापस आ गए। उन्हें छोड़कर

मनोहर और गुरु वापस अपने कमरे की ओर जाने को थे कि बत्रा पर जावेद पर नजर पड़ गई।

"अरे जावेद यार, यहाँ बत्रा पर, इस समय?" गुरु ने ऑटो से उतरकर पूछा।

"हाँ गुरु भाई रेल टिकट के लिए आया हूँ, कोई तत्काल में करवा दे। किसी ट्रेवेल्स वाले को दूँगा। माँ बहुत सीरियस है, पहुँचना ही होगा।" जावेद ने बताया।

"चलो देखते हैं आओ।" गुरु ने कहा। गुरु, मनोहर, जावेद तीनों पास ही के एक ट्रेवल्स वाले के पास गए। किसी भी ट्रेन में टिकट नहीं मिल रहा था। एक टिकट पटना के लिए राजधानी एक्सप्रेस में था, सेकंड एसी का, ट्रेवेल्स वाला पाँच सौ रुपये अलग से माँग रहा था। कुल 2300 रुपये लगने पर टिकट मिल जाता। गुरु और मनोहर ने जावेद की तरफ देखा। जावेद कंप्यूटर की स्क्रीन पर बस टिकट को देख रहा था। जावेद अपनी जेब के बारे में जानता था इसलिए उधर क्या देखता। पॉकेट में बस 800 रुपये थे।

"जल्दी बोलो भई, फिर ये भी खत्म हो जाएगा।" ट्रेवेल्स वाले ने माउस पर हाथ रखते हुए कहा।

"काटो जल्दी, बनाओ टिकट।" गुरु ने तपाक से कहा।

"हाँ हाँ बनाओ यार, सोच का रहे हो तुम, पैसा दे रहे हैं न।" मनोहर ने भी कहा। जावेद की नजर अब गुरु और मनोहर की तरफ थी। टिकट बन गया जावेद का। मनोहर और गुरु ने पर्स खोले और दोनों ने मिलाकर 2300 रुपये टिकट वाले को दे दिए।

"थैंक्स भाई लोग, शुक्रगुजार हूँ, अल्लाह देख रहा है।" जावेद ने भरी आँखों से कहा।

"अबे जाओ जल्दी पहले ट्रेन पकड़ो, सेम डे का टिकट मिला है टाइम कम है, निकलो दोस्त।" गुरु ने कहा।

"हाँ टाइम कम है।" मनोहर ने भी कहा। जावेद तुरंत वहाँ से कमरे पर गया, बैग उठाया और स्टेशन निकल गया।

जावेद दूसरे दिन सुबह के 11 बजे अपने गाँव महादेवपुर के बस स्टॉप पर उतर चुका था। अपनी गली में ज्यों ही घुसा, दरवाजे पर भीड़ लगी हुई थी। यह देख उसके हाथ से बैग छूट गया और वह बेतहाशा दौड़ा। भीड़ को चीरते हुए सीधे सामने पड़ी माँ से लिपटकर एक बार चीखा और फिर चुप हो गया। जावेद को आता देख और भी लोग जमा हो गए थे। सुबह 9 बजे ही माँ दुनिया छोड़ चुकी थी। गुरु और मनोहर ने सही कहा था, "टाइम कम है"। आखिर जावेद टाइम पर नहीं पहुँच पाया। माँ से लिपट एकटक बस माँ को देखे जा रहा था।

"अम्मी पूछो न मुझसे, मेरे नतीजे आए कि नहीं। अम्मी पूछो न कब आसमान जीतूँगा मैं। अम्मी उठ, अम्मी उठो न, उठो न अम्मी।" बोल वह बेसुध पड़ गया।

इलियास मियाँ ने उसे पकड़कर उठाया और पानी पिलाया। जावेद ने इलियास मियाँ की तरफ देखते हुए कहा, "चचाजान अब 2 बीघे तो कभी नहीं बेचूँगा।"

"चुप हो जा बेटे, अल्लाह ठीक करेगा सब। तू संभाल खुद को।" इलियास मियाँ ने कहा। कुछ देर बाद सब जनाजे को सुपुर्दे-खाक करने चले गए। अपनी ही बची जमीन में

लाया था माँ को। माँ को मिट्टी देते वक्त उसकी आँखों में पानी का एक भी कतरा नहीं था। आदमी अंदर-ही-अंदर कैसे सूख जाता है, जावेद की आँखों को देख यह पता चल जाता। जावेद जरा भी नहीं रो रहा था। आखिर किसके लिए रोता? कौन था उसके आँसू पोंछने वाला अब? जो थी वह तो चली गई। अब कहाँ लिपटता! माँ पर मिट्टी डाल और खुद को पत्थर कर जावेद घर वापस लौट ही रहा था कि उसका मोबाइल बजा। बिहार लोक सेवा आयोग का अंतिम परिणाम आ गया था। माँ शायद यह खबर अपने सामने सुनना चाहती थी इसलिए अभी घर भी नहीं पहुँचा था जावेद। जावेद हाकिम बन गया था। खबर गाँव में फैल गई। जावेद वापस माँ की कब्र पर गया और कब्र से लिपट गया और दहाड़ मारकर रोया। पीछे से मौलवी चाचा ने पीठ पर हाथ धरा और कहा, "जावेद तेरी अम्मी तेरे लिए अब्बा से खूब लड़ती थी। देख न आज तेरे लिए अल्लाह से लड़ने चली गई। अल्लाह के पास जाकर तेरे नतीजे भिजवा दिए। तेरे लिए कहाँ जाकर खुशियाँ भेजी उसने। मत रो वर्ना उसका दिल दुखेगा। तेरे लिए फरिश्ता थी वो।" जावेद सोच रहा था, 'हाँ, सच में फरिश्ता थी, बस काश फिर वो वापस आ जाती!' पर फरिश्ते कहाँ लौटकर आते हैं!

गुरु और मनोहर को जावेद के बारे में पता लग गया था। दु:ख भी था और उसके सेलेक्ट हो जाने की खुशी भी। एक बार फिर से पीटी का फॉर्म आ गया था। इस बार गुरु ने फॉर्म नहीं डाला। उसके पास अब एकमात्र अंतिम अटेम्प्ट बचा था। उसने एक साल रुक जाना ही ठीक समझा।

संतोष तो जैसे तैयार ही बैठा था। इस बार उसने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। हफ्ते दो हफ्ते में विदिशा से बात करने के अलावा वह निकल भी नहीं रहा था पढ़ाई छोड़कर। इस बार घर वालों का भी पूरा विश्वास बना हुआ था उस पर। माँ कमला देवी ने संतोष के कलेक्टर बन जाने पर चार धाम यात्रा की मनौती माँगी थी।

संतोष के साथ मनोहर ने फॉर्म डाला था। मनोहर बस फॉर्म डालकर एक सिविल अभ्यर्थी के नैतिक दायित्वों का निर्वहन कर देता था। आज तक कभी अपना रिजल्ट न देखा और न कभी उसे धोखा हुआ। हर बार वही हुआ जो उसने सोच रखा था। फेल, फेल, फेल। पीटी की परीक्षा हो गई। संतोष संतुष्ट था। बिना वक्त गँवाए मेंस की तैयारी में जुट गया। अपने लिखे उत्तर दिखाने के लिए वह रात को भी श्यामल सर के घर पहुँच जाता था।

शुक्रवार की शाम थी वह। बत्रा पर हलचल मची हुई थी। इस बार इतिहास से परीक्षा देने वालों की दुर्गति हो गई थी। सबसे ज्यादा परिणाम लोक प्रशासन से आए थे। संतोष कमरे पर था, किसी ने रिजल्ट आने की जानकारी दी। उठकर रिजल्ट देखने बगल वाले साइबर कैफे में गया। पहली बार में उसकी हिम्मत नहीं हुई पर उसे पता था कि परीक्षा ठीक हुई है उसकी, हिम्मत करके अपना रोल नंबर डाला। वहीं बैठ गया संतोष। स्क्रीन पर नॉट क्वालीफाइड लिखा आ गया। अब संतोष में ताकत नहीं बची थी कि उठकर कमरे तक आए। पैर लडख़ड़ा रहे थे। आँखों में अँधेरा था। 'बहुत चूतिया फील्ड है यूपीएससी, पढ़कर मर गए साला पर पीटी नहीं हुआ।' संतोष बुदबुदाने लगा। वह जैसे-तैसे खड़ा हुआ और सीधे यमुना नदी के पुल की तरफ जाने लगा। उसे खुद पता नहीं था कि वह अब क्या करने वाला है। गुरु रास्ते की दुकान पर खड़ा सिगरेट पी रहा

था। “इधर कहाँ जा रहे हो?” गुरु ने पूछा।

“मरने, चलना है क्या?” संतोष ने बिना उसकी तरफ देखे कहा।

“पगला गए हो का यार, का बकचोदी बक रहे हो, अरे क्या हुआ?” गुरु ने गुस्से में कहा।

“मरा लिए हम अपनी। फिर भी पीटी नहीं हुआ। लो कहाँ गया आपका ज्ञान गुरु भाई? साला टीचर बदल लो, विषय बदल लो, मेहनत करो सब तरह से तो करके देख लिए। कहाँ गया रिजल्ट। बताओ न आप ही?” संतोष ने चिल्लाते हुए कहा।

“तो क्या हुआ। अभी तो तुम्हारे पास और प्रयास है न! आगे हो जाएगा।” गुरु ने मुखर्जी नगर की रटी-रटाई लाइन बोली।

“वाह रे गुरु भाई वाह! लीजिए, लीजिए साला हमारा फोन। बोलिए न हमरे बाप को कि पीटी नहीं हुआ इस बार भी आपके बेटे का, अगली बार हो जाएगा। अरे कैसे मुँह दिखाएँगे? हमारे बाप ने कर्जा लेकर हमको पैसा भेजा। इतना कष्ट से खर्चा आता है और साला हम कुछ नहीं कर पाए।” बोलकर दहाड़ मारकर रोने लगा संतोष।

गुरु ने बड़ी मुश्किल से उसे समझा-बुझाकर शांत किया और कमरे पर लेकर आया। संतोष पूरी तरह एकाकी हो गया था। फ्रस्ट्रेशन शब्द का अर्थ उसने अब जाकर समझा था। दिन-रात यही चिंता कि घर किस मुँह लौटेगा। न किसी से बात करता न कहीं जाता। कुछ महीने यूँ ही गुजरे।

एक दिन विनायक बाबू का फोन आ ही गया आखिर। “हैलो बेटा क्या हाल है?” पिता ने पूछा।

“जी ठीक हूँ पापा, वही पढ़ाई चल रही है।” संतोष ने धीमी आवाज में कहा।

“आखिर क्या सोचे हो आगे?” पिता ने अगला सवाल किया।

“मतलब, जी क्या बस फिर देंगे, अब रास्ता भी तो कुछ नहीं है पापा, कहाँ जाऊँ, क्या करूँ? केवल बीए करके रह गया आईएएस के चक्कर में।” संतोष ने एक साथ जवाब और सवाल दोनों कहा।

“देखो बेटा हमसे जितना भी बन पाया हम किए तुम्हारे लिए, कर्जा पैसा सब लिए। अब भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिला। तुम्हरे भाग में आईएएस बनना नय लिखा है। ज्योतिषी भी कुंडली देखा तो बताया सलेक्शन मुश्किल है। उतना पर भी अगर हमारे पास पैसा होता तो हम पक्का वापस नहीं बुलाते, पर अब नहीं सकेंगे। आ जाओ अब वापस।” पिता विनायक सिन्हा ने अपनी बात कह दी थी।

संतोष आँखों में आँसू लिए सब सुनता रहा। “ठीक है पापा हम चले आएँगे, आप टेंशन मत लीजिए।” संतोष फोन काट चुका था।

“हाँ यहीं से पढ़ना और एसएससी बैंक का भी फॉर्म...हैलो...हैलो...” फोन तो संतोष काट चुका था।

फोन रख वह लेटा ही था कि एक बार फिर घंटी बजी। इस बार रायसाहब थे फोन पर, “हैलो संतोष जी, हम जा रहे हैं दिल्ली छोड़कर। लास्ट बार मिल तो लीजिए।” रायसाहब ने बड़े भावुक स्वर में कहा।

“कहाँ हैं आप अभी?” संतोष ने पूछा।

“बस चार बजे की ट्रेन है, सबसे मिल लिए हैं। बस अब आपसे और मनोहर से मिल लें। बत्रा आ रहा हूँ।”

रायसाहब का आईएएस में प्रयास खत्म ही हो चुका था, पीसीएस भी नहीं हो पा रहा था। घर से वापसी के साथ-साथ शादी का दबाव भी अब बढ़ने लगा था। रायसाहब ने बीएड कर ही रखा था। अपने गृह राज्य में मास्टरी का फॉर्म भी डाल आए थे। पीसीएस से अभी भी उम्मीद थी। बड़ी मुश्किल से अपने पिता को इलाहाबाद में कुछ दिन रहने देने के लिए मनाया था। रायसाहब का अब दिल्ली का अध्याय समाप्त हो रहा था।

“अलविदा बुढ़ऊ, अलविदा।” मनोहर आते ही रायसाहब के गले लग कहा।

“हाँ मालिक अब हम तो बुढ़ा गए, हमसे नहीं हुआ ई साला आईएएस। अब इजाजत माँग लिए हैं दिल्ली से।” रायसाहब ने कहा।

“रायसाहब, बहुत याद आइएगा आप यार।” संतोष ने कहा।

यह बहुत भावुक क्षण था। मुखर्जी नगर आए लड़कों का बिना अपने सपने लिए बस अपने लाए सामान के साथ बेरंग लौटना सबसे ज्यादा कठिन समय होता है।

“खैर, बहुत कुछ सीखे यहाँ और ये भी जाने हैं कि टैलेंट ही सब कुछ नहीं है भाग्य में भी होना चाहिए तभिये होगा। साला बोलिए हमरे जैसे किताबी कीड़ा का नहीं हुआ, गुरु जैसा लड़का रह गया है। भाग्य में नहीं है तो कभी नहीं होगा अब आप लोग भी देखिए क्या होता है? हमारा तो साला सब करम हो गया। दारू, मुर्गा, सिगरेट से लेकर थाना, पुलिस साला सब देख लिए।” रायसाहब ने शॉर्ट में अपना दिल्ली अनुभव बाँट दिया था।

“अरे कुकवा वाला नहीं बोले।” मनोहर के बोलते ही सब हँस पड़े।

“हट मर्दवा आप भी! हाहाहा।” रायसाहब लजा गए।

इन्हीं ठहाकों के बीच रायसाहब ने विदा ली। संतोष कमरे पर आ गया। आज ही की तो बात थी जब पिताजी ने संतोष को भी घर बुलाया था। रायसाहब को इस तरह खाली हाथ घर जाते देख वह काँप उठा। संतोष के दिमाग में एक ही बात गूँज रही थी कि ज्योतिषी ने उसके लिए भी कह दिया था कि आईएएस बनना अब भाग्य में नहीं है। एक बार गुरु को श्यामल सर ने भी बताया था कि लड़का मेहनती है पर शायद आईएएस बहुत मुश्किल है संतोष के लिए। आज रायसाहब भी जाते-जाते संतोष को हिला गए थे। संतोष ने अगले ही पल मेज पर रखी स्याही की बोतल उठाई और अपने हथेली पर गिराकर उसे पोत लिया। उसने अपनी पुरानी भाग्य की रेखाएँ मिटा दी थीं। अब उसका हाथ सपाट था, कोई रेखा नहीं। उसने कसम खा ली, इस पर फिर से अपना भाग्य लिखेगा। उसने तभी तय कर लिया कि चाहे पापा पैसे भेजें या न भेजें पर घर वापस नहीं जाएगा अभी। वह रायसाहब के रास्ते नहीं चलेगा। उसने तय कर लिया था, वह अपने रास्ते दौड़ेगा, छोड़कर भागेगा नहीं।

# 25.

समय मुट्ठी में रेत की तरह फिसला जा रहा था। मुखर्जी नगर में साल कैसे गुजर जाता था, पता ही नहीं चलता था। कमरे से कोचिंग और कोचिंग से कमरा आते-जाते साल भर का समय बस घंटों भर का सफर लगता था। समय का पहिया रुकता नहीं, यह सच यहाँ रहने वाले विद्यार्थियों से बेहतर भला कौन जानता! यह पहिया न केवल रुकता नहीं, बल्कि कितने नसीबों को अपने नीचे कुचलता जाता और कई की तकदीर इसी पहिए पर सवार होकर बहुत आगे निकल जाती। मुखर्जी नगर का संपूर्ण काल-चक्र पीटी, मेंस और इंटरव्यू के बीच ही घूमता रहता था।

इधर संतोष ने दिल्ली में रहना तय तो कर लिया था पर अब उसके लिए दिल्ली में रहना आसान नहीं था। पिताजी ने अपनी तरफ से साफ कह ही दिया था कि अब दिल्ली पढ़ाई के लिए खर्च भेजना उनके बूते की बात नहीं। संतोष ने भी अपनी ओर से वापस आने के लिए हाँ तो कर दिया था पर महीने ऐसे ही गुजरते जा रहे थे और पिताजी यह सोचकर हर महीने पैसे भेज दे रहे थे कि शायद अगले महीने संतोष वापस आ ही जाएगा। महीने में भेजी जाने वाली राशि आधी हो चुकी थी। कुछ पैसे माँ अपनी ओर से बचाकर भेज दे रही थी, जिसके बारे में संतोष के पिताजी को भी पता नहीं था। असल में माँ ने ही ढाँढ़स देकर संतोष का दिल्ली में टिकने का मनोबल बनाए रखा था। संतोष इस बीच काफी तनाव में रह रहा था। एक तो आईएएस में दूर-दूर तक सफलता की कोई संभावना नहीं दिख रही थी, दूसरी तरफ उसके पास इतिहास से स्नातक करने के अलावा कोई अन्य पारंपरिक डिग्री भी नहीं थी जिसके आधार पर वह और भी कहीं संभावना तलाशे। उसके पास वकालत, पत्रकारिता या एमबीए जैसी आपात डिग्री भी नहीं थी जिसके सहारे वह कहीं और किसी क्षेत्र में हाथ-पाँव मारे।

संतोष तो देश के लाखों छात्रों की तरह पुरातन विश्वविद्यालयीय अध्ययन परिपाटी का पारंपरिक छात्र था जो या तो संयोग से आईएएस बनता है, या फिर कुछ नहीं बनता है। आज के समय जब देश में आयोजित किसी भी क्षेत्र की प्रतियोगिता परीक्षा में विज्ञान, तकनीकी, गणित और अँग्रेजी का महत्व बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगा था ऐसे में इन विश्वविद्यालय से इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र जैसे विषयों को लेकर पढ़े छात्रों की डिग्रियाँ बस शादी के कार्ड में जिक्र करने के काम आती थीं, अन्यत्र कहीं नहीं, जैसे चिरंजीवी फलाना, बी.ए.एम.ए.एमफिल. इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।

संतोष भी अगर यहाँ कुछ कर न पाता तो बाकी सारे दरवाजे बंद ही प्रतीत हो रहे थे। ऊपर से उस पर जल्द-से-जल्द दिल्ली छोड़ने का दबाव भी था। इन्हीं सब परेशानियों के बीच पढ़ाई को जारी रखते हुए एक और परीक्षा के लिए खुद को तैयार करना इतना आसान नहीं था। पर नशा है आईएएस की तैयारी। जब तक उम्र और अटेम्प्ट है, एक बार आया लड़का ये दोनों गँवाए बिना मुखर्जी नगर से शायद ही वापस

जाता था। संतोष ने भी आखिर जैसे-तैसे करके खुद को तैयार कर ही लिया था, इस बार की भी परीक्षा के लिए।

आखिरकार हर साल होली, दशहरा, दीवाली की तरह ही अटल यूपीएससी के पीटी एग्जाम का फॉर्म अपने नियत समय पर आ ही गया। गुरु के लिए भी यह परीक्षा जीवन-मरण के समान थी। इतने सालों तक दिल्ली में रहकर और लगातार असफलता के बावजूद भी वह आत्मविश्वास से भरा था और शायद वह अब तक इसलिए नहीं बिखरा था क्योंकि उसे हमेशा परीक्षा के प्रारंभिक चरण में आसानी से सफलता मिल जाती थी। वह दो बार साक्षात्कार दे चुका था। उसे बस एक हल्के जोर की जरूरत थी और उसका भी बेड़ा पार हो जाता।

इधर संतोष ने फॉर्म डालकर दुनिया से जैसे संपर्क ही तोड़ लिया था। बहुत दिनों बाद मनोहर से बात हुई थी संतोष की।

"क्या संतोष भाई हैलो, का हो एकदम छोड़ दिए का निकलना?" मनोहर ने फोन उठते ही पूछा।

"नमस्कार मनोहर जी, नहीं महराज हम क्या निकलना छोड़ेंगे, यहाँ से निकलने का ही तो संघर्ष है सबका यहाँ। देखिए कब तक निकलते हैं!" संतोष ने दार्शनिक अंदाज में कहा।

"अच्छा निकल ही जाइएगा भाई, कौन यहाँ रहा है हमेशा के लिए! रिजल्ट आए न आए, जाना तो होगा ही। हमको भी बड़ा प्रेशर है घर से वापस आने का। छः साल हो भी गया यहाँ मेरा रहते हुए हो। साला आपको बताएँ बस एक बार बिहार का पीटी निकल गया था, उसी को दिखा आज तक टिके हैं यहाँ।" मनोहर ने भी अपना दर्द बयाँ करते हुए कहा।

"हाँ मनोहर भाई, क्या किया जाय हमारे आपके जैसे ही लोगों से तो यह क्षेत्र भरा पड़ा है, लेकिन इन्हीं के ही बीच से तो सफल लोग भी निकलते हैं न। सो, हिम्मत नहीं हारना चाहिए।" संतोष ने कहा।

"अच्छा मैंने आपको इसलिए फोन किया था कि विदिशा मिली थी, वह दिल्ली छोड़कर जा रही है। घर वालों ने वापस बुला लिया है। कह रही थी आपसे मिलने को। आज शाम बत्रा आ सकते हैं क्या आप?"

"ये भी जा रही है? ओके चलिए हम आते हैं शाम को।" संतोष ने कहकर फोन काटा।

शाम को विदिशा, मनोहर और संतोष बत्रा पर मिले।

"अरे विदिशा जी, ये अचानक जाने का कैसे प्लान कर लिए?" संतोष ने मिलते ही पूछा।

"हाँ सैंटी जी, हम तो चले। अजी वो पापा पिछले दो साल से ही कह रहे थे कि बहुत हुआ तुम्हारा तैयारी, अब वापस आओ। समय पर नौकरी तो लगने से रही, कम-से-कम समय पर शादी तो कर लो।" विदिशा ने बताया।

"तो शादी तय हो गई क्या आपकी?" संतोष की आवाज में एक रहस्य था जैसे।

“लगभग वही समझिए सैंटी जी, एक लड़का देखा है पापा ने, इंजीनियर है। बताइए, न हम आईएएस बने और न ही पति मिल पाया सिविल वाला। पापा ने खोजा भी तो इंजीनियर। हमारे तो भाग्य में कहीं से भी सिविल नहीं था सैंटी जी।” विदिशा ने बड़ी कसक के साथ कहा।

विदिशा की बात ने संतोष को रायसाहब की बातें याद दिला दी थीं। इसी तरह एक दिन दिल्ली छोड़ते वक्त उन्होंने भी कहा था कि आईएएस आदमी भाग्य से बनता है, टैलेंट ही सब कुछ नहीं है। आज विदिशा ने भी कह दिया कि उसके भी भाग्य ने दगा दे दिया। उसे तो पति भी सिविल सेवक नहीं मिला। संतोष सोचने लगा, ‘दिल्ली छोड़ जाने वाले हर विद्यार्थी के निशाने पर भाग्य ही है। कोई खुद पर कोई इल्जाम नहीं लगाता। सारी असफलताओं का हिसाब भाग्य को ही देना पड़ता है। भाग्य में जब आईएएस नहीं बनना लिखा है तो भाग्य यहाँ मुखर्जी नगर में छः-सात साल बर्बाद करने लाता ही क्यों है? भाग्य हमें जो बनाना चाहता है वहीं क्यों नहीं लगवा दिए इन कीमती वर्षों को? भाग्य बहुत आँख-मिचौली खेलता है, इसके भरोसे रहना ठीक नहीं, न ही इसे कोसने का भी कोई फायदा है।’ संतोष कब का ही अपने भाग्य की रेखाओं पर स्याही गिरा उसे मिटा चुका था, क्योंकि उसके भाग्य में भी आईएएस बनना नहीं लिखा था। फिर भला ऐसी रेखाओं के साथ कैसे कोई आईएएस की तैयारी करता।

“अरे तो आपको इंजीनियर पसंद नहीं तो मना कर दीजिए ना!” संतोष ने कहा।

“लो जी, अजी किसके भरोसे मना कर दूँ सैंटी जी, आप भी सलेक्ट हो जाते तो हम मना कर देते।” बोलकर विदिशा जोर से हँस पड़ी। उसके साथ मनोहर और संतोष भी हँसने लगे।

“बाप रे हमारे भरोसे तो मुश्किल ही है, हमारे लिए तो ज्योतिषी ने साफ कह दिया है कि आईएएस हमारे भी भाग्य में नहीं है।” संतोष ने हँसते-हँसते कहा।

“वैसे चलिए आप सबके ही साथ यहाँ हँसते, रहते, पढ़ते मैंने खुलकर अपनी जिंदगी जी ली। जी भर जी ली मैं, अब शादी होगी और पति का साथ तो मरने तक निभाना है। उनके साथ तो मरना होता है ना! जीने वाला दौर जी लिया मैंने।” विदिशा ने कहा।

“कितने बजे की ट्रेन है?” मनोहर ने पूछा।

“6.30 बजे, चलो अब निकलना होगा मुझे।” विदिशा ने कहा।

“चलिए हम स्टेशन तक छोड़ आते हैं, जहाँ तक साथ चल सकें, वहाँ तक तो चलें।” संतोष ने अजीब-सी मुस्कुराहट के साथ कहा।

“हाँ चलो विदिशा हम भी चलें।” मनोहर ने उसका बैग उठाकर कहा। विदिशा ने हल्की मुस्कुराहट के साथ संतोष की तरफ देखा और तीनों रेलवे स्टेशन की तरफ निकल पड़े।

विदिशा को विदा करने के बाद वापसी में संतोष ने अचानक पायल की बात उठा दी।

“मनोहर भाई, वो आपकी खास मित्र पायल कहाँ है आजकल?” संतोष ने पूछा।

“भाई जी रहने दीजिए किसका किस्सा उठा दिए! अरे नचवा के रख दी हमको। हम साला फुल्ली बकलोल का पूँछ बने रहे। उसने तीन बॉय फ्रेंड को लात मारने के बाद

हमरा नंबर लगाया था। अभी सुनते हैं किसी के साथ लिव-इन में रह रही है करोलबाग के साइड में कहीं। छोड़िए भी अब उसका कहानी बंद करिए।" मनोहर ने दर्द और झुंझलाहट के साथ कहा। मनोहर का चेहरा देख संतोष ने बातचीत का मसला बदल दिया। दोनों इधर-उधर की बातें करते वापस बत्रा पहुँचे और अपने-अपने कमरे पर चले गए।

एक बार फिर से सभी पीटी की तैयारी में जुट गए थे। वो मई का सोलहवाँ दिन था, पीटी की परीक्षा देकर गुरु और संतोष साथ ही निकले थे।

"और संतोष भाई कैसा रहा पेपर?" गुरु ने पूछा।

"वही पिछली बार की तरह ठीक ही गया है, अब परिणाम भी पिछले हर बार की तरह न आए, यही दुआ कर रहा हूँ।" कहकर संतोष हँसने लगा, साथ-साथ गुरु भी।

पीटी की परीक्षा के बाद परिणाम आने तक के बीच के समय का मुखर्जी नगर में अलग-अलग तरह के छात्र वर्ग, अलग-अलग तरह से उपयोग करते थे। एक वर्ग ऐसा था जिनके लिए यह मुक्ति का समय था। इस वर्ग के छात्र परीक्षा के बाद देशाटन वगैरह के लिए निकल जाते थे। देशाटन का भी एक अलग ही पैटर्न था। कई छात्र लगभग हर हिंदीभाषी राज्य का फॉर्म डालते थे और परीक्षा के बहाने हिंदी पट्टी का देशाटन करते थे। ऐसे केंद्रों में जयपुर, नैनीताल, भोपाल, शिमला, सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले स्थान थे, जहाँ जाकर लड़का घूमने के दौरान दो-चार घंटे की एक परीक्षा देना भी पसंद करता था। एक वर्ग ऐसा था जो अपने स्कोर के बारे में आशान्वित रहता था, वह भले पढ़े नहीं पर तत्काल जगह छोड़ता भी नहीं था। दिन से लेकर शाम तक और देर रात तक संभावित कटऑफ पर चर्चा कर कमरे पर लौट आता और अधमने ढंग से मेंस के लिए एकाध किताबें मेज से बैड और बैड से मेज पर रखता उठाता। एक वर्ग अपने पीटी को लेकर आश्वस्त वाला था जो पीटी के अगले दिन से ही मेंस खातिर गंभीरता से तैयारी को अंजाम देने में लग जाता था। इस वर्गीकरण के आधार पर मनोहर देशाटन, संतोष फिफ्टी-फिफ्टी वाले और गुरु आश्वस्त वर्ग से था।

## 26.

दो महीने गुजर गए थे। उन दिनों गुरु अपने किसी मित्र के यहाँ पटना में था। खाना खाकर उसने अभी बोतल खोली ही थी कि उसके मोबाइल की घंटी बजी। गुरु ने फोन उठाया। बस आधे मिनट की बात के बाद फोन रख दिया। गुरु ने इस आधे मिनट में भी अपनी ओर से बोला कुछ भी नहीं था, केवल सुना। उसके बाद लगातार पेग बनाकर पीता गया। तभी मनोहर का भी कॉल आया।

"हैलो गुरु भाई, भाई शाम को जब से रिजल्ट आया है तब से फोन लगा रहे हैं, संतोष का फोन ऑफ जा रहा है। जरा देखिए न कहाँ है, रूम पर है क्या?" मनोहर ने चिंतित होते हुए कहा।

"आँय, अरे हम तो अभी पटना में हैं। अरे ऑन हो जाएगा, कोई नहीं मरता फेल हो जाने पर यार, टेंशन मत लो जा के देख लो रूम पर। वहीं सुत्तल होगा। अब हमारे जैसा पीकर थोड़े मन हल्का कर रहा होगा। जाओ देख आओ, हमारा अंतिम चांस माटी में मिल गया। सारा दर्शन खत्म हमारा, सारी गुरुआई भीतर चली गई हमारी, फिर भी जिंदा हैं न?" गुरु ने भरी और लडख़ड़ाई आवाज में कहा। मनोहर को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर गुरु को क्या हो गया है अचानक।

"क्या मजाक कर रहे हैं गुरु भाई?" मनोहर ने कह डाला।

"ले बेटा, अबे मजाक तो किस्मत हमारे साथ की है भाई। हाँ मैं पीटी फेल हो गया हूँ।" गुरु ने भरभरायी आवाज में कहा और फोन काट दिया। मनोहर को यकायक तो यकीन ही नहीं हुआ, अचानक उसे संतोष के ऑफ जा रहे फोन का ख्याल आया, वह काँप गया। पैर-हाथ हिलने लगे। वहीं तुरंत एक रिक्शा लिया और संतोष के कमरे पर गया। कमरे पर ताला झूल रहा था। झूलता ताला देखते ही मनोहर किसी अनहोनी की आशंका से भर उठा। मन में एक साथ कई ऊटपटांग विचार आने लगे। मनोहर को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर क्या करे? कहाँ जाए? कैसे खोज-खबर ले संतोष की? उसे यह समझते देर नहीं लगी कि संतोष पीटी फेल होने के कारण अचानक गायब हो गया है। अब वह किस अवस्था में है, यह पता करना बहुत जरूरी था।

'साला तीन साल रहे साथ-साथ पर घर का भी नंबर नहीं लिए हम उसका।' मनोहर ने मन-ही-मन सोचा। मनोहर किसी तरह संतोष के घर भी संपर्क करना चाह रहा था कि वहाँ से कुछ जानकारी मिले। पर यह भी संभव नहीं हो पा रहा था। हारकर उसी बेचैन अवस्था में मनोहर अपने कमरे गया। सारी रात मोबाइल ताकता रहा कि कोई कॉल या मैसेज आ जाए संतोष का। पर एक-एक कर पाँच दिन गुजर गए, कोई अता-पता नहीं लग पाया संतोष का।

कुछ दिन बाद गुरु दिल्ली वापस लौटा। अपने आने के दूसरे ही दिन उसने सीढ़ियों से एक नए लड़के को उतरते देखा। "क्या भाई, कहाँ आए थे?" गुरु ने उस लड़के से पूछा।

“मैं अभी आया हूँ, चार दिन पहले। ऊपर वाले फ्लोर पर रहता हूँ।” लड़के के बोलते ही गुरु चौंक गया।

“क्या ऊपर वाले फ्लोर पर? अरे तो उसमें तो संतोष नाम का लड़का रहता है, मेरा दोस्त।” गुरु ने कहा।

“नहीं भाईसाहब, मुझे नहीं पता कौन रहता था कि नहीं रहता था। मुझे कमरा मिला, मैंने ले लिया। ओके भाई चलता हूँ।” लड़के ने कहा और चल दिया। गुरु ने अगले ही क्षण फोन निकालकर मनोहर को लगाया। “अरे मनोहर, अबे भाई ई संतोष तो यहाँ कमरा छोड़कर जा चुका है।” गुरु ने तेजी से कहा।

“क्या! कमरा छोड़ दिया, हे भगवान चलिए मतलब जिंदा तो है न। ओह! घर चला गया हो शायद। बताइए कहाँ गया, जहाँ भी गया एक बार मिल तो लेता?” मनोहर ने कहा।

संतोष कहाँ गया, कैसा होगा यह वास्तव में किसी को भी पता नहीं चल पा रहा था। संतोष अभी लापता था, यह पहेली सुलझ ही नहीं पा रही थी।

## 27.

मनोहर और गुरु को अब इस बात का सुकून जरूर था कि संतोष चाहे जहाँ भी हो पर सुरक्षित है। गुरु ने मकान मालिक से फोन पर बात की तो उसने भी बताया कि संतोष ने वहाँ आकर मकान छोड़ने की जानकारी दी थी और अपने बचे पैसे का हिसाब कर गया।

इधर गुरु अपने सबसे खराब दौर से गुजर रहा था। वह एक चुका हुआ आदमी साबित हो चुका था। उसके अब आईएएस बनने के सारे अवसर समाप्त हो चुके थे। उसके अपने कई खास दोस्तों ने उससे किनारा कर लिया था क्योंकि उन्हें लगता था गुरु हमेशा नकारात्मक बातें सोचता है जिस कारण वह आईएएस नहीं बन सका और अब उसका असर उन पर भी न पड़ जाए। अब गुरु की आलोचनात्मकता में उन्हें गुरु का फ्रस्ट्रेशन नजर आने लगा था।

मुखर्जी नगर में सफलता और असफलता को लेकर दो जुमले खूब चलते थे। जो सफल है उसे लेकर कहा जाता था, 'इसमें कुछ तो है' और जो असफल होता उसे लेकर कहा जाता, 'इसमें कुछ तो कमी है।' यहाँ आए हर व्यक्ति का मूल्यांकन बस इसी आधार पर होता था कि वह आईएएस में सफल है या फेल। यहाँ इससे इतर व्यक्तित्व की कोई खासियत मायने नहीं रखती थी। यहाँ आईएएस न बनने को ही जीवन का समाप्त होना माना जाता था। आप में अगर कोई अलग हुनर हो तो लोग हँसकर बोलते, "यहाँ क्या कर रहे हो!" गुरु अच्छा वक्ता था और अपने पिछले जीवन में कई संगठनों में काम भी कर चुका था, लेकिन मुखर्जी नगर में अब उसके लिए सारे द्वार बंद थे। वह अब यहाँ रहकर राज्यों की सेवा परीक्षा के लिए टिककर प्रयास करता रहे या यह जगह छोड़ अपने लिए कहीं और कुछ हासिल करने निकले, उसे यह निर्णय लेना था। इसी ऊहापोह में समय गुजरा जा रहा था। जिस परीक्षा में गुरु पीटी नहीं निकाल पाया था अब उसी परीक्षा के अंतिम परिणाम आने का भी वक्त आ चुका था। गुरु के भी जानने वाले कुछ लोगों ने इंटरव्यू दिए थे।

अरसे बाद आज रायसाहब ने मनोहर को फोन किया था।

"हैलो, क्या मनोहर बाबू, कैसे हैं? पहचाने हम रायसाहब बोल रहे हैं!" एक पहचानी आवाज थी।

"अरे अरे रायसाहब! कहाँ भइया, साल भर पर फोन कर रहे हैं आप, ई अननोन नंबर था न इसलिए पहचान नहीं पाए। फेर अवजवा पकड़े तो हम कहे अरे ई तऽ रायसाहब हैं!" मनोहर ने उत्साह के साथ जोर से कहा।

"आ हो मनोहर जी, रुस्तम बताए कि ई बार गुरु का पीटी भी नहीं हुआ?" रायसाहब ने पूछा।

"हाँ सही बताया, का बोले, भाग्य ही खराब था बेचारे का।" मनोहर ने कहा।

"महराज भाग्य छोड़िए, उसका बोली-चाली भी खराब था। मतलब देखते नहीं थे

बात अइसन करता था जैसे कि जिला नहीं देश चलाएगा।" रायसाहब ने बरसों की भड़ास निकालकर कहा।

"अब छोड़िए जो हुआ सो हुआ, अपना सुनाइए।" मनोहर ने बात काटते हुए कहा। पर रायसाहब कहाँ मानने वाले थे! उनके जीवन में अभी नया कुछ था ही नहीं जो सुनाते, इसलिए वे तो लगातार देश-दुनिया की जानकारी अपडेट करने में लगे थे।

"अच्छा हो, संतोष का क्या हुआ था मामला? कहीं सुसाइड-उसाइड कर लिया का! भरत का फोन आया था, बता रहा था। बताइए! भगवान हमको माफ नहीं करेंगे। हमहीं उसको दिल्ली का रस्ता दिखाए थे। रूम दिलवाए, सब सेट करवाए, हे भगवान! का किया ई लौंडा?" रायसाहब ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा।

"पागल हो गए हैं क्या आप, का चूतियापा बतिया रहे हैं! अरे ऊ कहीं चला गया है। अब यहाँ नहीं रहता है। जहाँ भी होगा, अच्छा ही होगा। अच्छा हम फोन रखते हैं अभी, काम है कुछ।" मनोहर ने जानबूझकर फोन काट दिया।

इधर कमरे पर गुरु आज अपनी कुंडली निकालकर देख रहा था। आईएएस का योग आज भी स्पष्ट दिख रहा था। गुरु इस गोलमाल पर मुस्कुरा रहा था। उसने कुंडली समेटकर रख दी और बत्रा निकल पड़ा। आज पाँच दिन बाद वह फिर घूमने निकला था बत्रा के लिए। इस बीच आईएएस का अंतिम परिणाम भी आ चुका था। बत्रा सिनेमा पहुँचते ही उसकी नजर इस तीनमंजिली इमारत के सबसे ऊपरी छत पर गई तो आँख चौंधिया गई। विश्वास कर पाना असंभव था उस पर, जो गुरु ने अभी-अभी देखा और उसे लगातार देखे जा रहा था। लगभग पाँच मिनट तक उस दृश्य को देखने के बाद उसने तुरंत काँपते हाथों से मनोहर को फोन लगाया।

"अरे मनोहर लाल, मेरे भाई जल्दी आओ। संतोष मिल गया है।" गुरु ने लगभग चीखते हुए कहा।

"अरे का बोल रहे हैं, कहाँ मिला संतोष?" मनोहर ने भी जोर से कहा।

"आओ न यार बहुत ऊँचाई पर मिला है। बत्रा सिनेमा के सबसे ऊपर वाले छत पर है।" गुरु ने बताया।

"उतना ऊपर का कर रहा है, उतारिए उसको हम दौड़कर आते हैं तुरंत।" मनोहर ने कहा।

"अब उतना ऊपर जा के कोई नहीं उतरता, वह जहाँ दिखा है वहाँ से उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं उतार सकती, तुम आओ जल्दी।" गुरु ने कहकर फोन काटा।

दस मिनट के अंदर ही मनोहर दौड़ता हुआ गुरु के पास आया और फिर उसने भी जो देखा वह उसके लिए अकल्पनीय था।

संतोष की फोटो लगी हुई थी, वह आईपीएस बन चुका था। श्यामल सर की कोचिंग के हर पोस्टर में पूरे बत्रा पर उसकी तस्वीर लगी हुई थी।

"अरे बाप रे! ये क्या है गुरु भाई, संतोष भाई आईपीएस बन गए!" मनोहर खुशी से चिल्लाया।

"हाँ मनोहर ये रेस का 'डार्क हॉर्स' साबित हुआ। डार्क हॉर्स निकला हमारा संतोष।"

गुरु ने कहकर अपनी नम आँखें पोंछी। गर्दन अभी भी उसी पोस्टर की तरफ उठी हुई थी। मनोहर की भी आँखें वहीं टिकी थीं।

"ई डार्क हॉर्स मतलब नहीं समझे हम गुरु भाई।" मनोहर ने गुरु की तरफ देखते हुए पूछा।

"डार्क हॉर्स मतलब, रेस में दौड़ता ऐसा घोड़ा जिस पर किसी ने भी दाँव नहीं लगाया हो, जिससे किसी ने जीतने की उम्मीद न की हो और वही घोड़ा सबको पीछे छोड़ आगे निकल जाए, तो वही 'डार्क हॉर्स' है मेरे दोस्त। संतोष एक अप्रत्याशित विजेता है। मैंने तुम्हारे आने से पहले श्यामल सर को और हर्षवर्धन सर दोनों को कॉल लगाया था। संतोष लगातार इन दोनों के संपर्क में था। पीटी होने के बाद ही उसने अपना कमरा संत नगर की ओर ले लिया था, उसने सर से अनुरोध भी किया था कि उसके बारे में किसी को कुछ न बताएँ। जो भी हो किस्मत पलट दी उसने। भाग्य को ठेंगा दिखाकर अपनी मेहनत से अपनी तकदीर खुद गढ़ ली इसने भाई।" गुरु ने कहा।

"हाँ बॉस सही कहे, एकदम अँधेरे में रहा साल भर और जिंदगी भर के लिए उजाला कर गया मेरा दोस्त। चलिए अब नंबर ले लें सर से। इससे मिलकर इसे बधाई दिया जाय। अपने इस डार्क हॉर्स को।" मनोहर ने कहा।

कोचिंग पहुँचते देखा संतोष वहीं बैठा था। एक-दूसरे को देखते तीनों उछल गए। संतोष ने दोनों से माफी माँगी और तीनों गले मिल खूब रोए। श्यामल सर की आँखें भी उन तीनों का साथ दे रही थीं।

# 6 साल बाद

मनोहर अपने घर वापस आ गया था। उसकी अब शादी हो चुकी थी। मोतिहारी में सबसे बड़े सीमेंट व्यवसायी के रूप में वह अपनी पहचान बनाने की राह में था। एक दिन अपनी पत्नी के साथ टीवी देखते हुए वह चैनल बदल रहा था कि एक न्यूज चैनल पर उसकी आँख टिक गई। उस पर एक नेता एक राष्ट्रीय पार्टी की ओर से प्रवक्ता के रूप में बहस कर रहा था। मनोहर की आँखें ठीक उसी तरह खुली रह गईं, जैसे कभी संतोष की फोटो देखकर बत्रा पर खुली रह गई थीं।

मनोहर ने अपनी पत्नी से कहा, "देख लो, एक और डार्क हॉर्स।"

पत्नी ने एक नजर मनोहर की तरफ देखा पर उसे कुछ समझ नहीं आया और वह वापस टीवी देखने लगी।

सीमेंट बेचने वाले मनोहर की आँख में पानी आते ही जैसे यादें ठोस हो गईं। उसे गुरु की कही वो बात याद आ गई अचानक कि जिंदगी आदमी को दौड़ने के लिए कई रास्ते देती है, जरूरी नहीं है कि सब एक ही रास्ते दौड़ें। जरूरत है कि कोई एक रास्ता चुन लो और उस ट्रैक पर दौड़ पड़ो। रुको नहीं...दौड़ते रहो। क्या पता तुम किस दौड़ के डार्क हॉर्स साबित हो जाओ।

हम सबके अंदर एक डार्क हॉर्स बैठा है। जरूरत है उसे दौड़ाए रखने की जिजीविषा की।

तो चलिए देखते हैं अगला डार्क हॉर्स कौन? कहीं वह आप ही तो नहीं!

जय हो!